तलाक का मुकदमा

तथा 16 अन्य हास्य एकांकी

स्वदेश कुमार



आत्माराम एण्ड संस

दिल्ली ◻ लखनऊ

मूल्य : 60.00

संस्करण : 1991

प्रकाशक : आत्माराम एण्ड संस
दिल्ली, लखनऊ

मुद्रक : रूपाभ प्रिंटर्स, विश्वास नगर, दिल्ली-32

LAK KA MUKADAMA (Short Humour Plays)
Swadesh Kumar Rs. 60.00
Atma Ram & Sons, Delhi-6

दो शब्द

विश्वस्त सूत्रों, अर्थात् आत्माराम एण्ड संस, प्रकाशक, से पता चला है कि 'मेरे इक्कीस हास्य एकांकी' का पहला संस्करण बड़ी जल्दी पूरा बिक गया। उसके 'दो शब्द' में मैंने लिखा था कि अगर आपको मेरे एकांकी पढ़कर हँसी न आए, तो मेरी इस मूर्खता पर ही हँस लीजिएगा कि मैंने उन्हें प्रकाशित करवाया। इसलिए, तसल्ली हुई कि आपको मेरी मूर्खता ने नहीं, एकांकियों ने हँसाया।

'तलाक का मुकद्दमा' के हास्य एकांकी भी मुझ पर, आप पर, आपके पड़ोसियों पर, पड़ोसियों के पड़ोसियों पर, गोया उन सभी पर जो इस समाज में रहते हैं, एक चुटकी है—कभी मीठी, कभी तीखी। कभी हम गाल सहलाएँगे, कभी तिलमिलाएँगे, फिर बेसाख्ता खिलखिलाएँगे।

ये एकांकी मूलतः प्रसारण के लिए लिखे गए थे, पर इनमें से लगभग सभी रंगमंच पर भी खेले जा सकते हैं। रंग-सज्जा को सांकेतिक रखकर निर्देशक अपनी सूझ-बूझ का प्रयोग करके दृश्य-परिवर्तन को सुविधाजनक बना सकते हैं।

—स्वदेश कुमार

दो शब्द

विश्वस्त सूत्रों, अर्थात् आत्माराम एण्ड संस, प्रकाशक, से पता चला है कि "मेरे इक्कीस हास्य एकांकी" का पहला संस्करण बड़ी जल्दी पूरा बिक गया। उसके "दो शब्द" में मैंने लिखा था कि अगर आपको मेरे एकांकी पढ़कर हँसी न आए, तो मेरी इस मूर्खता पर ही हँस लीजिएगा कि मैंने उन्हें प्रकाशित करवाया। इसलिए, तसल्ली हुई कि आपको मेरी मूर्खता ने नहीं, एकांकियों ने हँसाया।

"तलाक का मुकदमा" के हास्य एकांकी भी मुझ पर, आप पर, आपके पड़ोसियों पर, पड़ोसियों के पड़ोसियों पर, गोया उन सभी पर जो इस समाज में रहते हैं, एक चुटकी है—कभी मीठी, कभी तीखी। कभी हम गाल सहलाएँगे, कभी तिलमिलाएँगे, फिर बेसाख्ता खिलखिलाएँगे।

ये एकांकी मूलतः प्रसारण के लिए लिखे गए थे, पर इनमें से लगभग सभी रंगमंच पर भी खेले जा सकते हैं। रंग-सज्जा को सांकेतिक रखकर निर्देशक अपनी सूझ-बूझ का प्रयोग करके दृश्य-परिवर्तन को सुविधाजनक बना सकते हैं।

—स्वदेश कुमार

आर-११,
ग्रीन पार्क एक्सटेंशन,
नई दिल्ली-१६

सूची

कलमदास का प्रमोशन

पात्र परिचय :

कलमदास : सरकारी क्लर्क, उमर ३५ वर्ष, पिटा हुआ चेहरा, दुबले शरीर पर ढीले कपड़े।

दयाल
हरजीत
नंदा
} कलमदास के साथी क्लर्क, उमर ३० से ३५ वर्ष, स्मार्ट दिखने वाले और स्मार्ट ही कपड़े।

सरला : कलमदास की पत्नी, उमर ३० वर्ष, थोड़ी मोटी, मेकअप और कपड़े थोड़ा ओवर।

बैरा : सरकारी कैंनटीन का मुंडू, उमर २० वर्ष।

(दफ्तर का कमरा)

दयाल : (आते हुए प्रसन्न) हरजीत, बस समझ लो हो गया काम।

हरजीत : (प्रसन्न) यानी हो गया कलमदास का काम तमाम?

दयाल : राम! राम! बेचारे का क्यों करते हो काम तमाम? यों कहो हो गया बदले का इंतजाम। साहब से चुगली खाने का अंजाम।

हरजीत : लेकिन कहीं वह समझ गया तो?

दयाल : अरे, आज तक वह कोई बात समझा भी है?

हरजीत : कुछ भी कहो, पर वह अपने को न जाने क्या समझता है।

दयाल : उसके समझने से क्या होता है। ऐसा ही अक्लमद होता तो इंस्टालमेंट्स में बी० ए० पास नहीं करता। इतने सालों से लोअर डिवीजन क्लर्क ही न रहता। कलम तक तो पकड़नी आती नहीं।

हरजीत : पर कहता अपने को कलम का धनी है।

दयाल : अजी, यों कहो कलम घिसता है। सुबह रिलीफ निब से ड्राफ्ट लिखना शुरू करेगा, तो शाम को वह जैड निब बन जाएगा।

हरजीत : तभी तो नाम करमदास से कलमदास पड़ गया

दयाल : पर कोई ले तो ले उसके सामने ... ।

हरजीत : अरे, परसों की बात बताऊं। तुम छुट्टी प०

मुझे अपना लिखा हुआ एक ड्राफ्ट दिखाने लाया और बोला, इसे कहते हैं ड्राफ्ट। मेरा दावा है मुझ जैसा ड्राफ्ट्समैन सारे सैक्शन में नही मिल सकता।

दयाल . ड्राफ्ट्समैन ?

हरजीत : उसका मतलब ड्राफ्ट लिखने वाले से था। और वाकई वैसा ड्राफ्ट सिवाए कलमदास के और कोई नही लिख सकता।

दयाल : ऐसा क्या कमाल था उस ड्राफ्ट में ?

हरजीत : अजी, कोई एक कमाल था। हर दूसरे शब्द का इस्तेमाल गलत और हर तीसरे शब्द के हिज्जे गलत थे।

दयाल : पर रौब की तो ऐसी लेता है कि कुछ न पूछो।

हरजीत · वह रौब की लेता कहां नही ? दफ्तर में देर से आएगा, सारे दिन इधर-उधर मटरगश्ती करेगा, अफसरों की चिलमें भरेगा और पांच बजे के बाद फाइलें खोलकर बैठेगा, ताकि साहब के ऊपर रौब पड़े। शाम को देर से घर पहुंचेगा, तो बीवी पर रौब झाड़ेगा कि 'मैं तो दिन भर दफ्तर में सिर खपाता हूं और तुम से यह भी नही होता कि···कि···'

दयाल : आगे बोलो न।

हरजीत : डायलाग अधूरा ही रह जाता है।

दयाल : क्यों ?

हरजीत : बीवी घूरकर देखने लगती है।

दयाल : (धीरे से, एकदम) शी ! अपने डायलाग बन्द करो। कमलदास आ रहा है।

कलमदास : (प्रवेश करते हुए, झुंझलाहट से) क्या मुसीबत है !

हरजीत : अजी कमलदासजी, क्या मुसीबत आगई ?

कलमदास : (नाराज) देखो, हरजीत, मैं तुम्हारी खोपड़ी तोड़ दूंगा। तुमसे लाख बार कहा है कि ठीक से मेरा नाम लिया करो।

हरजीत : (निढ़ाते हुए) यार, तुम तो बेकार ही नाराज होते हो। इतनी इज्जत के साथ तो तुम्हारा नाम लेता हूं। कलमदास में पहले कमल और बाद में जी लगाता हूं।

दयाल : हरजीत, तुम समझे नही। कलमदास चाहते हैं कि उनके नाम के बाद तुम एक जी और जोड़ दो।

हरजीत : कलमदास जीजी कहा करूं ?

कलमदास : (नाराज) क्या मुसीबत है ! मैं कहता हूं मेरा नाम है करमदास, बी० ए०।

हरजीत : बी० ए० इन इंस्टालमेंट्स।

[टेलीफोन की घण्टी बजती है।]

हरजीत : (टेलीफोन में) हलो !···कौन ?···हां, अभी आए हैं··· (कलमदास से) तुम्हारा फोन है।

कलमदास : (टेलीफोन पर) मैं करमदास, बी० ए०, बोल रहा हूं···कौन ? एस्टेब्लिशमेंट ब्रांच से···ओह, मोहनलाल बोल रहा है···हां, भई, क्या बात है ?·· क्या कहा ? फाइल ? मेरे पास कोई फाइल नही है, मैं तो इधर फाइल आई, उधर खिसकाई··· क्या ? हेडक्वार्टर्स से मेरी फाइल आ गई है···साहब के पास आर्डर पर दस्तखतों के लिए गई है···कल तक आर्डर इशू हो जायेंगे···मिठाई ? जब मरजी हो···अच्छा, कल ही सही··· थैंक यू। (टेलीफोन बन्द कर देता है)।

हरजीत : अरे भई, यह मिठाई का क्या जिक्र हो रहा था ?

कलमदास : मेरा प्रोमोशन हो गया है।

हरजीत : (आश्चर्य से) एँ !

दयाल : अरे भई, कही गलती से तो तुम्हे टेलीफोन नही कर दिया ?

कलमदास : क्या मुसीबत है ! मैं कहता हू, क्या मेरा प्रोमोशन नही हो सकता ? आखिर तुम लोग मुझे समझते क्या हो ?

हरजीत : कुछ नही।

दयाल : (बनते हुए) हरजीत, यह तुम्हारी ज्यादती है। कलमदास जब कह रहे···

कलमदास : (बीच मे क्रोध मे) : क्या मुसीबत है ! मैं कहता हूं, मेरा नाम करमदास, बी० ए० है।

हरजीत : बी० ए० इन इंस्टालमेंट्स।

कलमदास : मेरा प्रोमोशन तो कब का हो गया होता। पता नहीं फाइल कहां दब गई।

दयाल : क्यों नहीं ! हैडक्वार्टर्स में देर भले ही हो, अंधेर नहीं है।

कलमदास : भई, मैं तो एक बात जानता हूं···

हरजीत : *(बीच में) शुक्र है भगवान का कि एक बात तो जानते हो। मेरा ख्याल था कि तुम कुछ नहीं जानते।*

कलमदास : क्या मुसीबत है ! मैं कहता हूं, मुझ जैसा ड्राफ्ट्समैन दूसरा नहीं होगा इस सैक्शन में। साहब तक अपने नोट्स मुझ से ड्राफ्ट करवाते हैं।

हरजीत : अच्छा ! तब तो तुम्हें प्रोमोट करके एकदम सैक्शन आफिसर बना देना चाहिए।

कलमदास : वह दिन भी दूर नहीं है। आखिर को बी० ए० हूं···

हरजीत : (बीच में) बी० ए० इन इंस्टालमेंट्स।

कलमदास : क्या मुसीबत है ! मैं कहता हूं, मुझ जैसा काबिल आदमी कब तक एल० डी० सी० बना रह सकता है !

दयाल : ज्यादा से ज्यादा कल तक। क्यों, हरजीत ?

हरजीत : कल नहीं तो परसों तक। परसों नहीं तो एक हफ्ते तक। एक हफ्ते नहीं, तो एक महीने तक, एक महीने नहीं, तो एक साल तक। एक साल नहीं, तो ज्यादा से ज्यादा रिटायर होने तक।

कलमदास : क्या मुसीबत है ! मैं कहता हूं, ये आजकल के छोकरे क्या खाकर सैक्शन आफिसरी करेंगे !

हरजीत : बिस्कुट।

दयाल : क्रीम वाले।

कलमदास : क्या मुसीबत है ! मैं कहता हूं, अब तक बोतल से दूध पीते हैं। सैक्शन आफिसरी क्या खाक करेंगे ! और फिर रौबदार परसनेलिटी का भी तो असर पड़ता है। कहने को तो सैक्शन आफिसर हैं, पर कुरसी पर बैठे हुए ऐसे लगते हैं, जैसे कोई चूहा बैठा हुआ फाइल कुतर रहा हो।

दयाल : वाह, तुम तो कुछ साहित्यिक किस्म के आदमी मालूम

होते हो।

कलमदास : अजी, सैकड़ों उपन्यासों के ड्राफ्ट लिख मारे है।

दयाल : तभी तो लोग तुम्हें कलमदास कहते है।

कलमदास : क्या मुसीबत है! मै कहता हूं, मेरा नाम करमदास, बी० ए० है।

हरजीत : बी० ए० इन इंस्टालमेंट्स।

कलमदास : अरे भई, परसनेलिटी की तो बात यह है कि एक दिन सैक्शन आफीसर ने फाइल लेकर अंडर सेक्रेटरी के पास मुझे भेज दिया। मेरा उसके कमरे में पैर रखना था कि वह एकदम कुरसी छोड़कर खड़ा हो गया।

दयाल : (आश्चर्य से) अच्छा! समझा होगा भूत आ गया।

कलमदास : क्या मुसीबत है! मैं कहता हूं, अंडर सेक्रेटरी समझा कि सेक्रेटरी आ गया।

हरजीत : पर यार, हम पर तो आज तक तुम्हारी परसनेलिटी का रौब नहीं पड़ा।

कलमदास : तुम लोग तो बेशरम हो।

दयाल : कलमदास, तुम्हारे बीवी बच्चों पर भी तुम्हारी परसनेलिटी का रौब पड़ता है या नहीं?

कलमदास : क्या मुसीबत है! मैं कहता हूं, जहां मैंने घर मे क़दम रखा कि बीवी चुप! बच्चे चुप।

हरजीत : अजी, सारी बाबू कालोनी ही चुप।

कलमदास : क्या मुसीबत है! मैं कहता हूं···

दयाल : अजी, मैं कहता हूं, हमें रौब ही खिलाते रहोगे या प्रोमोशन होने की खुशी में मिठाई भी खिलाओगे?

कलमदास : मिठाई की क्या कमी है! जितनी मरजी हो खाओ। आज ही मेरे घर चलो।

हरजीत : भई, तुम्हें तो मालूम ही है कि मैं आज शाम की गाड़ी से अपनी ससुराल जा रहा हूं।

कलमदास : अच्छी याद दिलाई···

दयाल : क्यों, क्या तुम्हें भी हरजीत की ससुराल जाना है ?

कलमदास : मुझे अपनी बीवी को उसके लोकल मायके छोड़ने जाना है। मैंने कह दिया था कि चार बजे दफ्तर में ही आ जाना। यहीं से साथ चले चलेंगे। उसे वहा छोड़कर मैं ड्रामे के रिहर्सल में चला जाऊंगा।

दयाल : बस तो काम बन गया। चार तो बजने ही वाले हैं। भाभीजी आती ही होंगी। दफ्तर के कैंनटीन को मिठाई का ग्रार्डर दे दिया जाए।

हरजीत : मैं अभी टेलीफोन पर आर्डर दे देता हूं। (नम्बर मिलाकर) हलो, कैंनटीन ! देखो, कमरा नम्बर २०७ में सोलह रसगुल्ले, सोलह बरफी, सोलह चमचम, सोलह लौंगलता···

कलमदास : (बीच में) क्या मुसीबत है ! मैं कहता हूं, मेरा दिवाला पिटवाओगे ?

दयाल : बाबू करमदास ऐसे मौके क्या बार-बार आते है ? तुम्हारा प्रोमोशन तो ऐसा है जैसे बाझ के घर बेटा हुआ है।

हरजीत : (कलमदास से) उसी खुशी मे हमें पूरी श्रद्धा से खिलाओ। बिल अप्रैल मे अदा कर देना।

हरजीत : (टेलीफोन पर) हलो, कैंनटीन। आगे नोट करो···स्टाक मे जो भी और मिठाइयां हों हरएक के सोलह-सोलह पीस तो फौरन भिजवा दो। बाद मे डबल सेट गरमागरम चाय भिजवा देना। समझ गए ? (टेलीफोन बन्द कर देता है।)

कलमदास : (हँसते हुए) आज तुम लोग मेरा दिवाला पिटवाकर ही दम लोगे। खैर, कोई बात नही।

[कलमदास की पत्नी सरला का प्रवेश।]

सरला : (कलमदास से) चलिए।

कलमदास : अभी चलते हैं।

दयाल : भाभीजी, अभी बैठिए।

हरजीत : *मिठाई खाकर जाइएगा। करमदासजी, बी० ए०, का प्रोमोशन हो गया है।*

सरला : (प्रसन्न) सच ! (कलमदास से) क्यों जी, आपने मुझे सुबह क्यों नहीं बताया ?
कलमदास : मुझे खुद दफ्तर में आ कर मालूम हुआ।
सरला : तभी कहूं, सुबह से मेरी बाईं आंख क्यों फड़क रही है ?
कलमदास : मैं भी जब दफ्तर आ रहा था तो रास्ते में सीधे हाथ नीलकंठ बैठा दिखाई दिया था।
[बैरा का प्रवेश।]
बैरा : मिठाई लाया हूं, सा'ब।
हरजीत : इधर इस मेज पर लगा दो।
बैरा : बहुत अच्छा, सा'ब।
दयाल : करमदासजी, बी० ए०, आप सुस्त क्यों पड़ गए ?
कलमदास : नहीं तो। मैं गिन रहा था कि पूरा सामान आ गया।
हरजीत : बैरा, थोड़ी देर बाद चाय ले आना।
बैरा : बहुत अच्छा, सा'ब। (जाता है।)
सरला : आप लोग शुरू करिए न।
दयाल : पहले आप लीजिए, भाभीजी।
सरला : अच्छा, मैं ही लक्ष्मी-नारायण करती हूं। अब आप लोग भी लीजिए।
[सब लोग हंसते-बोलते मिठाई खाते हैं।]
नंदा : (प्रवेश कर के) अरे, वाह ! यहां तो दावत हो रही है। बात क्या है ? भाभीजी भी हैं।
हरजीत : नंदा, तू कहां चला गया था ! हम कब से तेरा इन्तजार कर रहे हैं।
नंदा : हैडक्वार्टर्स गया था।
कलमदास : अच्छा, अब जल्दी-जल्दी हाथ मारो, वरना मिठाई खतम हो जाएगी।
नंदा : (मिठाई खाते हुए) पर यह तो बताओ, मिठाई है किस खुशी में ?
हरजीत : करमदासजी, बी० ए० का प्रोमोशन हो गया है।

नंदा : सच ?

दयाल : हा ! एस्टेब्लिशमेंट सैक्शन से मोहनलाल ने खुद करमदासजी, बी० ए०, को फोन पर बताया है कि हैडक्वार्टर्स से इनके प्रोमोशन के आर्डर आ गए हैं।

नंदा : ताज्जुब है !

कलमदास : इस में ताज्जुब की क्या बात है ? प्रोमोशन तो बहुत पहले हो जाता। वह तो हैडक्वार्टर्स में फाइल कहीं दबी पड़ी रह गई।

नंदा : भई, यह तो मुझे मालूम नहीं। पर आर्डर होते तो डीलिंग क्लर्क मुझसे जिक्र तो करता। वह मेरा दोस्त है और जानता है कि मैं करमदास, बी०ए०, के ही सैक्शन में काम करता हूं। और फिर एस्टेब्लिशमेंट ब्राच में मोहनलाल नाम का कोई व्यक्ति ही नहीं।

कलमदास : कहीं जरूर कुछ गड़बड़ है।

सरला : अच्छा, तो झूठी खबर कर दी···यह बीस पच्चीस रुपये की मिठाई दोस्तों को खिलाई जा रही है। ओह, मेरे तो करम फूट गये जो···

कलमदास : (नाराज) क्या मुसीबत है ! मैं कहता हू···

सरला : (डांट कर, कलमदास से) मैं कहती हू, मुसीबत तो तुम्हारी अब आएगी। जल्दी घर चलो। मेरा सीधा हाथ फड़क रहा है।

कलमदास : (घबराकर) मु···मु···मुझे अभी द···द···दफ्तर में बहुत काम है।

नंदा : तुम फिक्र मत करो, कलमदास। तुम्हारा काम मैं निबटा दूगा। बड़े इत्मीनान के साथ घर जाओ।

दयाल : और अगर ठीक समझो तो कल की सिकनेस लीव की एप्लीकेशन अभी देते जाओ।

हरजीत : मेरे ख्याल से दयाल ठीक कह रहा है, कलमदास।

कलमदास : (क्रोध में) देख लूगा। सबको देख लूगा।

सरला : क्या देख लोगे ! तुम तो जन्म-जन्म के फिसड्डी हो। तुम्हारा

प्रोमोशन अगले जन्म में भी नहीं हो सकता। चलो मेरे साथ मायके। आज पिताजी के सामने अपने करमों को पीटूंगी।

हरजीत : भाभी, करमों को पीटना, करमदास को नहीं।

कलमदास : क्या मुसीबत है!

सरला : (क्रोध से) पहले तो घर चलकर मुझे आज की मिठाई का हिसाब दिखाओ। (डांटकर) कल से तुम्हारा जेबखर्च बन्द।

कलमदास : (रुँआसा) च···च···चलता हूं।

[उनके जाने के बाद सब हँसते हैं।]

हरजीत : भई, नंदा, मान गये तुम्हें! क्या मोहनलाल बनकर फोन किया!

नंदा : अब बच्चू को पता चलेगा कि कैसे साथियों की अफसरों से झूठी शिकायतें की जाती है।

दयाल : खैर, हटाओ, पहले इस मिठाई को तो ठिकाने लगाओ।

सब : (जोर से) कलमदास, बी० ए० जिंदाबाद!

ऊंची मंज़िल नीची मंज़िल

पात्र परिचय :

त्रिवेदीजी : पाखंडी ब्राह्मण, उमर ५० वर्ष, लम्बे बाल, बड़ा-सा त्रिपुंड तिलक, कुर्ता, धोती, चप्पल, गले में रुद्राक्ष की माला।

लाला हरदयाल : चट व्यापारी उमर ५० वर्ष, सिर के सामने से बाल गायब, पीछे को सरकी हुई किश्ती टोपी, नीचे को झुकी घनी मूँछें गोल सुनहरा चश्मा, जो नीचे सरकता रहता है, कुरता, और धोती, चप्पल।

ठाकुर साहब : रस्सी जल गई, बल न गए जैसे भूतपूर्व जमींदार, उमर ५५ वर्ष, अच्छी कदकाठी, ऊपर को उठी हुई बड़ी-बड़ी मूँछें, साफा, अचकन, चूड़ीदार पायजामा, जूते, हाथ में दोनाली बंदूक।

सेठजी : मकान मालिक, उमर ६० वर्ष, दोहरा बदन, गांधी टोपी, बन्द गले का कोट, धोती, चप्पल।

मनोहर लाल : स्वस्थ, हँसमुख, शिष्ट, उमर ३० वर्ष, सूटबूट, टाई।

(त्रिवेदीजी का कमरा।)

त्रिवेदीजी : (उत्तेजित) गया ! गया ! गया ! लालाजी, गया !

लाला हरदयाल : क्या गया, त्रिवेदीजी ? इतने बोखलाए हुए क्यों हो ?

त्रिवेदीजी : कुछ नहीं बचेगा अब, लाला हरदयालजी !

लालाजी : क्यों पहेलियां बुझा रहे हो, त्रिवेदीजी।

त्रिवेदीजी : हाय लोक ! हाय परलोक !

लालाजी : क्या हुआ लोक परलोक को ?

त्रिवेदीजी : दोनों गए।

लालाजी : (घबरा कर) है ! क्या कोई जबर बम छोड़ा गया है ?

त्रिवेदीजी : हां, बहुत विकट बम।

लालाजी : (और भी घबराकर) किसने छोड़ा है ? कहां छोड़ा है ? कब छोड़ा है ?

त्रिवेदीजी : सेठ किशनचन्द ने। हमारे मकान मे। आज सुबह।

लालाजी : (हँसते हुए) भांग तो नहीं पी गए, त्रिवेदीजी ?

त्रिवेदीजी : अभी तो तुम्हें हँसी सूझ रही है, जब बम का विष फैलेगा तो मुड़िया पकड़कर रोओगे।

लालाजी : चलो हम दोनों मिलकर रो लेंगे। पर यह तो बताओ हमारा मकान-मालिक सेठ किशनचन्द क्या खाकर बम छोड़ेगा ! और फिर क्या तुम उसे इतना बुद्धू समझते हो कि वह अपने ही हाथों बम छोड़कर अपना मकान नष्ट कर देगा ?

त्रिवेदीजी : लालाजी, तुम कुछ समझे ही नहीं।

लालाजी : तो फिर समझाओ न।

त्रिवेदीजी : सेठ किशनचन्द ने जो बम छोड़ा है उससे न वह नष्ट होगा, न उसका मकान।

लालाजी : फिर कौन नष्ट होगा?

त्रिवेदीजी : मैं, तुम और ठाकुर लखनपाल।

लालाजी : सो कैसे भला?

त्रिवेदीजी : बस कह दिया। हम सबका लोक-परलोक बिगड़ गया।

ठाकुर साहब : (आते हुए) किसकी इतनी मजाल है जो हमारा लोक-परलोक बिगाड़े?

त्रिवेदीजी : आइए, आइए, ठाकुर लखनपालजी। बड़े मौके से आ गए आप।

ठाकुर साहब : अभी शिकार से लौटकर आया हूं। जीने से ऊपर चढ़ रहा था कि लालाजी के कमरे से आपकी आवाज सुनाई दी। क्या मामला है?

त्रिवेदीजी : समस्या बड़ी गंभीर है, ठाकुर साहब।

ठाकुर साहब : क्या कोई डाका पड़ने वाला है? कोई फिक्र की बात नहीं। मेरी यह दुनाली बन्दूक देखी है? एक-एक को भून दूंगा।

लालाजी : पड़ने वाला नहीं है, ठाकुर साहब, पड़ गया। अब तो हमारा लोक भी गया, परलोक भी गया।

ठाकुर साहब : आप लोग इतने घबरा क्यों रहे हैं? मामला खोलकर बताइए।

त्रिवेदीजी : तो सुनिए। सेठ किशनचन्द के इस दोमंजिले मकान में ऊपर चार फ्लैट हैं। है कि नहीं?

ठाकुर साहब : हैं। एक में मैं रहता हूं, दूसरे में आप, तीसरे में लालाजी और चौथा खाली पड़ा है।

त्रिवेदीजी : अब यह खाली फ्लैट आबाद होने जा रहा है, और हम तीनों बरबाद होने जा रहे हैं।

ठाकुर साहब : त्रिवेदीजी, तो क्या सेठ किशनचन्द इस खाली फ्लैट पर ही बम छोड़ेगा?

त्रिवेदीजी : यही तो मैं इतनी देर से कह रहा हूं।

लालाजी : खाक कह रहे हो इतनी देर से !

ठाकुर साहब : हां, त्रिवेदीजी। बात तो आपकी अब तक मेरे पल्ले भी नहीं पड़ी।

त्रिवेदीजी : तो सुनिए, ठाकुर साहब। सुना है इस खाली फ्लैट में एक किराएदार आ रहा है।

ठाकुर साहब : यह तो बड़ी खुशी की बात है। रौनक बढ जाएगी।

लालाजी : और क्या !

त्रिवेदीजी : मालूम भी है इस फ्लैट में आ कौन रहा है ?

ठाकुर साहब : कौन ?

त्रिवेदीजी : एक अछूत।

लालाजी : (चौंककर) हैं !

ठाकुर साहब : (गुस्से में) क्या कहा ?

त्रिवेदीजी : जी, हां। मैं ठीक ही कह रहा हूं। हमारा नया पड़ोसी एक अछूत है।

लालाजी : (गुस्से में) यह नहीं हो सकता।

ठाकुर साहब : मैं यह कभी नहीं बरदाश्त कर सकता। जब मैं राजपुर का जमींदार था तो गांव के किनारे पर बने कुएं के आसपास भी कोई अछूत मेरी बंदूक के डर के मारे नहीं फटक सकता था। आज मेरी जमींदारी छीन ली गई है तो इसके माने यह नहीं हुए कि मैं एक अछूत को अपना पड़ोसी बन जाने दूं !

लालाजी : ठाकुर साहब, बात तो आपकी सवा सोलह आने सही है। लेकिन आज के जमाने में बंदूक से अछूतों का शिकार करना बड़े खतरे का काम है।

त्रिवेदीजी : तो क्या, लालाजी, अपना धर्म भ्रष्ट हो जाने दें ?

लालाजी : नहीं, त्रिवेदीजी, यह मैंने कब कहा ? धर्म ही भ्रष्ट हो गया तो फिर बचा ही क्या ? मैं तो यह कह रहा था कि कोई ऐसी तरकीब निकालो कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।

त्रिवेदीजी : तो फिर क्या किया जाए ? आजकल तो हमारे श्राप भी घास-

लेटी हो गए—कोई प्रभाव ही नहीं रहा उनका।

लालाजी : मेरा विचार है कि हम तीनों मिलकर सेठ किशनचन्द के पास चलें, और उसे किसी तरह समझा-बुझाकर इस बला को टालें।

ठाकुर साहब : अच्छा है वह बातों से मान जाए, नहीं तो मुझे अपनी बंदूक से काम लेना पड़ेगा।

त्रिवेदीजी : तो फिर चलिए अभी।

दृश्य २

[सेठ किशनचन्द का कमरा]

ठाकुर साहब : (आवाज देते हुए) सेठ किशनचन्दजी !

सेठ किशनचन्द : (दरवाजा खोलकर प्रसन्न होकर) आ हा ! ब्रह्मा, विष्णु, महेश—तीनों ने एक साथ ही दर्शन दिए। आइए, पधारिए।

लालाजी : सेठजी, हमें देखकर आपको आश्चर्य क्यों हो रहा है ?

सेठजी : मैं सोच रहा था कि आज तक आप लोगों ने कभी नीचे आकर मेरा घर पवित्र नहीं किया। हर बार मुझे ही किराया वसूल करने के लिए दस चक्कर लगाने पड़ते थे।

ठाकुर साहब : आप मकान-मालिक हैं। किराया वसूल करने के लिए आप चक्कर नहीं लगाएंगे तो कौन लगाएगा ?

सेठजी : आज आप लोगों ने चक्कर लगाया है—कहीं उलटे मुझसे ही किराया वसूल करने तो नहीं आए हैं ?

त्रिवेदीजी : सेठजी, हम एक बहुत गंभीर समस्या लेकर आपके पास आए हैं।

सेठजी : अगर आपकी समस्या किराया न देने के बारे में हो तो मैं आप लोगों से माफी मांगूंगा।

लालाजी : नहीं ! नहीं ! सेठजी ! किराया आप कहेंगे तो चार महीने की बजाए तीन महीने का बढ़ाकर दे देंगे।

त्रिवेदीजी : असली बात यह है, सेठजी, कि हमें आपके नए किराएदार पर आपत्ति है।

सेठजी : वाह, किराएदार मेरा है और आपत्ति आपको है !

ठाकुर साहब : जी, हां। एकदम आपत्ति है।

सेठजी : क्यों ?

लालाजी : क्योंकि वह अछूत है।

सेठजी : (बनते हुए) अछूत ? अछूत किसे कहते हैं ?

त्रिवेदीजी : सेठजी, आप भारत में रहते हैं या कहीं और ?

सेठजी : अगर दिल्ली भारत में है, और चांदनी चौक दिल्ली में है, और मेरा यह दोमंजिला मकान गली बताशा में है, और अपने इस दोमंजिले मकान की निचली मंजिल में अगर मैं रहता हूं··· तो मेरे ख्याल से मैं भारत में ही रहता हूं। वैसे आप लोगों का क्या ख्याल है ?

त्रिवेदीजी : सेठजी, मजाक छोड़िए। आप अच्छी तरह जानते हैं कि अछूत किसे कहते हैं।

लालाजी : जी, हां···और आप यह भी जानते हैं कि आपका नया किराएदार अछूत है।

सेठजी : (बनावटी आश्चर्य से) क्या कहा—अछूत ?

ठाकुर साहब : जी, अछूत।

सेठजी : आप लोगों ने उसे देखा है ?

त्रिवेदीजी : देखा तो नहीं, पर सुना है कि वह अछूत है।

सेठजी : तब तो आप लोगों ने गलत सुना। वह अछूत नहीं है।

लालाजी : आपको ठीक मालूम है ?

सेठजी : हां, लालाजी।

ठाकुर साहब : आपके पास इसका कोई पक्का सबूत है कि वह अछूत नहीं है ?

सेठजी : जी, हां। मैंने उसे अपनी आंखों से देखा है, उसके साथ बातचीत की है। ऊपर से नीचे तक आप लोगों की तरह ही इंसान है।

त्रिवेदीजी : (खीझकर) इंसान तो होगा ही। लेकिन इंसान अछूत भी तो हो सकता है।

सेठजी : तब तो आप लोग भी अछूत हो सकते हैं।

त्रिवेदीजी : (क्रोध से) मैं ब्राह्मण हूं।

ठाकुर साहब : (क्रोध से) मैं क्षत्रिय हूं।

लालाजी : (क्रोध से) मैं वैश्य हूं।

सेठजी : (बनते हुए) अच्छा, तो मैं बड़े धोखे में था। मैं तो अब तक आप लोगों को इंसान ही समझता था। मैं आप लोगों से क्षमा चाहता हूं।

त्रिवेदीजी : सेठजी, मैं तो चार बात की एक बात जानता हूं···एक अछूत को हमारा पड़ोसी बनाकर आप हम ऊंची जाति वालों का लोक और परलोक बिगाड़ने के जिम्मेदार होंगे।

सेठजी : त्रिवेदीजी, मैं उन लोगों मे नहीं हूं जो अपनी जिम्मेदारियों से घबराते है। और यह तो एक बहुत छोटी-सी जिम्मेदारी है जो आप लोगों ने मेरे नाजुक कधों पर डाल दी है। इस ज़िम्मेदारी को मैं खुशी से पूरी करूंगा।

ठाकुर साहब : (क्रोध से चीखकर) बकवास बंद करो, सेठ! नहीं तो तुम्हारी खोपड़ी होगी और मेरी बंदूक की गोली।

सेठजी : (बड़े इतमीनान से) देखो, ठाकुर, तुम्हारी इन गीदड़ भभकियों से मैं डरने वाला नहीं हूं।

लालाजी : (समझाते हुए) ठाकुर साहब, इतना क्रोध न कीजिए। सेठजी खुद समझदार है—वैसे ही मान जाएंगे।

सेठजी : मैं तो इतना ही समझता हूं कि उस इसान से जिसे आप अछूत कहते है, मेरी लिखा-पढ़ी हो चुकी है। मैं एक महीने का उससे पेशगी किराया भी ले चुका हूं। मैं अब किस मुह से उसे मना कर सकता हूं? और फिर मुझे किराया भी वह अच्छा दे रहा है।

त्रिवेदीजी : आपके किराए का प्रबन्ध हम कर देंगे। बस आप किसी तरह उसे मना कर दीजिए।

सेठजी : आप लोग अपने ही फ्लैट का किराया मुश्किल से दे पाते है—उसका किराया क्या चदा जमा करके देंगे?

लालाजी : हम कुछ भी करें—आपको किराए से मतलब, वह आपको मिल जाएगा।

सेठजी : नहीं, लालाजी, मुझे यह मजूर नहीं है।

त्रिवेदीजी : तो आप हमारा धर्म बिगाड़ कर ही रहेंगे?

सेठजी : जो धर्म इंसान और इंसान के बीच भेदभाव करता है वह धर्म नहीं, पाखंड है।

त्रिवेदीजी : क्या धर्म है और क्या नहीं है—यह मैं आपसे अधिक समझता हूं।

सेठजी : खैर, मैं आप जैसे विद्वान लोगों के साथ भला क्या बहस कर सकता हूं !

ठाकुर साहब : इतनी देर से आप बेकार की बहस नहीं तो और क्या कर रहे है ?

लालाजी : सेठजी, तीन भले आदमी जब आपसे कह रहे है, तो आप मान क्यों नहीं जाते ?

सेठजी : अगर आप मेरी मानें तो एक बात कहूं ?

लालाजी : कहिए।

सेठजी : अछूत के साथ रहने में आपका लोकपरलोक बिगड़ता है ?

त्रिवेदीजी : अवश्य।

सेठजी : फिलहाल आप यह लोक तो छोड़ ही दीजिए। परलोक पहुंचने पर अगर वह भी बिगड़ता दिखाई दे, तो वहां से कहीं और चले जाइएगा।

ठाकुर साहब : (क्रोध से) तो आप सीधी तरह नहीं मानेंगे ?

सेठजी : मानना होता तो अब तक कभी का मान गया होता, ठाकुर साहब।

[दरवाजे पर खटखटाहट]

सेठजी : (आवाज देते हुए) कौन साहब हैं ? (दरवाजा खोलते हैं) ओह ! आप ! आइए, आइए, पहले इन सज्जनों का आपसे परिचय करवा दूं। आप हैं त्रिवेदीजी—बहुत बड़े विद्वान हैं। और आप हैं ठाकुर लखनपाल—बहुत बड़े शिकारी हैं। और आप हैं लाला हरदयाल—बहुत बड़े व्यापारी हैं। शहर में ऊंचे लोगों मे आपकी गिनती है। और आप हैं श्री मनोहर लाल।

मनोहर लाल : आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

ठाकुर साहब : सेठजी, आपकी तारीफ ?

मनोहर लाल : मैं आप लोगों का सेवक हूं।

सेठजी : ठाकुर साहब, यह बहुत ही सज्जन है। घमंड तो इन्हें छू तक नहीं गया है। अभी हाल ही में यहां जज बनकर आए हैं।

ठाकुर साहब : (खुशामदी लहजे में) खूब मुलाकात हुई आपसे।

त्रिवेदीजी : (खुशामदी लहजे में) आशा है आगे भी होती रहेगी।

लालाजी : (खुशामदी लहजे में) क्यों नहीं! ऐसे सज्जन व्यक्ति से मिलकर किसे प्रसन्नता नहीं होगी!

मनोहर लाल : आप लोगों की कृपा है। अच्छा, सेठजी, इस समय तो मैं चलूं। एक मित्र के साथ हूं। घंटे भर बाद फिर लौटकर आऊंगा। नमस्ते!

सब : नमस्ते!

[मनोहर लाल बाहर जाता है]

सेठजी : बहुत ही शरीफ आदमी है।

त्रिवेदीजी : सबसे बड़ी बात तो यह है कि जज है।

ठाकुर साहब : काम के आदमी हैं।

लालाजी : मेरा तो विचार है कि इन से मेलजोल बढ़ाना चाहिए।

त्रिवेदीजी : इसके लिए आवश्यक है कि अपने निवासस्थान पर जज साहब को प्रीतिभोज पर आमन्त्रित किया जाए। क्यों, ठाकुर साहब?

ठाकुर साहब : त्रिवेदीजी, आपके कलाकंद जज साहब को पसंद नहीं आएंगे। मैं इन्हें मुर्गमुसल्लम की दावत दूंगा।

लालाजी : ठाकुर साहब, मेरी पूरी कचौड़ियों में क्या खराबी है?

सेठजी : आप लोग झगड़ा क्यों करते हैं! तीनों मिलजुल कर दावत कर दीजिए। जज साहब को जो पसंद होगा खा लेंगे।

त्रिवेदीजी : यह उत्तम विचार है।

ठाकुर साहब : सेठजी, आपको हमारी ओर से पैरवी करनी होगी।

लालाजी : हां, सेठजी, जज साहब को दावत के लिए राजी करना आपका काम है।

सेठजी : जरूर, जरूर, यह जिम्मा मेरा रहा…लेकिन एक बात मैं

पहले से बता देना चाहता हूं, कहीं बाद में आप लोग मुझे दोष दें।

त्रिवेदीजी : भला हम क्यों दोष देंगे! आप हमारा यह काम करा दीजिए हम जीवन भर आपके गुण गाएंगे।

ठाकुर साहब : क्यों नहीं!

लालाजी : बल्कि हम वादा करते हैं कि आगे से तीन के बजाए दो महीने का किराया बढ़ा कर देंगे।

सेठजी : धन्यवाद। फिर भी आप लोग मेरी बात तो सुन लीजिए।

त्रिवेदीजी : अच्छा, बताइए क्या बात है?

सेठजी : जज साहब से अगर आप लोग मेलजोल न बढ़ाएं तो अच्छा है। बल्कि मैं तो कहूंगा कि इनसे दूर की नमस्ते भी अच्छी नहीं।

ठाकुर साहब : क्यों?

सेठजी : जज साहब अछूत हैं।

[तीनों मुंह खोले देखते रह जाते हैं, फिर खिसिया जाते हैं।]

शादी करवा लो कंपनी प्राइवेट लिमिटेड

पात्र परिचय :

मैनेजर : उमर ३० वर्ष, सूटबूट, मफलर, काली किश्ती टोपी, तलवार कट मूंछें।

पंडितजी : शादी करवाने वाले आम पंडित, जो अपने काम में कम और दक्षिणा लेने में ज्यादा होशियार होते हैं, गंजे सिर पर लंबी चुटिया, माथे पर त्रिपुंड, एक कमानी वाला चश्मा (दूसरी कमानी की जगह डोरा बंधा है), होंठों के ऊपर गिरती मूंछें, नंगे शरीर, जनेऊ, धोती।

जगदीश : २५ वर्ष, आधुनिक वेशभूषा में, स्मार्ट।

सतीश : २० वर्ष, दुखी जीव, कुरता, पायजामा, चप्पल, बड़े-बड़े बाल, थोडी बढी हुई दाढी-मूंछें।

रजनी : २० वर्ष, सुन्दर, तेजतर्रार अच्छी वेशभूषा और आधुनिक मेकअप।

रामप्रसाद,लच्छो: पति पत्नी, उमर ५० और ४५ वर्ष साधारण व्यक्ति, साधारण वेशभूषा।

कालूराम : विदेशी छाप, चालढाल, उमर ३० वर्ष, रंग काला, हिप्पी बाल, बडा सा काला चश्मा, मुहं मे च्यूइंगगम, आधुनिक हिप्पी स्टाइल कपडे।

भीमराज : पहलवानों जैसी कदकाठी, उमर ५० वर्ष, गांव वाला, बड़ी मूंछें, पगड़ी, खादी का कुरता और धोती, चमरौधा, हाथ में लाठी।

चमेली : गाव की भोलीभाली लड़की, उमर २५ वर्ष, दोहरी काया, ओढ़नी, बंडी, लहंगा, ढेर सारी चूड़ियां, पायजेब, झुमके, काजल।

(कंपनी का दफ्तर—देसी ढंग से सजा हुआ। एक मंडप भी है।)

मैनेजर : पंडितजी, आपका पोथापत्रा, मंडप वगैरा, वगैरा सब तैयार हैं न ?

पंडितजी : हां, मुनीजर सा'ब, सब तैयार हैं। और साथ मे मैं भी तैयार हूं।

मैनेजर : अच्छा, पंडितजी, जरा पत्रे में देखकर यह तो बताओ कि शादी करवा लो कंपनी प्राइवेट लिमिटेड के आज सितारे कैसे है ?

पंडितजी : अभी तो, मुनीजर सा'ब। (पत्रा पढते हुए, प्रसन्नता से) वाह ! वाह ! ता···! ता···! ता···!

मैनेजर : (झुंझलाकर) फिर वही ता···ता···लगा रखी है। मैं कहता हूं···

पंडितजी : मैं कहता हूं आज तो गाहकों का तांता लग जाएगा।

मैनेजर : (प्रसन्न) अच्छा ?

पंडितजी : हां, एक के बाद एक···एक के बाद एक···गाहक चला आएगा।

जगदीश : (आते हुए) मैं जरा जल्दी अंदर आ सकता हूं ?

पंडितजी : लो पहला गाहक आ भी गया।

मैनेजर : (जगदीश से) आइए, आइए। तशरीफ रखिए।

जगदीश : तशरीफ रखने का वक्त नहीं है। मैं बहुत जल्दी मे हूं। आप यह बताइए कि जल्दी से मेरी शादी करवा सकते है या नहीं ?

मैनेजर : क्यों नहीं ! आप पहले कोई लड़की तो पसंद कर लीजिए।

यह देखिए मेरे पास एक से एक बढ़िया फोटो···

जगदीश : फोटो देखने का भी मेरे पास वक्त नहीं है। लड़की कोई भी हो। लेकिन शादी बस अभी पांच मिनिट में हो जानी चाहिए।

मैनेजर : (आश्चर्य से) पांच मिनिट में ?

जगदीश : जी।

मैनेजर : पर, साहब, पांच मिनिट मे तो चाय भी तैयार नही हो सकती, शादी की तैयारी कैसे हो सकती है !

जगदीश . तब रहने दीजिए। मेरे पास सिर्फ पांच मिनिट का समय ही है।

मैनेजर : आखिर इतनी जल्दी क्यों है आपको ? क्या मुहुर्त निकला जा रहा है ?

पंडितजी : इस समय तो मुहुर्त ही नही है।

जगदीश : पंडितजी, मुहुर्त को मारो गोली ! जल्दी इसलिए है कि मैं दस बजे दफ्तर पहुचने में बहुत पंक्चुअल हू, और इस वक्त पौने दस बज चुके है।

मैनेजर : तब फिर छुट्टी वाले दिन फुरसत से शादी करवा लीजिएगा।

जगदीश : नही, आज रास्ते में शादी करने का मूड बन गया था। वैसे छुट्टी के दिन मैं क्रिकेट खेलता हूं···(एकदम) ओह, दस बजने में दस मिनिट रह गए ! मैं चला, नही तो वक्त पर दफ्तर नही पहुंच पाऊगा। (जाता है)

मैनेजर : जो आता है घोड़े पर सवार होकर आता है।

पंडितजी : मैनेजर साब, घोड़े पर सवार होकर आता, तो शादी करवाकर बैंड बजाता हुआ जाता। यह तो साइकिल पर घंटी टनटनाता हुआ चला गया। कोई बात नही, दूसरा आएगा···वह देखिए, कोई आ रहा है।

सतीश : (आते हुए। तरन्नुम में)

ऐ सुबह के तारे तू ही बता,
अंजाम मेरा क्या होना है ?
रातों को तसव्वुर है उनका,
चुपके-चुपके रोना है।

मैनेजर : पंडितजी, यह तो कोई शायर मालूम पड़ता है।

पंडितजी : कोई प्रेम का मारा है, मुनीजर सा'ब।

सतीश : (पास आकर, जोर से आह भरता है, रोनी आवाज में) चुपके-चुपके रोना है।

मैनेजर : पर, साहब, आप तो सरेआम रो रहे हैं।

सतीश : (आह भरकर) मैनेजर साहब, आप चाहें तो मेरा रोना बंद कर सकते हैं।

मैनेजर : कैसे ?

सतीश : मेरी शादी करवा दीजिए।

मैनेजर : (प्रसन्न) वाह ! यही तो शादी करवा लो कंपनी प्राइवेट लिमिटेड का धंधा है। यह देखिए, मेरे पास बहुत-सी लड़कियों के फोटो है। एक-एक करके देखते जाइए जो पसंद आए···

सतीश : नही···

मैनेजर : यह नही, तो दूसरा फोटो देखिए···

सतीश : नही···नही···

मैनेजर : कोई बात नही, तीसरा फोटो देखिए···

सतीश : नही···नही···नही···इनमें से मुझे कोई भी पसंद नही है।

मैनेजर : तब तो बड़ी मुश्किल है।

सतीश : कोई मुश्किल नही है। एक फोटो मेरे पास है, जो मुझे बहुत पसंद है। बस आप किसी तरह इसी लड़की से मेरी शादी करवा दीजिए।

मैनेजर : यह नही हो सकता।

सतीश : मैनेजर साहब, आप चाहें तो सब कुछ हो सकता है।

मैनेजर : जी, नही।

सतीश : लेकिन क्यों ?

मैनेजर : साहब, हमारे स्टाक में जो माल है, हम उसीमें से आपको सप्लाई कर सकते है।

सतीश : (आह भरकर) लेकिन मैं तो सिर्फ इसी फोटो वाली के लिए जीवित हूं, इसीके लिए मरता हूं।

मैनेजर : तो कही और जाकर मरिए।

पंडितजी : मैं आपकी आत्मा की शांति के लिए भगवान से प्रार्थना करूगा।

सतीश : धन्यवाद। (जाता है)

मैनेजर : पडितजी, यह भी गया।

पडितजी : कोई बात नही, तीसरा आएगा। वह देखिए कोई आ रहा है···नही···आ रही है। काफी घबराई हुई मालूम होती है।

रजनी : (हाफती हुई, अटक-अटक कर) मैं···मैं···आपसे···अकेले मे मिलना चाहती हू···

मैनेजर : (घबराकर) जी···मैं किसी लड़की से अकेले मे नही मिलता। आपको जो कुछ कहना है यही कह दीजिए।

रजनी : मैं घर से भागकर आई हू।

पंडितजी : वस नही मिली क्या ?

रजनी : मज़ाक छोड़िए। मुझे डर है कि कही पिताजी को न मालूम हो जाए।

मैनेजर : आखिर बात क्या है ?

रजनी : पिताजी एक ऐसे लड़के से मेरी शादी करना चाहते हैं, जो मुझे बिलकुल पसंद नही है।

मैनेजर : मेरे पास बहुत से लडको के फोटो हैं। यह देखिए—आप इनमें से कोई-सा पसंद करके अपने पिताजी को बता दीजिए। देखिए यह साहब एम० ए० पास हैं।

रजनी : कौन-सी डिवीजन में ?

मैनेजर : थर्ड।

रजनी : इन्हे तो कही नौकरी भी नही मिल सकती।

पंडितजी : ससुराल मे तो मिल सकती है—घरजमाई की।

मैनेजर : यह देखिए दूसरा फोटो। इनके पिताजी की दूर-दूर तक पहुच है। बी० ए० पास करते ही इन्हें कहीं अच्छी नौकरी मिल जाएगी।

रजनी : इसीलिए शायद इन्हें बी० ए० पास करने की कोई खास जल्दी नहीं है।

मैनेजर : आपको कैसे मालूम ?

रजनी : मेरे कालिज में ही पढ़ते हैं।

मैनेजर : कोई बात नहीं। और देखि..

रजनी : (एक के बाद एक फोटो देखते हुए) ये सब बेकार है—न शकल न सूरत।

पंडितजी : सीरत भी तो देखिए।

रजनी : यह किसका फोटो है ?

मैनेजर : प्रोफेसर हैं। बहुत विद्वान, आजकल मक्खियों पर रिसर्च कर रहे हैं।

रजनी : तो इन्हें मक्खी मारने से ही फुरसत नहीं मिलती होगी—शादी क्यों करना चाहते हैं ?

पंडितजी : एक से दो भले—मक्खियां जल्दी मर जाएंगी।

मैनेजर : यह देखिए। बहुत ही प्रतिभाशाली युवक है।

रजनी : क्या प्रतिभा है इनमें ?

मैनेजर : चित्रकार है।

पंडितजी : हां। और ऐसे गजब के कि लड़की को सामने बैठाकर घोड़ी का चित्र बना देते हैं।

रजनी : माडर्न आर्टिस्ट होंगे।

मैनेजर : और देखिए, यह साहब कहानी लेखक हैं।

रजनी : कैसी कहानियां लिखते हैं।

पंडितजी : झूठी।

रजनी : और कोई फोटो है ?

मैनेजर : अब तो कोई नहीं है। अरे, हां याद आया। एक और फोटो है। यह देखिए, यह बहुत ही भोलाभाला लड़का है।

रजनी : (चौंककर) अरे, यह यहां भी ?

मैनेजर : क्या मतलब ?

रजनी : इसी बुद्धू से तो पिताजी मेरी शादी करना चाहते हैं। (कहती-कहती भाग जाती है)

मैनेजर : पंडितजी, यह भी गई।

पंडितजी : कोई बात नहीं, चौथी आएगी…वह देखिए कोई आ रही है…नहीं, आ रहा है…नहीं, आ रही है, आ रहा है।

मैनेजर : क्या बकवास कर रहे हो, पंडितजी—आ रही है, आ रहा है!

पंडितजी : बकवास नहीं, मुनीजर सा'ब। आ भी रही है और आ भी रहा है—यानी एक औरत है और एक आदमी। खुद देख लो।

मैनेजर : हां, ठीक तो कह रहे हो, पंडितजी।

पंडितजी : पत्रा देखकर जो कह रहा हूं—ताता लग जाएगा आज तो।

रामप्रसाद : नमस्ते, मैनेजर साहब।

मैनेजर : नमस्ते जी! नमस्ते! आइए।

लच्छो : नमस्ते, मैनेजर साहब।

मैनेजर : नमस्ते जी! नमस्ते! आइए।

पंडितजी : देखिए, भाईजी, शादी-ब्याह का मामला है। अकेले में बात करना अच्छा रहता है।

रामप्रसाद : ठीक है। यहां और कोई भी है इस वक्त?

पंडितजी : यह बहनजी बैठी हैं न। आप के सामने शरमाएंगी। इसलिए आप थोड़ी देर को…

रामप्रसाद : (हंसते हुए) वाह, पंडितजी! यह तो सारी उमर मेरे सामने नहीं शरमाई, अब क्या शरमाएगी!

मैनेजर : आपका इनसे कोई संबंध है?

रामप्रसाद : संबंध! अजी, ऐसा कि पीछा छुड़ाना चाहूं तो न छूटे। क्यों, लच्छो?

लच्छो : हां, जी। मैं कोई ऐसी-वैसी नहीं—सात फेरों वाली हूं।

मैनेजर : बड़ी गल्ती हो गई। बात यह है कि यहां अब तक विवाह के इच्छुक कुंआरे लड़के-लड़कियां ही आए हैं।

पंडितजी : क्षमा करना, महाराज।

रामप्रसाद : कोई बात नहीं।

मैनेजर : मैं आप दोनों की क्या सेवा कर सकता हूं?

रामप्रसाद : मैनेजर साहब, अब आपसे क्या छिपाना!

लच्छो : और क्या! अब तो आपका ही आसरा है। हम तो कोशिश करके हार गए।

रामप्रसाद : अपना एक नालायक लड़का है। पढ़ने भेजा, तो स्कूल की चहारदीवारी छूकर लौट आया।

लच्छो : दुकान पर बैठाया, तो दोस्तों में माल उड़ा दिया।

रामप्रसाद : पुलिस में भरती करवाया, तो चोरी करता पकड़ा गया।

लच्छो : सोचा कि शादी कर दें, तो शायद सुधर जाए।

मैनेजर : पर ऐसे लड़के से शादी कौन करेगा?

लच्छो : यह देखना आपका काम है।

रामप्रसाद : और क्या! आखिर शादी करवा लो कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड के मैनेजर है आप। यह तो आप के बाएं हाथ का खेल है।

पंडितजी : बात यह है, भाईजी, कि आजकल मुनीजर सा'ब के बाए हाथ का फ्रैक्चर हो गया है, इसलिए यह उस हाथ से खेल नहीं सकते।

लच्छो : कोई बात नहीं—दाएं हाथ का खेल दिखा सकते हैं।

पंडितजी : इस खतरनाक खेल में तो वह हाथ भी टूट जाएगा।

रामप्रसाद : फिर?

मैनेजर : फिलहाल तो मेरे स्टाक में कोई लड़की नही है जो आप के लड़के के योग्य हो।

लच्छो : आगे ध्यान रखना, मैनेजर साहब।

मैनेजर : जरूर।

रामप्रसाद : अच्छा, नमस्ते! (दोनों जाते हैं)

मैनेजर : पंडितजी, यह भी गए।

पंडितजी : कोई बात नहीं, पांचवां आएगा…यह आ गया।

कालूराम : वैल, मैनेजर, तुम शादी करना मांगता?

मैनेजर : नहीं, साहब।

कालूराम : नहीं? वैल, फिर तुम यह कम्पनी क्यों खोला?

मैनेजर : शादी करने को।

कालूराम : यही तो हम भी बोलता। फिर तुम शादी करने को मना क्यों

करता ?

मैनेजर : साहब, मुझे हकीम ने मना किया है।

कालूराम : ओह, तुम कुछ नहीं समझा। हम तुम्हारी शादी नहीं, अपना शादी करना मांगता।

मैनेजर : तो, साहब, पहले ही ऐसा बोला होता।

कालूराम : वैल, तो तुम हमारा शादी करेगा ?

मैनेजर : जरूर करूंगा।

कालूराम : अच्छा, देखो। पहले हम अपना बारे में बोलता। हम चार साल विलायत में रहा। हमको हिन्दुस्तान अच्छा नहीं लगता। यहां का लोग काला माफिक, हम काला माफिक लड़की से शादी करना नहीं मांगता।

पंडितजी : पर, साहब, आप भी तो काले हैं।

कालूराम : ओ, हमको काला माफिक बोलेगा, तो हम तुमको शूट कर देगा, समझे ?

पंडितजी : (घबराकर) समझ गया, सा'ब। समझ गया।

कालूराम : बस तुम एकदम चुप रहना मांगता। एकदम शटअप !

पंडितजी : चुप हो गया, सा'ब।

कालूराम : वैल, मैनेजर, हम काला माफिक है, पर हमने अपना नाम गोरा माफिक रखा।

मैनेजर : क्या नाम है आपका ?

कालूराम : पहले हमारा नाम कालूराम था। अब हम व्हाइटराम हो गया है। अच्छा नाम है ?

पंडितजी : (स्वतः) वाह, वे कलुआ !

कालूराम : तुम क्या बोला ?

मैनेजर : (घबराकर) कुछ नहीं, सा'ब। मैं तो रामनाम का जाप कर रहा था।

कालूराम : वैल, मैनेजर, हमको हिन्दुस्तान में गोरा माफिक लड़की नहीं मिलता।

मैनेजर : साहब, गोरी हिन्दुस्तानी लड़की भी मिल सकती है।

कालूराम : नहीं, नहीं ! ओह, नो ! हिन्दुस्तानी लड़की बिल्कुल नहीं चलेगा। हम चाहता तुम विलायत से हमारे लिए विलायती लेडी मंगाओ। हम उसी से शादी करना मांगता।

मैनेजर : यह तो बहुत मुश्किल है, साहब।

कालूराम : क्यों ? वट व्हाई ?

मैनेजर : विलायती माल के इंपोर्ट पर आजकल बहुत पाबंदियां लगी हुई हैं।

कालूराम : डैम इट ! आई ऐम गोइंग बैक टू इंगलैंड। (चला जाता है)

मैनेजर : पंडितजी, यह भी गया।

पंडितजी : कोई बात नहीं, छठा आएगा।

मैनेजर : आते ही जाएंगे या कोई फंसेगा भी ?

पंडितजी : जरूर फंसेगा।

मैनेजर : पत्रे में ठीक से देखकर बताओ।

पंडितजी : अभी लो। (पत्रा पढ़ते हुए) वाह ! वाह ! मुनीजर सा'ब, पत्रे में साफ लिखा है कि इस बार जो गाहक आएगा, वह जरूर फंसेगा।

मैनेजर : सच कह रहे हो, पंडितजी ?

पंडितजी : बिलकुल सच, मुनीजर सा'ब, वह बचकर जा नहीं सकता।

मैनेजर : अच्छा, देखते हैं।

पंडितजी : वह देखो सामने से आ रहा है···और आ रही है।

मैनेजर : क्या दो गाहक हैं ?

पंडितजी : हां, एक लड़की, एक आदमी। लो वे आ भी गए।

मैनेजर : (घबराकर) अरे बाप रे ! मर गए !

पंडितजी : (आश्चर्य से) क्या हुआ, मुनीजर सा'ब ?

मैनेजर : पंडितजी, जल्दी पत्रा देखो—इनके यहां से जाने का भी योग है या नहीं ?

भीमराज : (आते हुए) हूं ! शादी करवा लो कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड के मैनेजर बने हुए हो आजकल ?

पंडितजी : जी, महाराज। बड़ा नेक काम है। जिसकी शादी कहीं न

होती हो, यहां हो जाती है।

भीमराज : अच्छा !

पंडितजी : जी, महाराज ! यह हो नहीं सकता कि यहां जो आए वह निराश लौटे। क्यों, मुनीजर साब ?...अरे, बोलते क्यों नहीं? आखें फाड-फाडकर क्या देख रहे हो? मुनीजर सा'व ! मुनीजर सा'व ! अभी तो भलेचंगे थे। इतनी-सी देर में क्या साप सूघ गया !

भीमराज : साप नहीं, भीमराज सूंघ गया।

पंडितजी : यह कौन-सा जानवर होता है, महाराज ?

भीमराज . दो पैरों वाला जानवर जो इस समय तुम्हारे सामने खड़ा है।

पंडितजी : (हँसकर) आप तो मसखरी करते हैं, महाराज !

भीमराज : (नाराज) हँसना बंद करो, और जल्दी अपने मैनेजर को होश में लाओ।

पंडितजी : अ...अभी तो, महाराज ! पानी के छीटे मुंह पर मारता हूं।

मैनेजर : (होश में आते हुए) मैं...मैं...भागो ! भागो !

भीमराज : अब कहां भागोगे, बच्चू ? बड़ी मुश्किल से तुम्हारा पता-ठिकाना ढूंढा है।

पंडितजी : मुनीजर सा'व, होश में आओ। गाहक सामने खड़ा है। (धीरे से) पत्रे में लिखा है यह जरूर फसेगा।

मैनेजर : (धीरे से) मुझे नहीं फसाना है इसे। यहां से जल्दी भाग चलो।

भीमराज : यह क्या घुस-फुस कर रहे हो ?

पंडितजी : कुछ नहीं, महाराज। एक योजना पर विचार कर रहे थे।

भीमराज : अपनी योजना पर बाद में विचार करना। पहले मेरी योजना सुन लो।

पंडितजी : सुनाइए, महाराज।

भीमराज : यह जो लड़की मेरे साथ देख रहे हो, जानते हो कौन है ?

पंडितजी : आपकी पुत्री होगी, महाराज।

भीमराज : हां, और तुम्हारे मैनेजर की पत्नी है।

पंडितजी : शिव ! शिव ! यह कैसे हो सकता है, महाराज ! पत्रे के अनुसार हमारे मुनीजर सा'ब तो जन्मजन्मान्तर से कुआरे है।

भीमराज : यह सब बकवास है। दस साल पहले मेरी लड़की से इनकी शादी हुई थी। पांच साल बाद इन्होंने इसे छोड़ दिया।

पंडितजी : लड़की का अपराध ?

भीमराज : केवल इतना कि यह गांव की सीधी-सादी लडकी थी। और तुम्हारे मैनेजर को चाहिए थी कोई छमकछल्लो।

पंडितजी : शिव ! शिव ! यह तो अन्याय है। शास्त्रों के अनुसार तो विवाह जन्मजन्मांतर का सम्बन्ध है। यह अटूट है।

मैनेजर : नही, नही, यह मेरी पत्नी नहीं है।

पंडितजी : नही है, तो अब हो जाएगी।

मैनेजर : कभी नही।

चमेली : क्या कहते हो, प्राणनाथ ! तुम्हारे विरह में देखो मेरी क्या दशा हो गई है ?

मैनेजर : मैं तो भागता हूं।

चमेली : कहां चले ?

भीमराज : तुमने भागने की कोशिश की तो मैं तुम्हारी टांगें तोड़ दूंगा। बाहर मेरे आदमी खड़े हैं।

पंडितजी : महाराज, आप कन्या को इस मंडप में बैठाइए। चलिए, मुनीजर सा'ब, आप भी बैठिए। मैं अभी इन दोनों की दोबारा शादी करवा देता हूं।

मैनेजर : पंडितजी…

पंडितजी : मुनीजर सा'ब, पत्रे में लिखा है यह गाहक जरूर फंसेगा। मंडप में।

भीमराज : मैं पकड़कर ले चलता हूं।

मैनेजर : नही···नही···

भीमराज : नही कैसे ! पंडितजी, आप संस्कार प्रारम्भ कीजिए।

पंडितजी : (अस्पष्ट शब्दो में मंत्रोचारण करते है। बाद मे स्पष्ट शब्दो मे) ओम् शांति ! शांति।

खातिरदारी

पात्र परिचय :

रामसरूप : कालाबाजारी करने वाले ठेकेदार, उमर ५० वर्ष, चेहरे पर बेईमानी की बेशर्मी, कीमती कमीज, घड़ी, अंगूठियां।

रसवंती : रामसरूप की पत्नी, उमर ४५ वर्ष, कीमती साड़ी, आभूषण, आधुनिक मेकअप।

लालसिंह : रामसरूप का घरेलू नौकर, उमर ३५ वर्ष, धोती, कुरता।

शर्माजी : स्वस्थ, स्मार्ट, उमर ३० वर्ष, बुशशर्ट पैंट, जूते।

(रामसरूप का ड्राइंग रूम)

रामसरूप : मैंने कहा, सब तैयारी हो गई है न ? शर्माजी के आने का वक्त हो रहा है।

रसवती : आप बिलकुल परेशान मत होइए। मैंने सब इंतज़ाम कर लिया है।

रामसरूप : शर्माजी बहुत बड़े आदमी हैं। समाज में बड़ा नाम है उनका। लाखों का व्यापार है, कोठियाँ-मोटरें हैं। खातिरदारी में कोई कसर नहीं रहनी चाहिए।

रसवंती : मेरा इंतज़ाम तो पूरा है। चाहे तुम अभी बुला लो।

रामसरूप : (हँसकर) मैं कोई तुमसे कम थोड़े ही हूँ। शर्माजी पर वह रौब जमाऊँगा, वह रौब जमाऊँगा कि [illegible] दूर हो जाए। [illegible] कि उनकी [illegible] के लिए इससे अच्छा रिश्ता और कोई नहीं मिलेगा। और [illegible] की सारी [illegible]।

रसवंती : हाँ, जी, [illegible] है [illegible] कोई [illegible] ही देते।

रामसरूप : [illegible]

रसवती : (आवाज देकर) लालसिंह !

लालसिंह : (आते हुए) आया, बीबीजी। (पास आकर) जी।

रसवती : देखो, अभी हमारे एक मेहमान आने वाले हैं। बहुत बड़े आदमी हैं। उनका नाम शर्माजी है। तुम बाहर ही बैठना। जैसे ही वह आएं उन्हें आदर के साथ ड्राइंगरूम में बैठाना और हमें तुरत खबर देना।

लालसिंह : जी, बहुत अच्छा। (जाता है)

[लालसिंह दरवाजे पर खड़ा हो जाता है। शर्माजी आते हैं।]

शर्माजी : मिस्टर रामसरूप घर में हैं ?

लालसिंह : जी, हैं।

शर्माजी : उनसे कहना शर्मा आए हैं।

लालसिंह : आइए, अंदर आइए···आदर के साथ ड्राइंग रूम में बैठिए··· मैं अभी साहब को खबर करता हूं। (दूसरे दरवाजे से आवाज लगाकर) साहब, शर्माजी आ गए हैं, मैंने उन्हें आदर के साथ ड्राइंगरूम में बैठा दिया है।

रामसरूप : (दूर से) ठीक है। उनसे कहो, मैं अभी आया।

लालसिंह : जी, बहुत अच्छा। (शर्माजी से) साहब बस अभी आए। (जाता है)

रामसरूप : (आते हुए) क्षमा कीजिए, मैं जरा कपड़े बदल रहा था।

शर्माजी : कोई बात नहीं।

रामसरूप : बैठिए, बैठिए— आप खड़े क्यों हो गए ? आप तो मुझे लज्जित कर रहे हैं।

शर्माजी : नहीं, नहीं, ऐसी कोई बात नहीं।

लालसिंह : (आते हुए) चाय, साहब।

रामसरूप : यहां रख दो। और तुम जाओ। (लालसिंह जाता है)

शर्माजी : चाय की क्या जरूरत थी ?

रामसरूप : वाह, शर्माजी, आप भी कैसी बातें करते हैं ! आप मेरे घर आए और मैं चाय के लिए भी न पूछूं। लीजिए।

शर्माजी : (चाय पीते हुए) आपका बंगला तो बहुत शानदार है ! कब

बनवाया ?

रामसरूप : सब भगवान की दया है। पिछले साल ही बनकर तैयार हुआ है।

शर्माजी : कम-से-कम पचास हजार तो लग ही गए होंगे इसमें।

रामसरूप : अजी, राम का नाम लीजिए। पचास हजार में तो आजकल मुरगी का दड़बा भी नही बनता।

शर्माजी : मेरा अंदाजा ही था। बाकी कितना लगा है यह तो आपको ही मालूम होगा।

रामसरूप : शर्माजी, डेढ़ लाख खर्च हो गया।

शर्माजी : डेढ़ लाख ?

रामसरूप : जी, नकद डेढ़ लाख।

शर्माजी : इतना रुपया कमाने के लिए आपको बहुत मेहनत करनी पड़ी होगी।

रामसरूप : (हँसते हुए) एक क्या—दस जिंदगी भी इंसान मेहनत करे तो इतना रुपया नहीं कमा सकता।

शर्माजी : फिर आपने कैसे कमा लिया ?

रामसरूप : थोड़ी अक्ल लड़ाने की जरूरत है। कुछ हेर-फेर करना होता है—और क्या !

शर्माजी : (हँसते हुए) और इनकम टैक्स वालों की आंख में धूल झोंकनी पड़ती है।

रामसरूप : (हँसते हुए) आजकल कोरी धूल झोंकने से काम नही चलता। शर्माजी, सोने का बुरादा आंख मे झोंकना पड़ता है, नही तो भला यह लोग जीने देंगे !

शर्माजी : हां, यह तो चलता है।

रामसरूप : जी, हां। दुनिया का रिवाज है। ईमानदारी से दो वक्त रोटी भी नही खा सकता आजकल कोई। आप तो खुद बहुत बड़े व्यापारी है। आपको तो पता ही है सब कुछ।

शर्माजी : (आश्चर्य से) मैं ? बहुत बड़ा व्यापारी ?

रामसरूप : इसमें क्या शक है !

शर्माजी : जी, नहीं, आपको गलतफहमी हुई है। मैं तो एक मामूली…

रामसरूप : (हँसते हुए) जाने दीजिए इस बात को। मिठाई तो आपने खाई ही नहीं। तकल्लुफ मत करिए। लीजिए।

शर्माजी : तकल्लुफ की बात नहीं है। मैं घर से नाश्ता करके चला था।

रामसरूप . वह तो रास्ते में ही हजम हो गया था। लीजिए, यह रसगुल्ला खाइए।

शर्माजी : आप इतने प्रेम से खिला रहे हैं, तो मैं मना भी कैसे करूं!

रामसरूप : शर्माजी, बहुत कमाया, बहुत खर्च भी किया। काफी जोड़ा भी है। बस अब तो एक यही तमन्ना है कि बेटे की शादी धूमधाम से कर दूं।

शर्माजी : क्यों नहीं!

रामसरूप : बहू को इस घर में किसी बात की कमी नहीं रहेगी। चढ़ावे में इतने जेवर दूंगा कि देखने वालों की आंखें फटी रह जाएंगी—और १४ कैरट के नकली जेवर नहीं, असली २२ कैरट के होंगे।

शर्माजी : इनमें से कुछ जेवर देश की रक्षा के लिए दे दीजिए तो ज्यादा अच्छा रहेगा।

रामसरूप : (हँसते हुए) आपने वह कहावत सुनी होगी, शर्माजी—पहले घर में चिराग जलाओ, फिर मस्जिद में।

शर्माजी : यह तो बड़ी पुरानी कहावत है। आज देश हमसे कुछ और ही आशा करता है।

रामसरूप : छोड़िए देश की बातें। हम जैसे लोगों को ऐसी बातों से बदहज्मी हो जाती है। (हँसते हैं)

शर्माजी : (हँसते हुए) जवाब नहीं आपका। जेवर ही हैं या कुछ सोना भी जमा कर रखा है?

रामसरूप : क्यों नहीं! सब बेटे-बहू के ही काम आएगा। बुढ़ापे में यह तो सुनने को नहीं मिलेगा कि बाप ने इतना कमाया, पर हमें कोरा स्वयंसेवक ही बनाकर छोड़ गए।

शर्माजी : ठीक कहते हैं आप।

रामसरूप : और, शर्माजी, बेटे की बरात ऐसी धूमधाम से ले जाऊंगा कि क्या किसी राजकुमार की बरात होगी।

शर्माजी : जी, हां, हर बाप की यही इच्छा होती है।

रामसरूप : तो आप मुझसे सहमत हैं न ?

शर्माजी : भला, मुझे क्या एतराज हो सकता है।

रामसरूप : (हँसते हुए) एतराज की भी आपने एक ही कही ! बस यह समझ लीजिए, शर्माजी, कि आपकी इज्जत मेरी इज्जत है।

शर्माजी : (आश्चर्य से) मेरी इज्जत ? पर…

रामसरूप : कोई यह नहीं कह सकेगा कि बेटी को कुएं में धकेल दिया।

शर्माजी : कुएं में धकेलने का तो कोई सवाल ही नहीं है। लेकिन एक बात बताइए।

रामसरूप : शौक से पूछिए।

शर्माजी : आपने जो कुछ कहा है वह सच है न ?

रामसरूप : अरे साहब, मैं झूठ क्यों बोलूंगा और वह भी आपसे ? मैं आप से कोई बात छिपाना नहीं चाहता।

शर्माजी : यह तो आपने अच्छा ही किया। मेरे कुछ पूछे बगैर आपने सब कुछ बता दिया। जिस काम के लिए मैं यहां आया था, वह बहुत आसान हो गया।

रामसरूप : मेरी तरफ से बात पक्की ही समझिए।

शर्माजी : अच्छा, अब मैं चलता हूं।

रामसरूप : फिर मैं यही समझूं कि आप भी तैयार हैं ?

लालसिंह : (आकर) साहब !

रामसरूप : क्या है ?

लालसिंह : कोई साहब आपसे मिलने आए हैं।

रामसरूप : कौन है ? नाम पूछा ?

लालसिंह : जी, हां—शिवराम शर्मा।

रामसरूप : (आश्चर्य से) शिवराम शर्मा ? लेकिन…लेकिन—

लालसिंह : लखनऊ से आए हैं।

रामसरूप : (आश्चर्य से) लखनऊ से ?

लालसिंह : जी।

रामसरूप : तो···तो···आप कौन हैं ?

शर्माजी : मैं शर्मा हूं—इंदरजीत शर्मा।

रामसरूप : आप कहां से आए हैं ?

शर्माजी : मैं तो लोकल आदमी हूं। इनकम टैक्स इंस्पेक्टर हूं। खातिरदारी के लिए धन्यवाद। (जाता है।)

[रामसरूप सिर पकड़कर बैठ जाते हैं। लालसिंह हक्काबक्का देखता है।]

लेखाजोखा

पात्र परिचय :

रश्मि : स्वस्थ, सुन्दर, शरीफ, उमर २५ वर्ष, साधारण साड़ी ब्लाउज, घड़ी, चप्पल।

चन्द्रकला : तेजतर्रार गृहस्थिन, उमर ५० वर्ष, सीधे पल्ले की मामूली धोती, पूरी बाहों की कुरती।

(चंद्रकला की साधारण-सी बैठक)

रश्मि : (आवाज देकर) मांजी ! मांजी !

चंद्रकला : (झुंझलाती हुई दूर से) यह वक्त है तेरे आने का ? दोपहर उतरने को आई—अब चौका-बरतन करेगी ? मुझे नही काम करवाना…तू…(पास आकर) तुम कौन हो ?

रश्मि : (मुस्कराकर) मेरा नाम रश्मि है।

चंद्रकला : मैं समझी महरी है। उसकी आवाज बिलकुल तुम्हारी जैसी है। तुम भी चौका-बरतन करती हो ?

रश्मि : जी, नही, मैं तो कुछ और ही काम करती हूं। उसी काम के लिए मैं आपके पास आई थी।

चंद्रकला : मेरे पास और कोई काम नही है। पड़ोस के घर मे चली जाओ—वहां शायद कोई काम मिल जाए।

रश्मि : जी, नही, मैं किसी नौकरी के लिए नही आई हूं।

चंद्रकला : नौकरी के लिए नही आई हो ? फिर क्यों इस भरी दोपहरी मे मारी-मारी फिर रही हो ?

रश्मि : बात यह है कि मैं रिसर्च स्टूडेंट हूं।

चंद्रकला : (न समझते हुए) हिन्दी मे बोलो, जी, मेरी कुछ समझ में नही आया।

रश्मि : आप जरा इतमीनान से बैठिए। मैं सब बताती हूं।

चंद्रकला : लो बैठ गई। अब बोलो।

रश्मि : आप कहें तो मैं भी बैठ जाऊं ?

चंद्रकला : जब आई हो, तो बैठोगी भी। मेरे कहने से क्या होता है ?

रश्मि : धन्यवाद। बात यह है कि मैं एक किताब लिख रही हूं।

चंद्रकला : ओह, तो तुम लिखाड़ी हो।

रश्मि : (मुस्कराकर) जी।

चंद्रकला : तो क्या मेरे घर मे बैठकर किताब लिखोगी।

रश्मि : नहीं। पर उस किताब में दिल्ली की हर वर्ग की स्त्रियों के बारे में जानकारी होगी। उनके रहन-सहन, शिक्षा, घर-गृहस्थी आदि सभी के बारे में।

चंद्रकला : हूं···तो तुम मेरे घर का भेद लेने आई हो ?

रश्मि : नहीं, नहीं, आप गलत समझीं।

चंद्रकला : मैं खूब समझती हूं आजकल की छोकरियों को। क्यों, जी, तुम्हारा घर में मन नहीं लगता जो इधर-उधर घूमती फिरती हो ? तुम्हारा ब्याह हुआ कि नहीं अभी ?

रश्मि : अभी तो कोई इरादा नहीं है।

चंद्रकला : हूं···तभी तो। मैं कहूं, तुम घर बसाकर क्यों नहीं बैठती ?

रश्मि : देखिए, हम विषय से दूर जा रहे हैं।

चंद्रकला : दूर-पास मैं नहीं जानती। मुझे अच्छा नहीं लगता कुआरी लड़कियों का इस तरह घूमना-फिरना।

रश्मि : पूछने तो मैं आई थी, पर उलटे आप ही मुझसे सवाल करने लगीं। आपकी बड़ी मेहरबानी होगी अगर आप मेरे प्रश्नों का उत्तर दे दें।

चंद्रकला : अच्छा, जल्दी से पूछो क्या पूछना है ?

रश्मि : आप कुछ पढ़ी-लिखी हैं ?

चंद्रकला : हां।

रश्मि : कितना ?

चंद्रकला : धोबी के हिसाब तक।

. रश्मि : आपको किसी चीज का शौक है ?

रश्मि : (चंद्रकला को चुप देखकर) मेरा मतलब है संगीत, चित्रकला,

अभिनय वगैरा किसी बात का आपको शौक है ?

चंद्रकला : इन चोंचलों के लिए मेरे पास वक्त नहीं है।

रश्मि : आप सिनेमा देखने जाती है ?

चंद्रकला : एक बार बच्चों के बाप साइकिल पर पीछे बैठाकर ले गए थे। सो रास्ते में ही चालान हो गया। तब से नाम नहीं लिया सिनेमा जाने का।

रश्मि : आपकी शादी किस उमर में हुई थी ?

चंद्रकला : जिस उमर में लड़कियों की शादी होती है।

रश्मि . आपके बच्चे कितने हैं ?

चंद्रकला : ठहर जाओ—याद करलूं···(सोचते हुए) हां, पहला लल्लू, दूसरा गुल्लू, तीसरा मुन्नू···नहीं, नहीं, मुन्नू तो पांचवां है। तीसरी है कल्लो, चौथी गलफुल्लो, पांचवां मुन्नू। छठा··· पता नहीं छठा है या सातवां, पर है जरूर—एक का नाम रम्मो और दूसरे का शम्भू। इनके बाद दो और हैं।

रश्मि : आपकी शादी को कितने साल हुए ?

चंद्रकला : सात।

रश्मि : (आश्चर्य से) जी ? आपको ठीक याद है ?

चंद्रकला : मैं कोई नए फैशन की नहीं हूं जो शादी करके भूल जाऊं।

रश्मि : वह तो ठीक है, पर···सात साल में नौ बच्चे···यह समझ में नहीं आता।

चंद्रकला : (हँसकर) तुम तो पढ़ी-लिखी हो। खुद ही समझ लो।

रश्मि : इस समस्या को तो आप ही सुलझा सकती हैं।

चंद्रकला : अरे, इसमें मुश्किल ही क्या है ! सुनो, शादी के बाद मेरे छः बच्चे हुए, और शादी से पहले···

रश्मि : (बीच में) जी ?

चंद्रकला : हां, शादी से पहले मेरे पति के तीन बच्चे थे। उन्होंने दूसरी शादी की है।

रश्मि : ओह ! समझी।

चंद्रकला : शुक्र है !

रश्मि : आप दोनो का कभी झगड़ा तो नही होता ?

चंद्रकला : चार साल पहले हुआ था।

रश्मि : उसके बाद आज तक दोबारा नही हुआ ?

चंद्रकला : अजी, वही झगड़ा अब तक नही निबटा है, तुम दोबारा की बात कर रही हो।

रश्मि : आपके पति क्या करते है ?

चंद्रकला . झक मारते है।

रश्मि : (आश्चर्य से) झक ?

चंद्रकला : और क्या ! स्कूल मे मास्टरी करना और झक मारना एक ही बात है।

रश्मि : यह आप क्या कह रही है ? शिक्षक तो बच्चों का भविष्य बनाते है।

चंद्रकला : अजी, बच्चों की कमीज तो बना नही पाते, भविष्य बनाएंगे ! हु !

रश्मि : आपके पति को कोई शौक है ?

चंद्रकला : हा, औरतों की तरह चुगली खाने का।

रश्मि : वह कोई खेल भी खेलते हैं ?

चंद्रकला : एक बार स्कूल में किरकिट खेली थी।

रश्मि : अब नहीं खेलते ?

चंद्रकला : नही।

रश्मि : क्यो ?

चंद्रकला : एक लड़के का गेंद से सिर फट गया, सो छोड़ दी।

रश्मि : ओह, शायद इन्ही की बौलिंग से उस लड़के का सिर फट गया होगा। पछतावे के कारण इन्होने खेलना छोड़ दिया होगा।

चंद्रकला : नहीं, जी। डरके मारे छोड़ दिया—कही कल को इनका अपना सिर न फट जाय।

रश्मि : आप के पति का स्वभाव कैसा है ?

चंद्रकला : पंचमेल अचार जैसा।

रश्मि : आपके पति खाते क्या हैं ?

चंद्रकला : मेरा सिर।

रश्मि : देखिए, एक बड़ा नाजुक सा सवाल पूछ रही हूं। आशा है आप निस्संकोच उत्तर देंगी।

चंद्रकला : पूछो ! पूछो !

रश्मि : आपके पति आपको कितना चाहते हैं ?

चंद्रकला : जितनी मैं उनकी सेवा करूं उतना ही।

रश्मि : आपके पति अपने बच्चों को तो प्यार करते ही होंगे ?

चंद्रकला : एक शर्त पर।

रश्मि : (आश्चर्य) शर्त ? कैसी शर्त ?

चंद्रकला : अगर बच्चे अपनी आइसक्रीम में से इन्हें भी हिस्सा दें।

रश्मि : और आप तो जरूर ही बच्चों को प्यार करती होंगी ?

चंद्रकला : हां, अगर वे आइसक्रीम के लिए मुझसे पैसे न मांगें तो।

रश्मि : इस महंगाई के जमाने में आप घर का खर्च कैसे चलाती हैं ?

चंद्रकला : (सांस भरकर) भगवान के सहारे।

रश्मि : यह तो, खैर, है ही। फिर भी कुछ तो करती ही होंगी।

चंद्रकला : हां, कुछ किए बगैर काम भी तो नहीं चलता। मैं तो ऐसा करती हूं कि जिससे लेना होता है—ले लेती हूं, और जिसे देना होता है—नहीं देती।

रश्मि : घर के कामकाज के लिए आपके घर में नौकर हैं ?

चंद्रकला : जी, हां—तीन नौकर हैं।

रश्मि : (आश्चर्य से) तीन ?

चंद्रकला : हां। एक महरी है—सूखे चार रुपए लेती है। बाकी दो को सिर्फ रोटी, कपड़ा और क्वार्टर मिलता है।

रश्मि : तनखाह कुछ नहीं लेते ?

चंद्रकला : नहीं।

रश्मि : कहां से मिल गए आप को ऐसे नौकर ?

चंद्रकला : मिलते कहां से—घर के ही आदमी हैं।

रश्मि : घर के आदमी ?

चंद्रकला : हां, यानी एक मैं और एक मेरे वह।

रश्मि : *अपनी पडोसिनों से आपके कैसे संबंध हैं ?*

चंद्रकला : लीला की मां से तो मेरी बड़ी दोस्ती है, पर शीला की मां से दुश्मनी है।

रश्मि : क्यों ?

चद्रकला : लीला की मां मुझे आटा उधार दे देती है, और शीला की मा मुझ से चीनी उधार मांगती है।

रश्मि : और आपके पति के सबध कैसे हैं ?

चद्रकला : अजी, उन्हें तो मैं पडोसियों के घर जाने ही नही देती।

रश्मि : क्यों ?

चंद्रकला : अभी मेरे वह जवान जो हैं।

रश्मि : (आश्चर्य से) नौ बच्चों के बाप हो गए—अब भी आप उन्हें *जवान समझती हैं ?*

चंद्रकला : बल्कि कभी-कभी तो बिलकुल दूध पीते बच्चे लगते हैं।

रश्मि : सो कैसे ?

चद्रकला : बच्चों के साथ कभी-कभी दूध जो पी लेते है।

रश्मि : बस, एक प्रश्न और पूछना है। आप सबका स्वास्थ्य कैसा रहता है ?

चद्रकला : वैसे तो ठीक रहता है। पर मेहमानों के आने की खबर मिलते ही हम सब अस्पताल में भरती हो जाते हैं।
(रश्मि नमस्ते करके चली जाती है।)

आता है यादमुझे

पात्र परिचय :

मदन : स्मार्ट, आधुनिक, उमर ३५ वर्ष, कमीज, टाई, पतलून, जूते, घड़ी, सिगरेट।

सरला : मदन की पत्नी, सुन्दर, उमर ३० वर्ष, आधुनिक मेकअप, बॉबकट बाल, टोप और बेलबॉटम, ऊँची एड़ी के सैंडिल, लम्बे नाखून।

[मदन जल्दी में कमरे से बाहर जा रहा है कि पीछे से सरला उसे आवाज देती हुई आती है।]

सरला : (आते हुए) सुनो तो।

मदन : (रुकते हुए, भिन्नाकर) लो, आ गई मुसीबत।

सरला : (पास आकर, रुंआसी) मैं मुसीबत हूं ?

मदन : (टालते हुए) सोचकर बताऊंगा। इस वक्त मैं जरा जल्दी में हूं।

सरला : अब तो तुम हमेशा जल्दी मे ही रहते हो। अब तुम्हे वह दिन याद नही रहे ?

मदन : कौन से ?

सरला : (खोए-खोए स्वर मे) वही ! वही !

मदन : (भिन्ना कर) रिमांडर पर रिमांडर ईशु करे जा रही हो, लेकिन ओरिजनल लेटर का हवाला एक में भी नही देती।

सरला : (खोए-खोए स्वर मे) याद है वह दिन जब प्यासी आंखों से तुम घटों मुझे देखते रहे थे ?

मदन : हां।

सरला : तो अब क्या हो गया है ?

मदन : कुछ नही।

सरला : कुछ तो। बताओ न।

मदन : (उबासी लेते हुए) उस दिन मेरा और कोई अपाइंटमेंट नहीं था।

सरला : (उल्हाना) हां, जी, अब तो यह कहोगे ही।

मदन : (झुंझला कर) अब मुझे जाने भी दो न।

सरला : (याचना करते हुए) एक पल को ठहर जाओ न। (खोए-खोए स्वर में) याद है वह दिन जब दिन-रात तुम मेरे रूपजाल में खोए रहते थे ?

मदन : हां।

सरला : तो अब क्या हो गया है ?

मदन : कुछ नहीं।

सरला : कुछ तो। बताओ न।

मदन : (उबासी लेते हुए) अब खोए रहना मुमकिन नहीं है, क्योंकि पुलिस का गश्ती दस्ता गुमशुदा लोगों को चटपट ढूंढ लेता है।

सरला : (उल्हाना) हां, जी, अब तो यह कहोगे ही।

मदन : (झुंझला कर) अब मुझे जाने भी दो न।

सरला : (याचना) एक पल को ठहर जाओ न। (खोए-खोए स्वर में) याद है वह दिन जब मेरे बिना तुम्हें बहुत सूना-सूना लगता था ?

मदन : हां।

सरला : तो अब क्या हो गया है ?

मदन : कुछ नहीं।

सरला : कुछ तो। बताओ न।

मदन : (उबासी लेते हुए) अब अड़ोस-पड़ोस में नित नए पैदा होने वाले बच्चों की चेंचें-पेंपें से सूनी घड़ियां कट जाती हैं।

सरला : (उल्हाना) हां, जी, अब तो यह कहोगे ही।

मदन : (झुंझला कर) अब मुझे जाने भी दो न।

सरला : एक पल को ठहर जाओ न। (खोए-खोए स्वर में) याद है वह दिन जब तुम मेरे सामने उपहारों का ढेर लगा देते थे ?

मदन : हां।
सरला : तो अब क्या हो गया है ?
मदन : कुछ नहीं।
सरला : कुछ तो। बताओ न।
मदन : (उबासी लेते हुए) अब उपहार देने वाले को रिश्वत देने के जुर्म में पकड़े जाने का खतरा पैदा हो गया है।
सरला : (उलहाना) हां, जी, अब तो यह कहोगे ही।
मदन : (झुंझलाकर) अब मुझे जाने भी दो न।
सरला : (याचना) एक पल को ठहर जाओ न। (खोए-खोए स्वर में) याद है वह दिन जब तुम रोज मुझसे गाना सुनाने की फरमाइश किया करते थे ?
मदन : हां।
सरला : तो अब क्या हो गया है ?
मदन : कुछ नहीं।
सरला : कुछ तो। बताओ न।
मदन : (उबासी लेते हुए) अब विविध भारती से रोज फरमाइशी प्रोग्राम सुन लेता हूं।
सरला : (उलहाना) हां, जी, अब तो यह कहोगे ही।
मदन : (झुंझला कर) अब मुझे जाने भी दो न।
सरला : (याचना) एक पल को ठहर जाओ न। (खोए-खोए स्वर में) याद है वह दिन जब मैं तुम्हारी आंखों में बसी रहती थी ?
मदन : हां।
सरला : तो अब क्या हो गया है ?
मदन : कुछ नहीं।
सरला : कुछ तो। बताओ न।
मदन : (उबसी लेते हुए) अब बसने के लिए क्वार्टर जो मिल गया है।
सरला : (उलहाना) हां, जी, अब तो यह कहोगे ही।
मदन : (झुंझला कर) अब मुझे जाने भी दो न।

सरला : (याचना) एक पल को ठहर जाओ न। (खोए-खोए स्वर में) याद है वह दिन जब तुम घटों मेरे साथ बहकी-बहकी बातें किया करते थे ?

मदन : हां।

सरला : तो अब क्या हो गया है ?

मदन : कुछ नही।

सरला : कुछ तो। बताओ न।

मदन : (उबासी लेते हुए) अब प्रोहिबीशन का कानून सख्ती से लागू हो गया है।

सरला : (उल्हाना) हा, जी, अब तो यह कहोगे ही।

मदन : (झुझलाकर) अब मुझे जाने भी दो न।

सरला : (याचना) एक पल को ठहर जाओ न। (खोए-खोए स्वर में) याद है वह दिन जब मेरे बालो की उपमा सावन की घनघोर घटाओ से दिया करते थे ?

मदन : हा।

सरला : तो अब क्या हो गया है ?

मदन : कुछ नही।

सरला : कुछ तो। बताओ न।

मदन : (उबासी लेते हुए) अब सावन की घनघोर घटाओं के कारण दिल्ली मे बाढ जो आ गई है।

सरला : (उल्हाना) हा, जी, अब तो यह कहोगे ही।

मदन : (झुझला कर) अब मुझे जाने भी दो न।

सरला : (याचना) एक पल को ठहर जाओ न। (खोए-खोए स्वर मे) याद है वह दिन जब तुम कहा करते थे कि मेरा मुखडा चाद जैसा है ?

मदन : हां।

सरला : तो अब क्या हो गया है ?

मदन : कुछ नही।

सरला : कुछ तो। बताओ न।

मदन : (उबासी लेते हुए) अब मुझे डर लगता है कि कहीं तुम्हारे चांद जैसे मुखड़े पर कोई चंद्रयान या वेधशाला न उतर पड़े।

सरला : (उल्हाना) हां, जी, अब तो यह कहोगे ही।

मदन . (झुंझला कर) अब मुझे जाने भी दो न।

सरला . (याचना) एक पल को ठहर जाओ न। (खोए-खोए स्वर में) याद है वह दिन··· (रूठ कर, जल्दी से) जाओ, मैं तुमसे नहीं बोलती।

मदन : (इत्मीनान की सांस लेकर) शुक्र है भगवान का। तुम्हारे क्लास एग्जामिनेशन से राहत मिलने की सूरत तो नजर आई।

सरला : (रूठकर) मैं जा रही हूं। (जाने लगती है।)

मदन : (सरला की नकल करते हुए) एक पल को ठहर जाओ न। (खोए-खोए स्वर में) याद है वह दिन जब मैं तुम्हारी सावन की घनघोर घटाओं जैसी लटाओं की तारीफ में कजरी गाया करता था, तो तुम्हारे दिल में गुदगुदी होने लगती थी ?

सरला : हां।

मदन : तो अब क्या हो गया है ?

सरला : कुछ नहीं।

मदन : (व्यंग्य) हां, जी, अब गुदगुदी क्यों होगी। अब इन घनघोर लटाओं के लिए क्लिप और कर्लर की डिमांड जो होने लगी है।

सरला : (झुंझला कर) अब मुझे जाने भी दो न।

मदन : (नकल करते हुए) एक पल को ठहर जाओ न। (खोए-खोए स्वर में) याद है वह दिन जब मैं कहा करता था कि तुम्हारा मुखड़ा चांद जैसा है, तो तुम शरमा जाती थीं ?

सरला : हां।

मदन : तो अब क्या हो गया है ?

सरला : कुछ नहीं।

मदन : (व्यंग्य) हां, जी, अब क्यों शरमाने लगी। अब इस चांद जैसे मुखड़े के लिए क्रीम पाऊडर जो तलब फरमाने लगी हो।

सरला : (झुंझला कर) अब मुझे जाने भी दो न।

मदन : (नकल करते हुए) एक पल को ठहर जाओ न। (खोए-खोए स्वर में) याद है वह दिन जब अपनी आंखों में तुम्हें मेरी ही तस्वीर दिखाई देती थी ?

सरला : हां।

मदन : तो अब क्या हो गया है ?

सरला : कुछ नहीं।

मदन : (व्यंग्य) हां, जी, अब मेरी तस्वीर क्यों दिखाई देगी। अब तुम्हें अपनी आंखों में मेरा बटुआ जो दिखाई देता है।

सरला : मैं तो तुमसे परेशान आ गई।

मदन : (मुस्करा कर) दोनों तरफ है आग बराबर लगी हुई। मैं भी तुमसे परेशान आ गया हूं।

सरला : (सोचते हुए) सुनो।

मदन : सुनाओ।

सरला : एक बार फिर से वो दिन नहीं लौट सकते ?

मदन : नहीं।

सरला : क्यों ?

मदन : (उदास) बदकिस्मती से हमारी शादी जो हो चुकी है।

सरला : अब समझ में आया कि तुम इतने बदल क्यों गए हो !

मदन : जरा देर से समझी।

सरला : (मनाते हुए) अब मुझे माफ भी कर दो न।

मदन : (अकड़कर) न।

सरला : (मिठास से) मान भी जाओ, मेरे प्रीतम।

मदन : (चौंककर) क्या कहा ?

सरला : (और भी मिठास से) मेरे प्रीतम।

मदन : शादी के बाद ऐसे शब्द नहीं कहने चाहिए।

सरला : क्यों ?

मदन : सुनने वाले का हाज्मा खराब हो जाता है।

सरला : अब छोड़ो भी नखरे। सच कहती हूं आगे से मैं तुम्हारे बटुए

की तरफ देखूगी भी नही और न किसी चीज की फरमाइश करूंगी।

मदन : मैं खूब जानता हूं तुम औरतो को। दुनिया के हर मुल्क की हर औरत सिर्फ एक ही तरफ देखती है—पति के बटुए की तरफ और फरमाइश करना अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानती है।

सरला : तुम नही मानते तो मैं क्या कर सकती हूं। मैं तो कह रही थी कि जब मेरे मामाजी बीस हजार मेरे नाम कर गए है, तो मुझे तुम्हारे बटुए की तरफ देखने की क्या जरूरत है।

मदन : (चौंक कर) क्या कहा ? ज···ज···जरा फिर से कहना।

सरला : अब मेरे पास बीस हजार रुपये है।

मदन : सच ?

सरला : अब तुम्हें यकीन नही होता तो मैं क्या करूं।

मदन : (जल्दी से) नहीं, नही, यकीन क्यों नही होगा ! ऐसी बात का तो जरूर यकीन होगा। (खुशामद करते हुए) सुनो, मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई। अब मुझे माफ भी कर दो न।

सरला : (अकड़ कर) न।

मदन : (मिठास से) मान भी जाओ, मेरी रानी।

सरला : (चौककर) क्या कहा ?

मदन : (और भी मिठास से) मेरी रानी।

सरला : शादी के बाद ऐसे शब्द नही कहने चाहिए।

मदन : क्यो ?

सरला : सुनने वाले का हाज्मा खराब हो जाता है।

मदन : कोई बात नहीं। सी० एच० एस० की डिस्पेंसरी से गोलिया ला दूंगा।

सरला : अच्छा, एक शर्त पर माफ कर सकती हूं।

मदन : क्या ?

सरला : पहले की तरह तुम प्यासी आंखों से मुझे घंटों देखते रहोगे ?

मदन : हां।
सरला : तुम दिनरात मुझमें खोए रहोगे ?
मदन : हां।
सरला . मेरे बिना तुम्हें सूना-सूना लगेगा ?
मदन : हां।
सरला तुम मेरे सामने उपहारों का ढेर लगा दोगे ?
मदन : हां।
सरला : तुम मुझसे रोज गाना सुनाने की फरमाइश करोगे ?
मदन : हां।
सरला : मैं तुम्हारी आखों मे बसी रहूंगी ?
मदन : हां।
सरला : मेरे बालों की उपमा सावन की घनघोर घटाओं से दोगे ?
मदन : हां।
सरला : मेरा मुखड़ा चांद जैसा बताओगे ?
मदन : हां।
सरला : सोच-समझ कर हामी भरी है न ? बाद में बदल तो नहीं जाओगे ?
मदन : (शान के साथ) कभी नहीं। मेरे पुरखे एक राजपूत के पड़ोस में रहते थे। प्राण जाई, पर बचन न जाई।
सरला : अच्छा, और मैं कभी-कभी आदत से मजबूर होकर तुम्हारे बटुए की तरफ देख लिया करूं, तो तुम नाराज तो नहीं होगे ?
मदन : (शान के साथ) हां···नहीं, नहीं, कभी नहीं।
सरला : अच्छा, अब तुम्हें माफ किया।
मदन : हये, तुम कितनी अच्छी हो !
सरला : इसमें क्या शक है ? पर एक बात और कहनी थी।
मदन : कहो ! कहो ! एक क्या, बीस हजार बातें कहो। बीस हजार !
सरला : याद है मैंने तुमसे बीस हजार रुपये मिलने की बात कही थी ?

मदन : हां।
सरला : वो बीस हजार मुझे नहीं मिलेंगे। अब जाऊं न ?
मदन : हा…नहीं…एक पल को ठहर जाओ न !
[सरला के पीछे मदन भागता है।]

उपहार

पात्र-परिचय :

शंकर : किसी भी ऐसे महकमे में, ऐसा पदाधिकारी जो रिश्वत लेने की स्थिति में हो, स्मार्ट, उमर ३५ वर्ष, सूटबूट, टाई, जूते।

रंजना : शंकर की पत्नी, उमर ३० वर्ष, आधुनिक वेशभूषा, आभूषण, सुन्दर।

प्रभा : रंजना की छोटी बहन, चुलबुली, उमर २५ वर्ष, साधारण वेशभूषा।

किशोर : प्रभा का पति, शरीफ, ईमानदार, उमर ३० वर्ष, बुशशर्ट, पतलून, चप्पल।

फलुआ : शंकर का नौकर, उमर ४० वर्ष, कमीज, पाजामा, गांधी टोपी।

(शंकर का ड्राइंग रूम)

शंकर : (आते हुए, माडर्न स्टाइल में) रंजना !

रंजना : (आते हुए) आई।

शंकर : रंजना, तुम कहती हो कि तुमने बी० ए० पास किया है ?

रंजना : हां।

शंकर : अच्छा बताओ, 'अ' से क्या होता है ?

रंजना : वाह, जी ! यह तो हुआ नहीं कि दफ्तर से आने पर दो-चार मीठी-मीठी बातें करते। मेरी परीक्षा लेने लगे।

शंकर : अरे मेरी छमकछल्लो, यह परीक्षा भी बड़ी मीठी है। बताओ, 'अ' से क्या होता है ?

रंजना : 'अ' से अनार।

शंकर : ठीक। 'आ' से क्या होता है ?

रंजना : 'आ' से आदमी।

शंकर : 'इ' से ?

रंजना : इमली।

शंकर : और 'ई' से क्या होता है ?

रंजना : 'ई' से ईख।

शंकर : बिल्कुल ठीक।

रंजना : मैं कोई किंडर गार्टन में पढ़ती हूं जो तुम मुझसे बारहखड़ी पूछ रहे हो ?

शंकर : इस बारहखडी मे एक बहुत बड़ा राज छिपा हुआ है। हां, बताओ तो 'उ' मे क्या होता है ?

रंजना : 'उ' से उल्लू।

शंकर : देखा, गलती कर गईं न।

रंजना : नही, जी, 'उ' से उल्लू ही होता है।

शंकर : अब नही होता।

रंजना : उल्लू नही होता, तो क्या होता है ?

शंकर : अब 'उ' से होता है उपहार।

रंजना : (मुस्कराते हुए) तुम्हारी कसम, 'उ' से बड़ा उपजाऊ है तुम्हारा दिमाग।

शंकर : (मुस्कराते हुए) तुम्हारी कसम, तभी तो तुम्हारे लिए 'उ' से उपहार लाया हूं। यह देखो, क्या है।

रंजना : (प्रसन्न) हाय। कितनी सुन्दर साडी है ! कितने की है ?

शंकर : ज्यादा महगी नही। सिर्फ पांच सौ की है।

रंजना : पाच सौ कुछ होते ही नही ? क्यों बेकार इतने रुपये खर्च कर दिए !

शंकर : (जोश में) तुम्हारे लिए मैं क्या नही कर सकता, मेरी छमक-छल्लो !

रंजना : शी ! बराबर के कमरे में तुम्हारी छोटी साली है। धीरे बोलो।

शंकर : (फुसफुसाकर) तुम्हारे लिए मैं क्या नही कर सकता, मेरी छमकछल्लो ! कहो तो सारा कनाट प्लेस ही तुम्हें उपहार मे दे दू ?

रंजना : पहले एक बात बताओगे ?

शंकर : पूछो।

रंजना : सच-सच बताना।

शंकर : तुम्हारी कसम, झूठ तो बचपन में ही बोलना छोड़ दिया था।

रंजना : हमारी शादी को एक साल होने को आया। इस बीच तुम दो बार मेरा जन्मदिन मना चुके हो और न जाने कितनी चीजें मुझे लाकर दे चुके हो।

शंकर : (जोश में) तुम्हारी कसम, तुम चीज ही ऐसी हो···

रंजना : शी ! बराबर के कमरे में···

शंकर : (फुसफुसाकर) तुम्हारी कसम, तुम चीज हो ऐसी हो कि तुम्हें चीजें लाकर देने को जी चाहता है।

रंजना : तुम्हारी कसम, तुम्हारी तनख्वाह में से तो ये चीजें आ नहीं सकती।

शंकर : तुम्हारी कसम, सच कह रही हो।

रंजना : फिर कहा से लाते हो ?

शंकर : यह राज किसी को भी नही मालूम। आज तुम्हें बताता हूं।

रंजना : ऐसा कौन-सा राज है ?

शंकर : मेरी एक नानी थी।

रंजना : (आश्चर्य से) ताज्जुब है ! किसी को मालूम ही नहीं कि तुम्हारी नानी थी ?

शंकर : तुम्हारी कसम, तुम भी एकदम निखालिस भोली हो। मेरा मतलब था कि यह किसी को भी नही मालूम कि मेरी नानी जब मरी तो हजारों रुपये मेरे नाम छोड़ गई, क्योंकि उसका अपना कोई बेटा नही था।

रंजना : तुम्हारे पास इतना रुपया है तो नौकरी क्यों करते हो ?

शंकर : अरे, नौकरी तो मैं यों ही शौकिया करता हूं।

रंजना : मेरी मानो तो एक बात कहूं ?

शंकर : तुम्हारी कसम, तुम कहकर देखो।

रंजना : तुम्हारी कसम, एक शानदार कोठी क्यों नही बनवा लेते ?

शंकर : अजी, एक क्या—चार कोठियां बनवा दूगा।

रंजना : चार की क्या जरूरत है ?

शंकर : चार से कम में गुजारा भी क्या होगा !

रंजना : कहां बनवाओगे ?

शंकर : एक दिल्ली में, एक बम्बई में, एक कलकत्ते में और एक मद्रास में। मजे से चारों धामों की यात्रा करना।

रंजना : मैं ट्रेन से कहीं नही जाऊंगी। भीड़भाड़ में मेरी तबीयत

घबराती है।

शंकर : तो कार खरीद लेंगे। और बोलो ?

रंजना : एक बार सारी दुनिया देखने की इच्छा है।

शंकर : बस ? इतनी मामूली-सी बात के लिए दिल क्यों छोटा करती हो ! ऐसा करते हैं कि अपना एक प्राइवेट हवाई जहाज खरीद लेंगे। फिर जहा मरजी हो जा सकते हैं।

रंजना : (इठलाकर) तुम्हारी कसम, तुम बड़े वह हो।

शंकर : वह कौन ?

रंजना : बस वही।

शंकर : बताओ न, वह कौन ?

रंजना : बताऊ ?

शंकर : बताओ।

रंजना : शेखचिल्ली।

शंकर : ऍं ? तुम्हारी कसम, क्या कहा ?

रंजना : मैंने कहा, ये चार-चार कोठियां, कार, प्राइवेट हवाई जहाज मे दुनिया की सैर—सब नानी की कहानी की तरह झूठी बातें हैं।

शंकर : (खिसियाकर) तुम्हारी कसम, मुझ से झूठ मत बोला करो।

रंजना : तुम्हारी कसम, झूठ तो बचपन मे ही बोलना छोड़ दिया था।

शंकर : (रुंआसा) रजना, तुम नही जानती कि तुम क्या कह रही हो ! तुम्हारे इन शब्दों ने मेरे उबलते हुए अरमानो पर फ्रिज के पानी का काम किया है।

रंजना : (मुस्कराकर) तो इसमे मेरा क्या कसूर है ? फ्रिज भी तो तुमने ही 'उ' से उपहार में लाकर दिया था।

शंकर : (खिसियाते हुए) हां···तुम बड़ी नटखट हो।

रंजना : शी ! तुम्हारी छोटी साली आ रही है। (जाती है)

प्रभा : (आते हुए) जीजाजी, यहा तो कोई नही है। आप नटखट किसे कह रहे थे ?

शंकर : (बात बनाते हुए) किसी को नही···यो ही हवा मे बात कर

रहा था।

प्रभा : (मुस्कराकर) मैं समझ गई, जीजाजी, आप बात बदल रहे है।

शंकर : (खिसियाते हुए) बडी नटखट हो।

प्रभा : (शैतानी से) मैं जीजी से शिकायत कर दूंगी कि आप मुझे भी नटखट कहते है।

शकर : (सकपकाकर) गलती हो गई…मेरा मतलब था… तुम नटखट नही हो…अब तो नही कहोगी अपनी जीजी से ?

प्रभा : (हँसते हुए) आप इतना घबरा क्यो गए ? मैं तो मजाक कर रही थी।

शंकर : है ! मैं तो समझा ही नहीं।

किशोर : (आते हुए) क्या समझा रही हो अपने जीजाजी को ?

प्रभा : जीजाजी तो खुद समझदार हैं। समझाना तो तुम्हें है।

शकर : समझाओ ! समझाओ ! किशोर को समझाओ। मैं अभी मुंह धोकर आता हूं। (जाता है)

प्रभा : सुनो, तुम कहते हो कि तुमने एम० ए०, एल-एल० बी० पास किया है ?

किशोर : हा।

प्रभा : बताओ तो 'उ' से क्या होता है ?

किशोर : 'उ' से उल्लू।

प्रभा : देखा, गलती कर गए न।

किशोर : 'उ' से उल्लू ही होता है।

प्रभा : अब नही होता।

किशोर : उल्लू नहीं होता, तो क्या होता है ?

प्रभा : अब 'उ' से उपहार होता है।

किशोर : तो मैं क्या करूं ?

प्रभा : इतना भी नही समझते ? मेरे लिए 'उ' से उपहार लाओ न।

किशोर : बेकार की बातें मत करो।

प्रभा : (रूठकर) जाओ, मैं तुमसे नही बोलती।

किशोर : आजकल यह अच्छा सिस्टम चल गया है। म

न करो तो श्रीमतीजी फिल्मी हीरोइन की तरह चट से डायलाग मार देंगी—"जाओ मैं तुमसे नहीं बोलती!" श्रीमती प्रभारानी, मैं फिल्मी हीरो नहीं हूं, जो चांद-सितारे तोड़कर तुम्हारे कदमों में रख दूंगा।

प्रभा : चांद-सितारे छोड़ो, तुम मुझे पांच सौ वाली एक साड़ी ही ला दो।

किशोर : हां, साड़ी तो ला दूंगा।

प्रभा : (प्रसन्न) कब लाओगे?

किशोर : रिटायर होने पर जब प्रोवीडेंट फण्ड मिलेगा।

प्रभा : (रूठकर) जाओ, मैं तुमसे नहीं बोलती।

किशोर : फिर वही डायलाग मार दिया? श्रीमती प्रभारानी, मेरी समझ में नहीं आता कि आखिर आज तुम्हें क्या सनक सवार हुई है?

प्रभा : वही तो समझा रही हूं। तुम जरा समझने की कोशिश करो। जीजाजी ने जीजी को जेवरों के सेट, टी सेट, डिनर सेट, ड्रेसिंग टेबिल, फ्रिज, साड़ियां और न जाने क्या चीजें उपहार में लाकर दी हैं। अब तुम्हीं बताओ, यह सब देखकर क्या मुझे हुड़क नहीं उठेगी?

किशोर : दूसरों की नकल नहीं करनी चाहिए।

प्रभा : अच्छा, तो तुम मेरे लिए दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता और मद्रास में चार कोठियां ही बनवा दो।

किशोर : और कुछ?

प्रभा : इन चारों धामों की यात्रा करने के लिए एक कार भी खरीद लो। ट्रेन की भीडभाड में मेरी तबीयत घबराती है।

किशोर : फिक्र क्यों करती हो! अगले जन्म में अगर मेरी तुमसे फिर शादी हो गई, तो कोठियां भी बनवा दूंगा और कार भी खरीद दूंगा।

प्रभा : (रूठकर) जाओ, मैं तुमसे नहीं बोलती।

किशोर : फिर वही डायलाग मार दिया? श्रीमती प्रभारानी, आखिर

आज तुम इतना बहक क्यों रही हो ?

प्रभा : अच्छा, कम-से-कम मुझे दुनिया ही दिखा दो।

किशोर : बस ? इतनी-सी बात के लिए दिल छोटा क्यों कर रही हो ? ऐसा करते हैं कि एक एटलस खरीद लें। उसमें जितनी बार जी चाहे दुनिया देखती रहना।

प्रभा : (रूठकर) जाओ, मैं तुमसे नहीं बोलती।

किशोर : फिर वही डायलाग मार दिया ? श्रीमती प्रभारानी, इन सब बातो के लिए हजारो रुपये चाहिएं, जो न मेरे बाप के पास थे, न मेरे पास है।

प्रभा . तुम्हारी नानी नही है ?

किशोर : अरे, नानी नही होती तो मेरी मा कहा से आती ?

प्रभा : ओह, जरा बात को समझा तो करो। मेरा मतलब है, तुम्हारी कोई ऐसी नानी नही है जो तुम्हारे नाम हजारों रुपये छोड़कर मर जाए ?

किशोर : मेरी नानी तो कभी की मर गई, पर वह रुपये छोडकर नही, चार बेटे छोड़कर मरी है।

प्रभा : (रूठकर) जाओ, मैं तुमसे नही बोलती।

किशोर : फिर वही डायलाग मार दिया ?

प्रभा : डायलाग नही मारू तो क्या करू ? तुम मेरी कोई बात मानते ही नही। अच्छा, आज मेरा जन्मदिन ही मना लो।

किशोर : पर आज तो तुम्हारा जन्मदिन नही है।

प्रभा : तो क्या हुआ ? जीजाजी भी तो जीजी का जन्मदिन हाफ-इयरली मनाते है।

किशोर : बडी गलती करते है। एक दिन सिर पकड़कर रोयेंगे।

प्रभा : क्यों ?

किशोर : हाफ-इयरली जन्मदिन मनाने से तुम्हारी जीजी आधी उमर में ही बूढी हो जायेंगी।

प्रभा : तुम्हें क्यों चिंता हो रही है ? वह तुम्हारी बीबी है या जीजाजी की ?

किशोर : तुमसे तो बात करना भी गुनाह है ।

प्रभा : तो मत करो। पर आज मेरा जन्मदिन मनाना ही पड़ेगा और मुझे 'उ' से उपहार लाकर देना पड़ेगा। समझे ?

किशोर : समझ तो बहुत देर से रहा हू। पर यह तो बताओ, उपहार लाऊ कहा से ?

प्रभा : (भोलेपन से) कनाट प्लेस से।

किशोर : सदके जाऊ इस भोलेपन के ! अक्ल के मामले मे तो बच्चों को भी मात करती हो। तभी तो तुम्हारे पिताजी अब तक तुम्हे बेबी कहते है।

प्रभा . (रूठकर) जाओ, मैं तुमसे नही बोलती।

किशोर : (झुंझला कर) मत बोलो।

प्रभा : (रुआसी) मेरी तो किस्मत ही फूट गई जो तुम्हारे पल्ले बंधी। जीजाजी को देखो मैट्रिक तक पढ़े है, पर घर मे किसी चीज की कमी नही है जीजी को। और एक तुम हो निखट्टू ! एम० ए०, एल-एल० बी० पढकर भी घास खोदी। कभी भूलकर भी नही कहा कि तुम्हारे लिए मैं क्या नही कर सकता, मेरी छमकछल्लो ! और न कभी मेरे लिए कुछ लेकर आए।

किशोर : यह तुम गलत कह रही हो। रोज ही मैं तुम्हारे लिए कुछ न कुछ लेकर आता हूं।

प्रभा : (रुआंसी) क्यों जले पर नमक छिडकते हो। क्या लाकर दिया है ?

किशोर : *आलू, बैंगन, लौकी, कद्दू और***···

प्रभा : जाओ, मैं तुमसे नही बोलती। (जाती है)

किशोर : (स्वत, चिढ़कर) जाओ, मैं तुमसे नही बोलती ! साड़ू के घर आकर साड़ी के चक्कर में फंस गए। (सोचते हुए) यह सिस्टम खतम करना पड़ेगा। नहीं तो मैसर्स साड़, साडी एड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड मेरा घनचक्कर बना देगी। पर क्या किया जाए ? (सोचता है)

कलुआ : (प्रवेश करते हुए) साबजी, चाय तैयार है।

किशोर : (स्वत) हां, इस मुरगे को फंसाया जाए।

कलुआ : साबजी, चाय मेज पर लग गई।

किशोर : अच्छा। कलुआ, जरा एक काम तो कर। जल्दी से दौड़कर सिर दर्द की गोली तो ले आ।

कलुआ : अच्छा, जी, अभी लाया जी। (जाता है)

किशोर : (जोर-जोर से कराहते हुए) हाय! ओफ! हाय!

[रंजना, शंकर और प्रभा का प्रवेश]

रंजना : क्या हुआ?

किशोर : (कराहते हुए) हाय!

शंकर : अरे, कुछ बताओ भी तो।

किशोर : हाय! सिर में बड़े जोर का दर्द हो रहा है।

प्रभा : अभी तो अच्छा खासा छोड़ कर गई थी।

किशोर : शायद बाहर की ताजी हवा लगने से ठीक हो जाए। मैं अभी आया। (जाता है)

रंजना : (शंकर से) तुम भी साथ चले जाओ न।

शंकर : हां, मुझे जाना चाहिए।

प्रभा : आप क्या करेंगे! यह कोई बच्चा थोड़े ही है जो अकेले रास्ता भूल जायेंगे।

[कलुआ का घबराए हुए प्रवेश। वह कुछ कहना चाहता है, पर घिग्घी बंध जाती है।]

शंकर : क्या हुआ, कलुआ?…बोलता क्यों नहीं?

कलुवा : म…म…प…प…

शंकर : अबे, सरगम क्यों अलाप रहा है? क्या भूत दिखाई दे गया?

कलुआ : न…न…नहीं, साबजी…वह…पु…पु…पुलिस…

शंकर : क्या?

कलुआ : बताता हूं…पुलिस वालों ने मुझसे पूछा…शंकरलाल का मकान जानते हो?

शंकर . हैं ! मेरा पता क्यों पूछ रहे थे ?

कलुआ : पता नहीं, साबजी। मैंने कह दिया, यहां कोई शंकरलाल नहीं रहता।

शंकर : अच्छा किया।

कलुआ : पर, साबजी, पुलिस वालों को मेरी बात का यकीन नहीं हुआ। कहने लगे—वह जरूर यहीं कहीं रहते हैं। हम अपने आप पता लगा लेंगे।

शंकर : (घबराकर) मर गए।

कलुआ : हां, साबजी।

किशोर : (दूर से, आवाज बदलकर) दरवाजा खोलो।

शंकर : (घबराकर) आ गए।

[कलुआ डर के मारे चीखकर भाग जाता है]

शंकर : (घबरा कर) अब क्या होगा? (प्रार्थना करते हुए) हे भगवान! अपने दास की रक्षा करो। जल्दी से कोई दूत-वूत भेजने का आर्डर दे दो···या हो सके तो तुम्ही इधर का आफिशियल टूअर मार दो। प्लीज !

प्रभा : मैं देखती हू, कौन आया है। (जाती है)

शंकर : नही, नही, दरवाजा मत खोलना।

रंजना : आप इतना घबरा क्यो रहे है ?

शंकर : और क्या फिल्मी गाना गाऊ ?

रंजना : तुम ने चोरी तो नही की है जो पुलिस से इतना डर रहे हो। नहीं। पर पुलिस वाले मुझे जरूर पकड़कर ले जायेंगे।

[किशोर और प्रभा का प्रवेश]

किशोर : क्या बात है, भाई साहब ?

शंकर : किशोर, मुझे बचाओ।

प्रभा : जीजाजी को पुलिस का डर बैठ गया है। अभी आपने आवाज दी तो समझे पुलिस वाले आ गए।

किशोर : गली मे दो पुलिस वालों को घूमते हुए मैंने भी देखा था।

शंकर : (घबराकर) देखा ! बस अब वो आते ही होगे मुझे पकड़ने।

रंजना : लेकिन क्यों ?

शंकर : क्योंकि मेरी नानी अभी नहीं मरी।

रंजना : (व्यंग्य से) ओह तो यह बात है ! तुम्हारी कसम, झूठ तो तुमने बचपन में ही बोलना छोड़ दिया था। (जाती है)

शंकर : (गिड़गिड़ाकर) तुम्हारी कसम, मैं कान पकड़ता हूं, आगे से कभी रिश्वत नहीं लूंगा। ये सब चीजें अनाथालय को दे दूंगा। रंजना, सुनो तो।

किशोर . भाई साहब, आपने ऐसा काम किया है कि हम सबकी गरदन शरम से झुक गई है।

रंजना : (प्रवेश करते हुए, व्यंग्य से) इन्होंने तो वह काम किया है कि इनाम देने को जी चाहता है।

शंकर : (रुआंसा) मैं सच कहता हूं, रंजना···

रंजना : (बीच में) पहले बताओ, 'उ' से क्या होता है ?

शंकर : (रुआंसा) 'उ' से उल्लू।

रंजना : देखा, गलती कर गए न।

शंकर : (रुआंसा) नहीं, जी, 'उ' से उल्लू ही होता है।

रंजना : अब नहीं होता।

शंकर : (रुआंसा) उल्लू नहीं होता तो क्या होता है ?

रंजना : अब 'उ' से होता है उपहार। अब तक तुमने मुझे उपहार दिए हैं, आज मैं भी तुम्हें उपहार देना चाहती हूं।

शंकर : (रुआंसा) क्या उपहार देना चाहती हो ?

रंजना : इस लिफाफे में है। मेरे जाने के बाद खोल कर देखना। लो। (जाती है)

शंकर : न जाने क्या है इस लिफाफे में !

किशोर : लिफाफा खोलकर तो देखिए।

शंकर : अच्छा···इसमें तो एक छोटा-सा खत है।

किशोर : खत ? पढ़िए तो क्या लिखा है ?

शंकर : (पढ़ते हुए) मैं एक रिश्वतखोर पति के साथ नहीं रहना चाहती। मैं हमेशा के लिए इस घर से जा रही हूं। (रोते

हुए) हाय, अब मैं क्या करूं ?

किशोर : भाई साहब, इस तरह रोना आपको शोभा नहीं देता। आंसू पोंछ डालिए।

शंकर : नहीं पोंछता, नहीं पोंछता।

किशोर : अच्छा, मैं कोशिश करता हूं जीजी को मनाकर वापस लाने की।

शंकर : (रोते हुए) तो जाओ न—यहां खड़े-खड़े मेरा मुंह क्या देख रहे हो ?

किशोर : जाता हूं। पर एक बात बता दूं।

शंकर : (रोते हुए) क्या ?

किशोर : पुलिस आपको पकड़ने नहीं आएगी।

शंकर : क्यों ?

किशोर : क्योंकि यह सब नाटक मैंने रचा था।

शंकर : (आश्चर्य से) ऐं ? पर क्यों ?

किशोर : ताकि आप सीधे रास्ते पर आ जाएं और मेरी जान छूटे।

शंकर : किससे ?

किशोर : आपकी छोटी साली से। क्यों, श्रीमती प्रभारानी, तुम्हें 'उ' से उपहार चाहिए ?

प्रभा : (मुस्कराकर, किशोर की तरफ इशारा करते हुए), नहीं, मुझे 'उ' से उल्लू चाहिए।

[तीनों हंसते हैं। रंजना वापस आती है।]

मेहमानों की खातिर

पात्र-परिचय :

राजेश : सरकारी क्लर्क, उमर ३० वर्ष, मैली कमीज और पाजामा।

रतनमाला : राजेश की पत्नी, तेज मिजाज, सादी धोती ब्लाउज, चूड़ियां, बुन्दे, चप्पल।

डाक्टर : उमर ५० वर्ष, कोट, पतलून, टाई, जूते।

भैया : रतनमाला का बड़ा भाई, उमर ४० वर्ष, हिप्पी बाल, सिगार, शरीर से चिमटे कोट पतलून।

भाभी : रतनमाला की भाभी, उमर ३५ वर्ष, रेशमी साड़ी, आधुनिक मेकअप।

(राजेश का बेडरूम)

राजेश : (जागकर जंभाई लेते हुए, आवाज देकर) आ···आ··· रतनमाला ! ·· क्या बज गया ?

रतनमाला : (आते हुए) सात बज गए है।

राजेश : (जंभाई लेते हुए) आ···आ··· रात के या सुबह के ?

रतनमाला : (नाराज) तुम्हारा तो दिमाग खराब हो गया है।

राजेश : तुम्हारी मेहरबानी है। पर यह तो बता दो रात है या सुबह ?

रतनमाला : तुम्हें सूरज दिखाई नहीं दे रहा है, जो मुझसे पूछ रहे हो ?

राजेश : तुम्ही ने तो कहा था कि हर बात तुमसे पूछा करूं।

रतनमाला : अच्छा, अब उठोगे भी या पड़े-पड़े चारपाई तोड़ते रहोगे ?

राजेश : (स्वत:) हे भगवान ! बीवी क्या है—हैडमास्टरनी है।

रतनमाला : (डांटकर) क्या कहा ?

राजेश : तुम्हारी स्तुति कर रहा था।

रतनमाला : अच्छा, अब उठकर तैयार हो जाओ।

राजेश : उठना ही पड़ेगा, नहीं तो दफ्तर को देर हो जाएगी।

रतनमाला : दफ्तर की आज छुट्टी है।

राजेश : (आश्चर्य से) छुट्टी ? कमाल है ! जमाने की रफ्तार इतनी तेज हो गई है ? इतवार सातवें दिन की बजाए तीसरे दिन आने लगा ?

रतनमाला : आज इतवार नहीं, बुद्धवार है।

राजेश . तो क्या सरकारी दफ्तरों की बुद्धवार की भी छुट्टी होने लगी ?

रतनमाला : हां।

राजेश . किस खुशी मे ?

रतनमाला . सुनते तो हो नही। मेरे भैया और भाभी तीन साल बाद इंग्लैंड से वापस आ रहे हैं आज। यह देखो चिट्ठी आई है।

राजेश : तो क्या उनकी वापसी राष्ट्रीय पर्व के रूप मे मनाने के लिए सरकार ने आज की छुट्टी कर दी है?

रतनमाला : ओफ्फो ! तुम्हारी समझ में कभी कुछ नही आएगा।

राजेश : तुम्हारी बातें क्या हैं—ज्योमेट्री की प्रोबलम्म है !

रतनमाला . (नाराज) अच्छा मैं ज्योमेट्री की प्रोबलम हू ?

राजेश : गलती हो गई। (प्रशंसा करते हुए) तुम तो कालिदास की अभिज्ञान शाकुंतलम् हो।

रतनमाला : (बनकर) अच्छा खुशामद छोड़ो···

राजेश : (बीच मे) खुशामद नही, स्तुति कहो।

रतनमाला : (डांटकर) तुमसे हजार बार कहा है कि बीच मे मत बोला करो।

राजेश : वैसे तुम बोलने ही कब देती हो—कभी-कभार बीच में बोलने का मौका मिल जाता है।

रतनमाला : हां तो सुनो—तुम्हें दफ्तर से तीन दिन की छुट्टी लेनी है।

राजेश : क्यों ?

रतनमाला : कहा तो मेरे भैया और भाभी आ रहे हैं।

राजेश : उनके आने और मेरे छुट्टी लेने में क्या रिश्ता है ?

रतनमाला : वे पहली बार दिल्ली आ रहे हैं।

राजेश : अरे, तो इस खुशी मे उनका जलूस निकालो, पब्लिक जलसा कराओ। मुझे दफ्तर से छुट्टी लेने की क्या जरूरत है ?

रतनमाला : छुट्टी नही लोगे, तो उन्हें दिल्ली की ऐतिहासिक इमारतें कौन दिखाएगा ?

राजेश : देखो, रतनमाला, मैं गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया का क्लास थ्री

आफिसर हूं, गाइड नहीं।

रतनमाला : (बनावटी खुशामद से) अजी, मैं तो तुम्हें और भी ऊंची क्लास का अफसर समझती हूं।

राजेश : (प्रसन्न) सच ? कौन-सी क्लास का ?

रतनमाला : (शान से) क्लास फोर।

राजेश : (उतरी आवाज में) फूट गई किस्मत।

रतनमाला : किस्मत तो मेरी फूटी है जो ऐसे थर्ड क्लास अफसर से शादी हो गई, जो तरक्की करके फोर्थ क्लास अफसर नहीं बनना चाहता।

राजेश : (व्यंग से) अपने पिताजी से सिफारिश करवा दो—जल्दी बन जाऊंगा।

रतनमाला : (भोलेपन से) मजाक छोड़ो, तुम मेहनत से काम करो, तो अगले ही महीने क्लास फोर अफसर बन जाओगे।

राजेश : ओफ्फो ! कान खोलकर सुन लो, मैं आजकल छुट्टी नहीं ले सकता।

रतनमाला : (डांटकर) लोगे कैसे नहीं ?

राजेश : तुम कुछ समझती तो हो नहीं। आजकल दफ्तर मे बहुत काम है। मुझे एक बहुत जरूरी फाइल पर नोटिंग करके आगे भेजना है।

रतनमाला : तीन दिन फाइल पड़ी रहेगी, तो कौन-सा पहाड़ टूट पड़ेगा ?

राजेश : अरे, गजब हो जाएगा। मैंने फाइल आगे नहीं भेजी तो सैक्शन यानी कि गवर्नमेंट का सारा काम ठप हो जाएगा।

रतनमाला : हो जाने दो।

राजेश : आहा हा। कह दिया—हो जाने दो। मालूम है इसका नतीजा क्या होगा ?

रतनमाला : क्या ?

राजेश : यानी कि श्री राजेशकुमार, सुपुत्र स्वर्गीय श्री मदनलाल, साकिन विनयनगर, नई दिल्ली-३, नौकरी से निकाल दिया जाएगा और दस से पांच बजे के बीच रामलीला मैदान में गिल्ली डंडा खेलता नजर आएगा।

रतनमाला : कोई तरकीब तो निकालनी ही पड़ेगी।

राजेश : क्या तरकीब निकालूं ? यह भी तो नहीं कि तुम अपना रतन-माला नाम सार्थक करो।

रतनमाला : उससे क्या होता ?

राजेश : यही होता कि रतनों की माला में से वक्त जरूरत एक-एक रतन तोड़ता रहता और आराम से जिंदगी कटती रहती। फिर नौकरी करने की भी कोई जरूरत नहीं रहती। इससे तो अच्छा है तुम अपना नाम ही बदल दो।

रतनमाला : क्या नाम रखूं ?

राजेश : गुलाबो।

रतनमाला : चलो, मेरा नाम बदल दो, पर तीन दिन की छुट्टी जरूर ले लो।

राजेश : छुट्टी मंजूर नहीं होगी।

रतनमाला : (एकदम प्रसन्न) अरे, हां, एक तरकीब सूझी है।

राजेश : क्या ?

रतनमाला : तुम बीमार पड जाओ न।

राजेश : बीमार पड़ें मेरे दुश्मन।

रतनमाला : अरे, सचमुच बीमार पड़ने को थोड़े ही कह रही हूं।

राजेश : फिर ?

रतनमाला : बीमारी का बहाना बना दो। और अर्जी के साथ डाक्टरी सर्टिफिकेट भेज देना।

राजेश : झूठा सर्टिफिकेट कौन डाक्टर देगा ?

रतनमाला : वह तुम मुझ पर छोड़ दो। मैं अभी डाक्टर के पास जाकर कहती हूं कि तुम बीमार हो।

राजेश : लेकिन बीमारी क्या बताओगी ?

रतनमाला : कह दूंगी लेटेस्ट बीमारी है। तुम चिंता मत करो।

राजेश : चिंता कैसे न करूं ? लेटेस्ट बीमारी है मुझे—कोई मजाक नहीं है।

रतनमाला : अच्छा, मैं अभी डाक्टर के पास होकर आई। (जाने लगती है)

राजेश : (आवाज देकर बनावटी दुख से) सुनो तो···देखो, मुझे लेटेस्ट बीमारी है···तुम्हारे वापस आने तक क्या पता मैं चल ही बसूं···मेरे बाद तुम अपना ध्यान रखना। और, हां, अपने भैया और भाभी को मेरी नमस्ते कहना···और मेरी···

रतनमाला : शाबास! इसी तरह बीमार होने का नाटक करोगे तो डाक्टर जरूर सर्टीफिकेट दे देगा। मैं अभी आई।

राजेश : अरे, कहीं यह नाटक असल में न बदल जाए। (सांस भरकर) लेटेस्ट बीमारी है!

रतनमाला : अच्छा, तुम बैठो, मैं अभी आई।

राजेश : अरे, कमजोरी बहुत बढ़ गई है। बैठा नहीं जाता।

रतनमाला : तो लेट जाओ।

राजेश : (कराहते हुए) अच्छा, लेट जाता हूं। लेटेस्ट बीमारी है।

[दवाखाना]

रतनमाला : डाक्टर साहब, मेरे पति की तबीयत बहुत खराब है।

डाक्टर : क्या हुआ? बुखार है?

रतनमाला : बुखार तो बहुत पुरानी बीमारी है। उन्हें तो लेटेस्ट बीमारी हो गई है।

डाक्टर : (आश्चर्य से) लेटेस्ट बीमारी?

रतनमाला : जी।

डाक्टर : आपको कैसे मालूम?

रतनमाला : वाह, जब मुझे लेटेस्ट फैशन की साड़ी, हरेक हीरो की लेटेस्ट फिल्म के बारे में मालूम रहता है, तो लेटेस्ट बीमारी के बारे में मालूम नहीं होगा?

डाक्टर : उस बीमारी का नाम क्या है?

रतनमाला : (हिचकते हुए) बीमारी का नाम रखना डाक्टरों का काम है।

डाक्टर : अच्छा, इस लेटेस्ट बीमारी की अलामतें क्या हैं?

रतनमाला : डाक्टर साहब, यह सब कभी फुरसत से बताऊंगी। इस समय तो आप जल्दी से दवा दे दीजिए।

रतनमाला : डाक्टर साहब, मैंने कहा था न कि लेटेस्ट बीमारी है।

डाक्टर : (गम्भीर) और क्या मालूम होता है?

राजेश : कभी-कभी लगता है कि मेरी बाईं आंख दाईं हो गई है, और दाईं आंख बाईं हो गई है।

रतनमाला : डाक्टर साहब, मैंने कहा था न कि लेटेस्ट बीमारी है।

डाक्टर : (गम्भीर) इससे आपको कोई परेशानी तो नहीं होती?

राजेश : होती है, डाक्टर साहब, बहुत परेशानी होती है।

डाक्टर : क्या?

राजेश : बाईं तरफ रखी चीजें दाईं तरफ हो जाती हैं और दाईं तरफ रखी चीजें बाईं तरफ।

रतनमाला : डाक्टर साहब, मैं तो इनकी इस लेटेस्ट बीमारी से बहुत परेशान हो गई हूं। कभी कहते हैं—बाईं से दाईं तरफ क्यों आ गई, कभी कहते हैं दाईं से बाईं तरफ क्यों आ गई?

डाक्टर : (गम्भीर) और कोई बात?

राजेश : बस, डाक्टर साहब, फिलहाल तो यही तीन तकलीफें हैं—तोप का धमाका, मिनिस्ट्री की फाइल नम्बर एफ० एम० आवलीक टू डैश बी विदिन प्रैक्टिस सैविटी टू और दाईं बाईं तरफ।

डाक्टर : (गम्भीर) हूं।

रतनमाला : डाक्टर साहब, यह ठीक तो हो जाएंगे न?

डाक्टर : (गम्भीर) इन्हें कम से कम एक महीने की छुट्टी लेनी पड़ेगी।

रतनमाला : (खुशी दबाते हुए) सच, डाक्टर साहब, एक महीने की छुट्टी?

डाक्टर : (गम्भीर) जी, एक महीने तक इन्हें अस्पताल में अंडर आबजर्वेशन रखा जाएगा।

राजेश : (परेशान) अस्पताल में?

डाक्टर : (गम्भीर) जी। ताकि जांच की जा सके कि यह लेटेस्ट बीमारी है क्या?

राजेश : (एकदम) नहीं, नहीं, डाक्टर साहब। मुझे ऐसी कोई बीमारी नहीं है।

डाक्टर : अभी तो आप कह रहे थे कि सीधे पैर के टखने में ऐसा लगता है कि कोई दनादन तोप दाग रहा है और उसका धमाका सिर में होता है।

राजेश : नहीं, डाक्टर साहब, तोप सिर में दगती है और धमाका सीधे पैर के टखने में होता है···नहीं, नहीं···तोप के गोले की बारूद सील गई है।

डाक्टर : और मिनिस्ट्री की फाइल ?

राजेश : वह फाइल मेरे पास कभी आई ही नहीं। रास्ते में ही गुम हो गई होगी।

डाक्टर : और दाईं आंख बाईं तरफ और बाईं आंख दाईं तरफ ?

राजेश : आंखों के ट्रांसफर आर्डर कैंसिल हो गए।

डाक्टर : (गम्भीर) हूं। मुझे तो कुछ और ही मामला लगता है।

रतनमाला : क्या ?

डाक्टर : (गम्भीर) कभी तो यह एकदम चुप हो जाते हैं, कभी उल्टी-सीधी बीमारियां बताते हैं, फिर बात बदल जाते हैं। लगता है कि इन्हें अपने विचारों पर काबू नहीं है। यह नहीं जानते कि क्या कह रहे हैं।

राजेश : (भिन्नाकर) ओफ ! डाक्टर के बच्चे, तू मेरा दिमाग खराब करके छोड़ेगा।

डाक्टर : (गम्भीर) मुझे तो इनके दिमाग में पागलपन के आसार नजर आ रहे हैं।

राजेश : (बिगड़कर) पागल होगा तू ! तेरा बाप ! तेरा चाचा ! तेरा ताऊ ! तेरा सारा खानदान ! (आगे बढ़कर) मैं तेरा गला घोंट दूंगा। (गला घोंटने लगता है)

डाक्टर : (छुड़ाते हुए) है ! है ! यह क्या करते हैं ! छोड़िए मेरा गला···छोड़िए···(गला छुड़ाकर) आपने तो मुझे मार ही डाला था···(हांफते हुए) यह तो वायलेंट हो गए हैं।

[रतनमाला के भाई और भाभी का प्रवेश]

रतनमाला : अरे, भैया भाभी आ गए।

भैया : रतनमाला, हम तो हवाई अड्डे पर तुम्हारा इन्तजार कर रहे थे।

रतनमाला : हम जरूर आते, पर यहां तो…

भैया : क्या मामला है ? राजेश भाई हाथापाई क्यों कर रहे हैं ?

डाक्टर . मिस्टर, आप बड़े मौके से आए है। मेरी थोड़ी मदद कीजिए। मिस्टर राजेश के दिमाग मे खराबी आ गई है और यह वायलेंट भी हो गए हैं।

भैया : ओह, माई गाड !

डाक्टर . आप जरा इन्हें पकड़कर रखिए। मैं अभी एम्बुलेंस के लिए अस्पताल फोन करके आता हूं। (डाक्टर जाता है)

भाभी (पति से, धीरे से) देखिए, जरा अपने गले को बचाकर रखिएगा।

भैया : डोंट वरी। रतनमाला, राजेश भाई को एकाएक कैसे पागलपन का दौरा पड़ गया ?

रतनमाला : भैया, बात यह है कि…

राजेश : (बीच मे ही, चीखकर) कौन कहता है कि मैं पागल हूं !

भैया : (समझाते हुए) कोई बात नहीं, राजेश भाई। सब ठीक हो जाएगा।

डाक्टर : (प्रवेश करते हुए) एम्बूलेंस आ गई है। चलिए, मिस्टर राजेश।

राजेश : (चीखकर) मैं नहीं जाऊंगा। मैं कहता हूं, तुम सब पागल हो।

भैया : कोई बात नहीं। इस वक्त आप ही चलिए।

रतनमाला : (परेशान) भैया, इन्हें कुछ नहीं हुआ है। दरअसल बात यह है…

भैया : (बीच में ही) तुम घबराओ मत, रतनमाला, पागलखाने में राजेश भाई की ठीक से जांच हो जाएगी।

रतनमाला : (बीच मे ही) लेकिन, भैया, मेरी बात तो सुनो…

भैया : (बीच में ही) रतनमाला, राजेश भैया का घर में रहना

ठीक नही। वायलेंट हो गए, तो तुम्हारी मुसीबत होगी। इन्हें पागलखाने मे भरती करवाना बहुत जरूरी है।

डाक्टर : जल्दी कीजिए, साहब। फिर वायलेंट हो गए, तो सभालना मुश्किल हो जाएगा।

भैया : हा, हा, ठीक है।

राजेश : (चीखकर) मैं नही जाऊंगा···मैं···मैं···

भैया : डाक्टर, आप इनका एक हाथ पकड़िए, दूसरा मैं। इन्हें जबरदस्ती पागलखाने से चलना पडेगा।

[राजेश शोर मचाता रहता है और भैया व डाक्टर राजेश को घसीटते हुए बाहर ले जाते हैं]

दो सच्चे दोस्त

पात्र-परिचय :

- माथुर : किसी भी ऊंचे पद पर, उमर ४५ वर्ष, कमीज, टाई, पैंट, जूते, पाइप।
- रानी : माथुर की पत्नी, उमर ४० वर्ष, सुन्दर, सलोकेदार वेशभूषा, थोड़ा मेकअप।
- किशोर . माथुर का बेटा, उमर ८ वर्ष, नटखट. बुशशर्ट, हाफपैंट, मोजे, जूते।
- खन्ना : किसी भी ऊंचे ओहदे पर, उमर ४५ वर्ष, सूटबूट, जूते, सिगरेट।
- लता : खन्ना की पत्नी, उमर ४० वर्ष, सुन्दर, रेशमी साड़ी, अच्छा खासा मेकअप, आभूषण।
- रानो : खन्ना की बेटी, उमर ७ वर्ष, नटखट, रंगीन फ्राक, चप्पल।

(माथुर का ड्राइंगरूम)

रानी : सुनो, जी।

माथुर : कहो, जी।

रानी : आपके कहने से मिस्टर खन्ना मेरे भाई को नौकरी दिलवा भी देंगे ?

माथुर : दिक्कत यही है कि वह भी अपनी बेटी के दाखिले के लिए मुझ से कह चुके हैं।

रानी : तो इसमें क्या मुश्किल है ?

माथुर : तुम यही तो नहीं समझतीं, रानी। आजकल पापियों को स्वर्ग में एडमीशन भले ही मिल जाए, बच्चों को किसी नामी स्कूल में एडमीशन नहीं मिल सकता।

रानी : कम-से-कम वादा तो कर सकते हो। जब मिस्टर खन्ना मेरे भाई को नौकरी दिलवा दें, तो कह देना 'आई एम सॉरी—एडमीशन नहीं हो सकता।'

माथुर : वाह, क्या दिमाग पाया है! ठीक है। अभी मिस्टर और मिसेज खन्ना इसी काम के लिए आते ही होंगे। बात करेंगे।

रानी : और, देखिए, अपने इस लाडले किशोर को समझा दीजिए कि मेहमानों के सामने शैतानी न करे।

किशोर : नहीं, मम्मी, मैं कोई गलत काम नहीं करूंगा, गलत बात नहीं बोलूंगा।

माथुर : हां। नही तो कान उखाड़ लूंगा।

किशोर : कान तो एक बार मास्टरजी ने भी उखाड़ने की कोशिश की थी, पर फेल हो गए।

माथुर : (डांट कर) बदमाश, फिर तुमने…

रानी : अरे, हटाओ। लगता है, आपके दोस्त मिस्टर और मिसेज खन्ना आ गए हैं।

[खन्ना और उनकी पत्नी लता और बेटी बाला का प्रवेश]

खन्ना : (आते हुए) हलो, मिस्टर माथुर।

माथुर : ओह, मिस्टर खन्ना। आइए।

रानी : आओ, लता बहन।

बाला : मैं भी आ सकती हूं, आंटी?

किशोर : तुम मेरे पास आओ, मिस बाला।

लता : ओह, हाऊ स्वीट! रानी बहन, आपका किशोर बहुत ही स्वीट है।

किशोर : नही, आंटी, मम्मी कहती हैं कि मैं बहुत शैतान हूं। और पापा भी मम्मी की हां में हां मिलाते हैं।

माथुर : (डांटकर) किशोर!

किशोर : *(भोलेपन से)* जी।

माथुर : फिर तुमने बकवास की?

किशोर : आप ही बताइए, पापा, मैंने कोई गलत बात कही है?

माथुर : अच्छा, चुपचाप बैठे रहो।

खन्ना : मिस्टर माथुर, इस बार आप पहाड़ नहीं गए?

माथुर : जाना तो चाहता था, पर रानी ने मना कर दिया।

रानी : बात यह है, मिस्टर खन्ना, कि अब तक हम सभी हिल स्टेशनों पर गरमियां बिता चुके हैं। अब बार-बार उन्ही जगह क्या जाना!

किशोर : वाह मम्मी। इतने साल से तो मैं देख रहा हूं कि हर साल गरमियो मे तुम बाजार सीताराम मे नानी के घर जाती हो। वहा कौन-सा पहाड़ है? हमारी भूगोल की किताब…

रानी : (बीच में, डांटकर) तुम फिर बोले ?

किशोर : कोई गलत बात तो नहीं बोला, मम्मी ।

लता : ओह, हाऊ स्वीट !

रानी : नहीं, नहीं, आप इसकी बात पर मत जाइए। यह तो यों ही बकता रहता है ।

माथुर : मिस्टर खन्ना, वह आपकी नई कार का क्या हुआ ? आप तो कह रहे थे कि एक-दो दिन में मिलने वाली है ।

खन्ना : शायद कुछ दिन और लगें। आप तो जानते ही है आजकल हर काम में देर लगती है ।

माथुर : हां, वह तो है ही ।

बाला : (माथुर से) नहीं, अंकिल, पापा आपको झूठमूठ बहका र हैं। पापा मम्मी से कह रहे थे कि कार लेना तो हमारे लिए सात जनम में भी मुश्किल है ।

खन्ना : (डांटकर) क्या कहती है ! तुझे क्या मालूम ?

बाला : मालूम है। मैंने खुद अपने कानों से सुना है ।

लता : अच्छा, अच्छा, चुप रह । बड़ों के बीच में नहीं बोला करते ।

रानी : (लता की नकल करते हुए) हाऊ स्वीट !

लता : कौन ? मैं ?

रानी : नहीं, मैं तो बाला के लिए कह रही थी ।

किशोर : ठीक । मम्मी की नजरों में बाला स्वीट, आंटी की नजरों में मैं स्वीट। (बच्चे हंसते हैं)

लता : (डांटकर, बच्चों से) बेकार क्यों हंस रहे हो ?
[बच्चे एकदम चुप हो जाते हैं]

रानी : लता बहन, सुना है आप गाना सीख रही हैं ?

खन्ना : हां, हां, मिसेज माथुर। यह तो अब बहुत अच्छा गाने लग है ।

बाला : पापा, उस दिन तो आप मम्मी से कह रहे थे कि अपना रेंकना बंद करो ।

रानी : ओह, हाऊ स्वीट !

मायुर : रानी, कुछ चाय नाश्ता तो लाओ मेहमानों के लिए।

रानी : यॅस, अभी लाई। (जाती है)

खन्ना : मिस्टर मायुर, आप अपना नया मकान बनवाना कब शुरू कर रहे हैं ?

मायुर : नक्शा तो पास हो गया है। लेकिन आजकल सीमेंट नहीं मिल रहा है।

किशोर : लेकिन, पापा, अभी आपने जमीन तो खरीदी ही नहीं है।

लता : ओह, हाऊ स्वीट !

मायुर : तू चुप नहीं रहेगा, किशोर ?

किशोर : मैंने कोई गलत बात नहीं कही, पापा। आप ही तो उस दिन मम्मी से कह रहे थे कि जमीन के लिए तीस हजार रुपये कहां से लाऊं ?

मायुर : चुप रहो। बड़ों के बीच में मत बोला करो। जाओ, दूसरे कमरे में जाकर खेलो।

किशोर : (उतरी आवाज में) चलो, बाला।

बाला : चलो, किशोर।

[किशोर और बाला जाते हैं]

मायुर : पता नहीं, चाय में इतनी देर क्यों हो रही है ? मैं जाकर देखता हूं।

[मायुर जाते हैं]

लता : मैंने कहा, कहीं इधर-उधर की बातों में बाला के एडमीशन के लिए कहना मत भूल जाना।

खन्ना : भूलूंगा क्यों ? हम तो यहां आए ही इस मतलब से हैं। पर मुश्किल तो मिस्टर मायुर के साले को नौकरी दिलवाने की है।

लता : मैंने आपको तरकीब बताई तो है। तुम मिस्टर मायुर से वादा कर लो। एक बार बाला का एडमीशन हो जाए, तो कह देना—आई एम सॉरी। नौकरी नहीं दिलवा सका।

खन्ना : वाह, क्या दिमाग पाया है !

लता : (धीरे से) शी ! वे लोग आ रहे [illegible]

रानी : माफ कीजिएगा, चाय में जरा देर हो गई।

लता : कोई बात नही।

किशोर : (बाहर से आवाज देकर) मम्मी, मालूम होता है चाय आ गई। मेहमान को ले आऊं ?

[किशोर और बाला आते हैं]

लता : रानी बहन, आपका टीसेट तो बहुत बढ़िया है।

रानी : अभी नया ही खरीदा है।

किशोर : मम्मी, ये टीसेट तो तुम सुबह पड़ोस वाली आंटी से मां कर लाई थी मेहमानों के लिए।

लता : ओह, हाऊ स्वीट !

खन्ना : कोई बात नहीं, ऐसा तो होता ही रहता है। हमारा डिनरसेट भी अक्सर पड़ोसी मांग कर ले जाते है।

बाला : पापा, हमारे घर में डिनरसेट है ही कहां !

रानी : ओह, हाऊ स्वीट !

माथुर : कोई बात नही। यह लीजिए पेस्ट्री खाइए।

रानी : मुझे तो पेस्ट्री बहुत ही अच्छी लगती है। रोज ही नाश्ते में हम लोग पेस्ट्री खाते हैं।

किशोर : कहां, मम्मी ! नाश्ते में तो तुम मठरियां बना कर रख देतं. हो।

लता : ओह, हाऊ स्वीट !

रानी : (डांटकर) किशोर, चुपचाप नाश्ता करो।

खन्ना : मिस्टर माथुर, आपने कुछ सोचा बाला के एडमीशन बारे में ?

लता : रानी बहन, तुम्हीं हमारी तरफ से सिफारिश कर दो न मिस्टर माथुर से।

रानी : जरूर। (माथुर से) इसमें कौन मुश्किल है ! आप मिस चंडी-राम से कह क्यों नहीं देते कि बाला को अपने स्कूल में दाखिल कर लें ? आपकी तो उनसे पुरानी जान-पहचान है।

मायुर : (मजाक करते हुए) लेकिन तुम्ही तो कहती रहती हो कि मैं चंडीराम से न मिला करूं।

रानी : एडमीशन के सिलसिले में मिलने में कोई हर्ज नहीं है। और फिर मैं जो तुम्हारे साथ रहूंगी।

माथुर : अच्छी बात है। मिस्टर खन्ना, आपका काम हो जाएगा।

रानी : लेकिन, मिस्टर खन्ना, मेरे भाई की नौकरी के लिए भी तो कुछ करिए न।

माथुर हां, मिस्टर खन्ना, यह काम तो आपको करना ही पड़ेगा। वरना इस घर में मेरा रहना मुश्किल हो जाएगा। आप तो जानते ही है सारी खुदाई एक तरफ, जोरू का भाई एक तरफ।

खन्ना : मैं पूरी कोशिश करूंगा।

रानी : कोशिश नही। यह काम तो आप को करना ही पड़ेगा। लता बहन, आप ही हमारी तरफ से सिफारिश करिए न मिस्टर खन्ना से।

लता : (खन्ना से) क्यों जी, इतने मामूली से काम में क्या मुश्किल है?

खन्ना : बात यह है कि उस कंपनी का मैनेजर धौलिया मेरा क्लास फैलो था। एक बार मेरा उससे झगड़ा हो गया तो मैंने उसके दो दांत तोड़ दिए थे। बस, तब से वह मेरी बत्तीसी तोड़ने की फिराक में है।

लता : उसकी क्या मजाल। मैं तुम्हारे साथ चलूंगी। वह ठंडा पड़ जाएगा।

खन्ना : तब तो जरूर काम हो जाएगा।

बाला : आई एम सॉरी।

लता : क्या बात है, बाला?

बाला : वही बात जो आपने पापा से कही थी।

लता : (डांटकर) क्या ऊलजलूल बक रही हो?

बाला : वाह, मम्मी! अब मुझे क्यों डांट रही हो? आपने पापा से

कहा था कि बाला का एडमीशन हो जाए तो आंटी के भाई की नौकरी के लिए कह देंगे—आई एम सॉरी।

रानी : ओह, हाऊ स्वीट।

खन्ना : (बाला को डांट कर) बाला, बेकार की बातें मत करो।

किशोर : अंकिल, कोई बात नहीं। पापा भी आप से आई एम सॉरी कह देंगे।

खन्ना : क्या मतलब ?

किशोर : आप ने मामाजी को नौकरी दिलवा दी तो बाला के एडमीशन के लिए पापा आपसे कह देंगे, आई एम सॉरी।

रानी : (डांटकर) क्या बकता है ?

किशोर : मम्मी, तुम्हीने तो पापा को यह सिखाया है।

लता : ओह, हाऊ स्वीट !

[मायुर, खन्ना, लता और रानी खिसियाकर ही ही करते हैं]

रुपहला परदा

पात्र-परिचय :

कपाड़िया : गंजा, बिना मूंछ, सायापिया ऐश वाला शरीर, उमर ५० कमीज, कोट, धोती, चप्पल, पूरा चंट आदमी है।

बेदिल : दुबले-पतले, उड़े बाल, सफाचट पिचका चेहरा, उमर ३५, पर लगते ५० के है, बोलचाल मे तेजी और हाजिर जवाबी।

चकोरी : सुन्दर छरहरा शरीर, आधुनिक वेशभूषा और मेकअप, उमर २०, बातचीत में भोलापन।

चांद : स्वस्थ, उमर २५, वेशभूषा एकदम आधुनिक, शक्ल पर चंटपना, पर अपने को हीरो समझना।

दारोगा : अच्छा डीलडोल, रौबीली मूंछें, सरकारी वरदी।

(कपाड़िया का फिल्मी दफ्तर)

बेदिल : (दूर से) मैं अन्दर आ सकता हूं ?

कपाड़िया : सीधे चले आइए। चार कदम चलने के बाद, बाएं हाथ को मुड़कर दो कदम चलिए···मैं सामने ही बैठा मिलूंगा।

बेदिल : (पास आकर) मैं कपाड़ियाजी से मिलने आया हूं।

कपाड़िया : आप उन्हीं के दर्शनों का लाभ उठा रहे हैं।

बेदिल : (प्रसन्न होकर) बहुत खुशी हुई आपसे मिलकर। बन्दे को बेदिल कहते हैं। आज सुबह के अखबार में आपका इश्तहार पढ़ा था कि आपको अपनी नई फिल्म के लिए कहानी चाहिए।

कपाड़िया : तो आप कहानी लिखते हैं ?

बेदिल : जी।

कपाड़िया : कब से ?

बेदिल : पिछले जन्म से।

कपाड़िया : तो इसका मतलब है कि आपके पास कोई पुरानी कहानी है। देखिए, मुझे तो ऐसी कहानी चाहिए जिसमें हर बात नई हो। अगर आपके पास ऐसी कोई कहानी हो तो सुनाइए।

बेदिल : कपाड़ियाजी, कहानी बिल्कुल नई है। वह कहानी लिखकर लाया हूं कि सुनकर आप बल्लियों उछल पड़ेंगे।

कपाड़िया : क्या कहा, बेदिल साहब ! गोया कि बल्लियों उछल पड़ूंगा ?

बेदिल : जी, हां, यह मेरा दावा है। इसलिए मैं एक बल्ली भी साथ लाया हूं।

कपाड़िया . इस कमरे की छत से ऊंची तो नहीं है आपकी बल्ली ?

बेदिल : शायद ऊंची ही होगी।

कपाड़िया : तब बाहर खुले आसमान के नीचे बैठकर आपकी कहानी सुनने में मेरा सिर फूटने का खतरा नहीं रहेगा।

बेदिल . पर बाहर सर्दी बहुत है।

कपाड़िया : तो आप मेरा सिर फुड़वाना चाहते हैं ?

बेदिल : कपाड़ियाजी, आपकी फिल्म देखने के लिए जब टिकट खरीदने वालों की अपार भीड़ में सिरफुटव्वल होगी, तो आप अपना फूटा हुआ सिर भूल जाएंगे।

कपाड़िया : ऐसा ? तब सुनाइए, अपनी कहानी।

बेदिल : कहानी का पहला सीन सुनाता हूं। ग्रांड बाक्स रोड पर···

कपाड़िया : (बीच में) यह कौन-सी सड़क हुई ?

बेदिल : ग्रांड ट्रक रोड का नया नाम है।

कपाड़िया : वाह ! क्या ट्रक की जगह बाक्स मारा है !

बेदिल : शुक्रिया ! हां, तो ग्रांड बॉक्स रोड पर हीरो एक लेटेस्ट माडल की कार में तेजी से चला जा रहा है कि सामने से एक पचडा बैलगाड़ी आ जाती है। कार, क्री···च···करके रुक जाती है और···

कपाड़िया : (बीच में) और बैलगाड़ी में से हीरोइन उतरती है।

बेदिल : हीरोइन नहीं, हीरोइन का बाप उतरता है।

कपाड़िया : धत्त तेरे की ! बाप इतनी जल्दी कहां से आ मरा !

बेदिल : यही तो सस्पेंस है, कपाड़ियाजी। आप सुनते जाइए।

कपाड़िया : नहीं, बेदिल साहब, पहले आप यह बताइए कि हीरोइन कहां रह गई ?

बेदिल : वह कीकर के ऊपर बैठी विलेन का गाना सुन रही थी।

कपाड़िया : अब कुछ तसल्ली हुई। आगे क्या होता है ?

बेदिल : हीरो अपने होने वाले ससुर पर बहुत नाराज होता है। कहता

है : 'बुड्ढे, रास्ते में से अपनी बैलगाड़ी एक तरफ हटा।' इस पर हीरोइन का बाप मजाक उड़ाता हुआ जवाब देता है : 'टर्र-टर्र क्यों करता है ? तू क्यों नहीं हटा लेता अपने टीन के डब्बे को ?'

कपाड़िया : वाह ! वाह ! क्या डायलॉग मारा है ! अब तो बराबरी का जमाना है। आगे क्या होता है ?

बेदिल : दोनों ही गरम हो जाते हैं, और नौबत यहां तक पहुंच जाती है कि हीरो और उसके होनेवाले ससुर की कुश्ती हो जाती है।

कपाड़िया : कमाल कर दिया, बेदिल साहब ! क्या सिचुएशन मारी है !

बेदिल : शुक्रिया ! और अब जो सिचुएशन आ रही, उससे आप उछल पड़ेंगे।

कपाड़िया : आप फिक्र मत करिए ! मैंने कुर्सी को मजबूती से पकड़ रखा है। आगे क्या होता है ?

बेदिल : तभी वहां हीरोइन आ जाती है। अपने बाप को एक खूबसूरत नौजवान से कुश्ती लड़ते हुए देखती है, तो खुशी से उछल-उछलकर तालियां बजाने लगती है।

कपाड़िया : (एकदम) न...न...न। इस मौके पर तो हीरोइन को खुशी से उछल-उछलकर गाना चाहिए।

बेदिल : जरूर गाना चाहिए। मैंने गाना पहले से लिख रखा है। इंटरनेशनल फोक ट्यून में गाने के बोल फिट किए हैं। सुनिए। (पहले धुन गुनगुनाता है। साथ में माचिस की डिबिया पर ताल देता जाता है। फिर गाना सुनाता है) :

लड़ा रे।...होए।...लड़ा रे।
मेरे बालमा से बाप मेरा,
कुश्ती लड़ा रे।..होए !

कपाड़िया : हाय ! हाय ! क्या बोल मारे हैं ! फिर क्या होता है ?

बेदिल : गाना सुनकर हीरो का ध्यान हीरोइन की तरफ चला जाता है। हीरोइन से उसकी आंखें चार होने ही वाली होती हैं कि हीरोइन का बाप मौके से फायदा उठाता है और हीरो को

वह धोबी पछाड़ दांव मारता है कि हीरो की आंखें बन्द हो जाती है।

कपाड़िया : (घबराकर) है ? तो क्या हीरो मर जाता है ?

बेदिल : मर कैसे जाता ! अभी तो ग्यारह हजार फिट फिल्म बाकी पड़ी है। हीरो सिर्फ बेहोश हो जाता है।

कपाड़िया : (चैन की सांस लेकर) ठीक है। फिर क्या होता है ?

बेदिल : हीरोइन का बाप हीरो को उठाकर गठरी की तरह बैलगाड़ी मे पटक देता है, और गांव की तरफ चल पड़ता है···

कपाड़िया : (बीच मे) ठहरिए। ठहरिए।

बेदिल : (आश्चर्य से) क्यो ? क्या चौराहे पर लाल बत्ती हो गई ?

कपाड़िया : नही, मेरा मतलब है कि आपने हीरो की नई कार किसके हवाले कर दी ?

बेदिल : ओह, कार का तो मुझे खयाल ही नही रहा।

कपाड़िया : ऐसी ही छोटी-छोटी गलतियों को लेकर तो ये अखबार वाले फिल्मी लेखकों को बेवकूफ साबित कर देते है।

बेदिल : अजी, अखबार वालों को फिल्मी कहानी लिखनी पड़े तो कलम-दवात का भाव मालूम पड़ जाए।

कपाड़िया : नही, मैं अपनी फिल्म मे ऐसी कोई गलती नही होने दूगा। ऐसा क्यों न करें कि हीरोइन कार चलाकर अपने घर ले जाती है।

बेदिल : आप भी कमाल करते हैं, कपाड़ियाजी ! हमारी हीरोइन गांव की गोरी है। उससे आप कार कैसे चलवा सकते हैं ?

कपाड़िया : अच्छा तो फिर कार को किसी चीज से बैलगाड़ी के पीछे बांध दीजिए।

बेदिल : किस से बांध दू ?

कपाड़िया : (झुंझलाकर) मेरे सिर से।

बेदिल : (प्रसन्न होकर) वाह ! वाह ! क्या सिर मारा है ! इस शाट मे आपके सिर का क्लोज अप बहुत जचेगा।

कपाड़िया : जी, नहीं। किसी और चीज से बांधिए।

बेदिल : हीरोइन के दुपट्टे से बांध दूं ?

कपाड़िया : वाह ! वाह ! क्या दुपट्टा मारा है ! कार और बैलगाड़ी का गठबंधन ! अब उस कार में हीरोइन को बैठा दीजिए। आगे-आगे···

बेदिल : फेड आउट। अगला शाट—हीरोइन के बाप की झोंपड़ी का ड्राइंग रूम। समय—रात के दो बजे। बाहर उल्लू बोलता है, और अन्दर बेहोशी दूर होने पर हीरो बोलता है—"मैं कहां हूं ?"

कपाड़िया : हीरो के पास कौन बैठा है ?

बेदिल : कोई नहीं।

कपाड़िया : कोई तो होना चाहिए। हीरोइन के बाप को क्यों न बैठा दिया जाए ?

बेदिल : (एकदम) न···न···न। बाप को सामने देखकर हीरो फिर बेहोश हो जाएगा।

कपाड़िया : तो हीरोइन को उसके सामने होना चाहिए।

बेदिल : तब तो सारा सस्पेंस ही खतम हो जाएगा। हीरोइन ड्राइंग रूम में टांड के ऊपर छिपी हुई है, और मंद-मंद मुसकराती हुई हीरो की तरफ घूर-घूरकर देख रही है।

कपाड़िया : वाह ! वाह ! क्या सीन मारा है ! आगे क्या होता है ?

बेदिल : ड्राइंग रूम में किसी को न देखकर हीरो घबरा जाता है, और चारपाई से उछलकर···

कपाड़िया : (बीच में) ड्राइंग रूम में चारपाई ?

बेदिल : सोफा मरम्मत के लिए गया हुआ है। हां, तो हीरो चारपाई से उछलकर भागने लगता है, तभी हीरोइन कहती है···

चकोरी : (बाहर से) मैं अन्दर आ सकती हूं ?

बेदिल : नहीं, अभी टांड के ऊपर ही बैठी रहो।

कपाड़िया : यह तो कोई और है, बेदिल साहब। शायद कोई मिलने आई है।

बेदिल : हीरो से ?

कपाड़िया : नहीं, मुझ से। (चकोरी से) अन्दर आ जाइए।

चकोरी : (अंदर आकर) मेरा नाम चकोरी है—मिस चकोरी। आज सुबह के अखबार में पढा था कि आपको नई फिल्म के लिए नई हीरोइन चाहिए।

कपाड़िया : बैठिए।

बेदिल : टांड के ऊपर।

चकोरी : (घबराकर) जी ?

कपाड़िया : (हँसते हुए) घबराइए मत। बेदिल साहब कहानी सुना रहे थे। उसी के एक सीन में हीरोइन टांड के ऊपर बैठी है।

चकोरी : मैं आपकी फिल्म में हीरोइन के रोल के लिए आई हूं।

कपाड़िया : बेदिल साहब, जरा इन्हें हीरोइन का डायलाग तो दीजिए।

बेदिल : पहले सिचुएशन समझ लीजिए। आप अपनी झोपड़ी में···

चकोरी : (भोलेपन से, बीच में) जी, मैं तो कनाट प्लेस में रहती हूं।

कपाड़िया : वाह ! वाह ! क्या भोलापन मारा है !

बेदिल : हीरोइन का रोल इन्हें बिलकुल फिट बैठेगा, कपाड़ियाजी।

कपाड़िया : अभी दो-चार डायलॉग और बुलवाकर देखिए।

चांद : (बाहर से) मैं अन्दर आ सकता हूं।

चकोरी : (गुस्से से) खबरदार, जो एक कदम भी आगे बढे।

कपाड़िया : वाह ! वाह ! क्या गुस्सा मारा है ! एक डायलॉग और बोलिए।

चांद : (अन्दर आकर) मैं आपसे मिलना चाहता हूं।

चकोरी : (गुस्से से) तुम ऐसे नहीं मानोगे। मैं अभी पुलिस को फोन करती हूं।

कपाड़िया : (घबराकर) य···यह···क्या माजरा है ?

चकोरी : कपाड़िया साहब, यह गुंडा मेरा पीछा कर रहा है। और इसकी हिम्मत तो देखिए यहां भी चला आया।

कपाड़िया : पैदाइशी विलेन मालूम होता है। (चांद से) तुम इस लड़की का पीछा क्यों कर रहे हो, जी ?

चांद : (घबराकर) नहीं तो। मैं तो कपाड़ियाजी से मिलने आया हूं। आज सुबह के अखबार में पढ़ा था···

कपाड़िया : ओहो, तो आप विलेन के रोल के लिए आए हैं ?

चांद : जी, नहीं। मैं हीरो बनना चाहता हूं। वैसे डबल रोल भी कर सकता हूं। मेरा नाम चांद है।

कपाड़िया : वाह ! वाह ! चांद के साथ चकोरी, क्या मिली है जोड़ी ! बैठिए। बेदिल साहब, इन्हें कोई डायलॉग दीजिए।

बेदिल : देखिए, सिचुएशन यह है कि आप अपने होने वाले ससुर की मार से बेहोश हो गए हैं। बेहोशी टूटने पर आप अपने को एक सुनसान-जगह में अकेला पाकर घबरा जाते हैं और भागने की कोशिश करते हैं। तभी हीरोइन टांड के ऊपर से कहती है : "मैं यहां हूं।" इस पर हीरो कहता है : "यह आवाज़ कहां से आई ?"

कपाड़िया : अच्छा, अब आप दोनों अपने-अपने डायलॉग बोलिए तो।

चकोरी : (पारसी थिएटर के अन्दाज़ में) मैं यहां हूं।

चांद : (पारसी थिएटर के अन्दाज़ में) यह आवाज़ कहां से आई ?

कपाड़िया : नहीं, नहीं, यह नहीं चलेगा। आवाज़ में नीच होना चाहिए।

चकोरी : (फिल्मसीन तरीके से) मैं यहां हूं।

चांद : (फिल्मसीन तरीके से) यह आवाज़ कहां से आई ?

कपाड़िया : ऊं हूं। यह भी नहीं चलेगा। मुकम्मल जोड़े बोलिए।

चकोरी : (जल्दी से सपाटा मारकर) मैं यहां हूं।

चांद : (जल्दी से सपाटा मारकर) यह आवाज़ कहां से...

कपाड़िया : वाह ! वाह ! डायलॉग की तरह क्या... सीख जाइए। एक्टिंग करना आपके बस...

क्या होता है ?

बेदिल : हीरो के जवाब में हीरोइन कहती है—टाड के ऊपर से "तुम अपनी होने वाली ससुराल में हो।" और उसी दम दन से हीरो के ऊपर कूद पडती है। कट—झोंपड़ी के बैडरूम में हीरोइन की मां सोते-सोते चौंककर उठ बैठती है और हीरोइन के बाप को जोर से हिलाकर जगाती है और कहती है : "टाड के ऊपर से बिल्ली चूहे पर झपटी है।" हीरोइन का बाप भुनभुना कर कहता है : "चूहा कहां से आया ! वहां तो वह शहरी लौंडा है।"

कपाड़िया : वाह ! यह बिल्ली चूहा चलेगा। आगे क्या होता है ?

बेदिल : बिल्ली और चूहा ड्यूएट गाते हैं।

कपाड़िया : नहीं, अभी नहीं ! ऐसा क्यों न करो कि इस अचानक हमले से घबराकर हीरो भाग खड़ा होता है और हीरोइन उसका पीछा करती है ?

बेदिल : यह भी चलेगा। भागते-भागते दोनों उसी कीकर के पेड़ के नीचे पहुंच जाते हैं जहा पहले हीरोइन विलेन का गाना सुना करती थी। वहा पहुचकर दोनों ड्यूएट गाते हैं। (गाकर)

तुम से मिले हम !
हम से मिले तुम,
कीकर के साए तले।
हां··· जी ···हो !
हां··· जी ··· हो !

कपाड़िया : वाह ! वाह ! क्या ड्यूएट मारा है ! आगे क्या होता है ?

बेदिल : तभी कीकर के पेड पर से विलेन नीचे छलांग मारता है। हीरो डर के मारे बेहोश हो जाता है।

कपाड़िया : वाह ! वाह ! क्या करेक्टर मारा है हीरो का ! आगे क्या होता है ?

बेदिल : उसके बाद हीरोइन और विलेन के डायलॉग होते हैं।

कपाड़िया : वह डायलॉग इन दोनों को दीजिए। एक बार फिर ट्राइ ले

लें। बोलिए।

चांद : तुम यहां क्या कर रही हो ?

चकोरी : तुमसे मतलब ?

चांद : अच्छा, जी। अब हम से कोई मतलब नहीं ? कब से जानती हो इसे ?

चकोरी : जब से बापू ने इसे कुश्ती में पछाड़ा है।

चांद . मैं अभी तुम्हारे बापू को पछाड़ता हूं।

चकोरी : सुबह पछाड़ना, इस वक्त बापू सो रहे हैं।

कपाड़िया : कुछ बात बनती नजर आती है। मिस चकोरी को तो खींच-तानकर मैं हीरोइन बना सकता हूं, पर चांद को विलेन का रोल ही सूट करेगा।

चकोरी : (प्रसन्न होकर) सच ? आप मुझे चांस देंगे ?

चांद : खैर, विलेन ही सही। एक बार परदे पर तो आऊंगा।

कपाड़िया : हां, तो, बेदिल साहब, आगे क्या होता है ?

बेदिल : तभी वहां दारोगाजी आ जाते हैं।

कपाड़िया : क्यों ?

बेदिल : रात के गश्त पर निकले थे। एक बेहोश आदमी के पास एक औरत और आदमी को खड़े देखकर उनके कान भी खड़े हो जाते हैं। दारोगाजी विलेन से कड़ककर पूछते हैं…

दारोगा : (अन्दर आते हुए) मैं अन्दर आ सकता हूं ?

कपाड़िया : आ जाइए। क्या आपने भी सुबह अखबार में…

दारोगा : जी, तभी तो पता चला कि आप दिल्ली आए हुए हैं।

कपाड़िया : वाह ! वाह ! क्या मेकअप मारा है ! बिलकुल असली दारोगा लगते हो।

दारोगा : अकेली वरदी पहनने से ही कोई दारोगा नहीं बन जाता। डाकुओं को गिरफ्तार करके हथकड़ी पहनाना भी आना चाहिए। यह देखिए कितनी सफाई से मैंने आपके हथकड़ी मार दी !

कपाड़िया : वाह ! वाह ! क्या हथकड़ी मारी है ! आप अब तक कहां

छिपे थे ? मुझे तो आप ही की तलाश थी।

दारोगा : और मुझे भी आप ही की तलाश थी, रामलाल उर्फ चंदू चार सौ बीस।

कपाड़िया : (घबराकर) हाय, कहां लाकर मारा है !

चचा भतीजे

पात्र-परिचय :

श्यामलाल : मध्यवर्गीय, कुरता, धोती, चेहरे-मोहरे से शरीफ, उमर ५५।

लक्ष्मी : श्यामलाल की पत्नी, उमर ५०, पति से न दबने वाली, अपनी हैसियत से सबसे बढ़िया कपड़े और जेवर।

लाला दमड़ीमल : अनाज के थोक व्यापारी, वैसी ही वेषभूषा, उमर ५०, चंट सौदेबाज़।

सेठ रामगोपाल : चीनी के थोक व्यापारी, वैसी ही वेशभूषा, उमर ५०, चट, सौदेबाज़।

प्रेमचन्द : पुलिस अफसर, सादे कपड़ों में, उमर ४०।

मनोहर : पुलिस अफसर, सादे कपड़ों मे, उमर ३५।

प्रताप : श्यामलाल का बेटा, सूट, उमर ३०, स्वस्थ, सुन्दर, खुश-मिजाज।

(श्यामलाल का ड्राइंग रूम)

श्यामलाल : पता नहीं, घड़ी को क्या हो गया है—पांच ही नहीं बजाती !

लक्ष्मी : इसी इन्तजार में हूं कि कब पांच बजें और कब हमारा प्रताप आए।

श्यामलाल : सफर भी तो कितना लम्बा है ! मद्रास से दिल्ली। और फिर अपनी नई मोटर में आ रहा है। देर-सवेर हो सकती है।

लक्ष्मी : मैं सोचती हूं, प्रताप की नौकरी भी लग गई, मकान भी ले लिया है। उसकी शादी हो जानी चाहिए।

श्यामलाल : तुमने तो बहुत देर से सोचा, मैं तो कब को सोचे बैठा हूं।

लक्ष्मी : अजी, तुम्हारे बस का कुछ नहीं है। मैं जब तक कोशिश नहीं करूंगी, प्रताप की शादी नहीं हो सकती।

श्यामलाल : जी, हां, अपनी शादी की कोशिश भी तो तुम्हींने की थी।

लक्ष्मी : देखो, जी, मेरा मूड खराब मत करो, वरना कहे देती हूं...

श्यामलाल : (बीच में ही) मैं जानता हूं, तुम क्या कहोगी। आज कोई नई बात थोड़े ही है। लेकिन मुझे कोई चिन्ता नहीं है। मैंने होटल वाले से कह रखा है कि जब मेरी बीवी का मूड खराब हो, मेरे लिए खासतौर से बढ़िया खाना बना दिया करो। अब बोलो।

लक्ष्मी : अच्छा, तो तुमने होटल वाले से सांठ-गांठ कर रखी है ! मैं भी कहूं कि तुम दिन पर दिन मोटे क्यों होते जा रहे हो !

देख लूंगी उस होटल वाले को भी।

श्यामलाल : होटल वाला कोई मेरे जैसा तो है नहीं जो तुमसे डर जाएगा।

लक्ष्मी : अजी, उसकी तो सात पुश्तें मेरे आगे थरथर कांपेंगी। होटल बन्द करके अडमान न भाग जाए तो कहना। मैं अभी जाकर उससे जवाब तलब करती हूं। (जाने लगती है)

श्यामलाल : (ऊंची आवाज में) मैंने कहा, यह नेक काम किसी और दिन कर लेना। आज तो प्रताप आ रहा है।

लक्ष्मी : (वापस आते हुए) अच्छी बात है। लेकिन मैं जरा अपनी एनगेजमेंट डायरी में नोट कर लूं कि होटल वाले से निबटना है। बाद में कहीं भूल न जाऊं।

श्यामलाल : तुम कैसे भूल सकती हो। तुम्हें तो यह भी याद रहता है कि बीस साल पहले तुमने कौन-सी दाल बनाई थी और उसमें कितनी चुटकी नमक डाला था।

लक्ष्मी : और क्या! तुम्हारी तरह भुलक्कड थोड़े ही हूं जो यह भी याद नहीं रहता कि कल रात सोए थे या नहीं?

श्यामलाल : यह तुम नहीं कह सकती। मुझे अच्छी तरह याद है कि जब से तुमसे शादी हुई है एक रात भी मैं चैन से नहीं सो सका।

लक्ष्मी : (जोर से) हूं! अगर शादी का इतना ही दुख है, तो मुझे तलाक क्यों नहीं दे देते?

श्यामलाल : शी! जरा धीरे बोलो। कोई सुन लेगा तो हंसेगा कि बुड्ढे बुढ़िया को इस उमर में चोचले सूझे हैं।

लक्ष्मी : (नाराज) बुड्ढे होगे तुम।

श्यामलाल : हां, जी। और तुम्हारा तो अभी बाला जोबन है।

लक्ष्मी : (नाराज) शर्म नहीं आती तुम्हें मजाक करते हुए।

श्यामलाल : अरे पच्चीस साल के बेटे की मां से भला क्या मजाक करूंगा! अब तो बेटे के ब्याह की बात करो।

लक्ष्मी : बात मैंने कर ली है।

श्यामलाल : क्या बात कर ली है?

लक्ष्मी : मैंने प्रताप के लिए लड़की पसन्द भी कर ली है।

श्यामलाल : वाह! वाह! क्या कहने!

लक्ष्मी : क्यों?

श्यामलाल : और मैंने प्रताप के लिए जो लड़का पसन्द का है

लक्ष्मी : हूं! क्या तुम और क्या तुम्हारी पसन्द!

श्यामलाल : आदमी ठोकर खा कर संभल जाता है।

लक्ष्मी : कैसी ठोकर?

श्यामलाल : तुम्हें पसन्द करके ठोकर खाई थी। अब दोबारा गलती नहीं कर सकता। इस बार मैंने बेटे के लिए बहुत अच्छी लड़की पसन्द की है।

लक्ष्मी : मैं कुछ नहीं सुनना चाहती। मैंने जो फैसला कर लिया है, उसे कोई नहीं बदल सकता।

श्यामलाल : तुम तो जैसे सुप्रीमकोर्ट हो न, जो कोई तुम्हारा फैसला नहीं बदल सकता।

लक्ष्मी : कम से कम तुम्हारी हिम्मत तो है नहीं।

श्यामलाल : हुं! मैं एक चुटकी में तुम्हारा फैसला रद्द कर सकता हूं।

लक्ष्मी : अजी, पहले मुंह धोकर आओ।

श्यामलाल : अभी आया (जाने लगता है, फिर एकाएक रुक कर वापस आते हुए) वाह, जी, वाह! मुंह तो मैं सुबह ही धो चुका था। बल्कि आज तो साबुन भी लगाया था।

लक्ष्मी : घटिया किस्म का साबुन होगा, तभी तो कोई फर्क नहीं पड़ा। इसीलिए मेरा फैसला अटल है।

श्यामलाल : मेरा फैसला पक्का है।

लक्ष्मी : मैंने तो लखनऊ वाले सेठ रामगोपाल को लिख भी दिया है कि प्रताप आज आ रहा है। वह शगुन करने आ जाए।

श्यामलाल : तुमने किससे पूछ कर उन्हें लिखा?

लक्ष्मी : पूछना किससे था?

श्यामलाल : मुझसे। मैं प्रताप का बाप हूं।

लक्ष्मी : होंगे।

श्यामलाल : यह तो बड़ी मुश्किल हो गई।

लक्ष्मी : कैसे मुश्किल ?
श्यामलाल : मैंने भी बरेली वाले लाला दमड़ीमल को यही लिख दिया है। यह भी आते होंगे।
लक्ष्मी : तो क्या बेटे की दो-दो शादियां करोगे ?
श्यामलाल . अजी, जब बाप ने दो शादियां नहीं की, तो बेटा क्या खाकर करेगा !
लक्ष्मी : तब फिर तुम लाला दमडीमल को तार दे दो कि न आएं।
श्यामलाल : तुम्ही क्यो नहीं सेठ रामगोपाल को मना कर देती ?
लक्ष्मी · यह नही, हो सकता।
श्यामलाल : तब फिर वह भी नहीं हो सकता।
लक्ष्मी : प्रताप को मेरी पसन्द की लड़की से शादी करनी पड़ेगी।
श्यामलाल : नहीं, उसे मेरी माननी पड़ेगी। मैं उसका बाप हूं।
लक्ष्मी : मैं कब कहती हू कि तुम उसके बाप नही हो ?
श्यामलाल : बस तो अब क्या झगड़ा है ? लाला दमड़ीमल की लड़की इस घर की बहू बन कर आएगी।
लक्ष्मी : कभी नहीं। इस घर की बहू बनेगी सेठ रामगोपाल की बेटी।
दमड़ीमल : (बाहर से आवाज देकर) बाबू श्यामलाल !
श्यामलाल : यह लो, लाला दमडीमल तो आ भी गए। मैं अभी बात पक्की किए देता हूं—सेठ रामगोपाल के आने से पहले ही।
रामगोपाल : (बाहर से आवाज़ देकर) बहन जी !
लक्ष्मी : लो, सेठ रामगोपाल भी मौके पर आए है। तुमसे पहले मैं शादी तय कर दूगी।
श्यामलाल : (दरवाज़े से) पधारिए, लाला दमडीमल जी।
लक्ष्मी : (दरवाजे से) आइए, सेठ रामगोपालजी।
श्यामलाल : मेरी पत्नी से मिलिए, लालाजी।
लक्ष्मी : मेरे पति से मिलिए, सेठजी।
दमड़ीमल : नमस्ते, बहनजी !
रामगोपाल : नमस्ते, भाईजी !
श्यामलाल : सेठ रामगोपालजी, आप मेरी पत्नी के मेहमान हैं, इसलिए

मुझे भी आपका स्वागत तो करना ही पड़ेगा।

रामगोपाल : अजी, मैं तो आपकी पत्नी का सेवक हूं। ही ही ही !

श्यामलाल : जी, क्या फरमाया ?

रामगोपाल : सेवक। ही ही ही !

श्यामलाल : सेवक तो मुझे ही रहने दीजिए। आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।

रामगोपाल : आप गलत समझे। ही ही ही !

श्यामलाल : मैं भी आपकी गलतफहमी दूर कर देना चाहता हूं। बात यह है कि जिस काम के लिए आप आए है, वह नही हो सकता।

लक्ष्मी : सेठजी, आप मुझसे बात करिए।

दमड़ीमल : और मैं किससे बात करूं ?

श्यामलाल : मुझ से।

दमड़ीमल : बात यह है, भाईजी, कि आपका बेटा मुझे बिना देखे ही पसन्द है। आपको सौदा मंजूर हो तो अभी पेशगी के पांच हजार दे सकता हूं।

श्यामलाल : और सौदा पक्का हो जाने पर ?

दमड़ीमल : पन्द्रह हजार। बोलो। भाव कोई मन्दा नहीं है।

रामगोपाल : यह क्या मामला है, जी ? आपके लड़के का सौदा करने तो मैं आया था।

दमड़ीमल : अरे, तो तुम भी लगाओ बोली। जिसमे दम होगा वह माल उठा ले जाएगा।

रामगोपाल : बहनजी, मैं पच्चीस हजार मे माल उठाने को तैयार हूं।

श्यामलाल : लाला दमड़ीमल, आप बोली बढ़ाइए न। वरना आपकी नाक कट जाएगी।

दमड़ीमल : तीस हजार।

लक्ष्मी : सेठ रामगोपाल, क्या आपको अपनी नाक प्यारी नही है ?

रामगोपाल : पैंतीस।

दमड़ीमल : चालीस।

रामगोपाल : पैंतालीस।

[प्रेमचंद और मनोहर का प्रवेश]

मनोहर : (प्रवेश करते हुए) चचा, यहा तो नीलाम हो रहा है। कही हम गलत जगह तो नहीं आ फसे।

प्रेमचद : नही, भतीजे, हमे श्यामलालजी के घर ही आना था।

श्यामलाल : आप कौन साहब है ?

प्रेमचद : हम तो प्रेमचद साहब है और यह हमारे भतीजे मनोहर साहब हैं।

श्यामलाल : कैसे आना हुआ ?

प्रेमचंद : दिल्ली तक ट्रेन से आए। स्टेशन से बस में सवार हुए, जो आधे रास्ते मे टै हो गई। फिर फटफट मे, जो तीनचौथाई रास्ते में उलट गई। बाकी एकचौथाई रास्ता दौड़ते हुए आए, ताकि वक्त पर पहुच सकें। क्यों, भतीजे ?

मनोहर : हां, चचा।

श्यामलाल : लेकिन आप आए किस काम से है ?

प्रेमचंद : नाजो से पाली हमारी एक वेटी है, जिसका रिश्ता हम आपके लड़के से करना चाहते है। क्यो, भतीजे ?

मनोहर : हा, चचा।

प्रेमचद : इस बारे में हमने आपके लडके से खतोकितावत की थी। उसने आज यहां पांच बजे मिलने के लिए बुलाया है। क्यों, भतीजे!

मनोहर : हां, चचा।

श्यामलाल : देखिए, साहब, हमे इस बात पर बहुत गुस्सा आ रहा है कि हमारे बजाए आपने हमारे लड़के से खतोकितावत की। वह कौन होता है, शादी करने वाला ?

प्रेमचद : जी, वह नही तो क्या आप शादी करेंगे ?

श्यामलाल : बेशक।

प्रेमचंद : तो क्या अभी तक आपने शादी नही की ? फिर यह लड़का किसका है ?

श्यामलाल : मेरा।

प्रेमचंद : कमाल है ! क्यों, भतीजे ?

मनोहर : हां, चचा। लेकिन आप समझे नहीं, चचा। श्यामलालजी का

मतलब है कि इन्होंने अपनी शादी तो कर ली, बेटे की शादी भी अपनी मरजी से करेंगे।

प्रेमचंद : ओह, अब समझा। श्यामलालजी चाहते हैं कि हमें थ्रू प्रोपर चेनल शादी के लिए खतोकितावत करनी चाहिए थी। क्यों, भतीजे ?

मनोहर : हां, चचा।

प्रेमचंद : माफी चाहते हैं, श्यामलालजी। अब हम आपसे ही बात करेंगे।

श्यामलाल : आप क्या दे सकते हैं ?

प्रेमचंद : गाली को छोड़कर जो आप कहें। क्यों, भतीजे ?

मनोहर : हां, चचा।

श्यामलाल : सेठ रामगोपाल पैंतालीस दे रहे हैं।

प्रेमचंद : तो हम पचास दे देंगे। क्यों, भतीजे ?

मनोहर : हां, चचा। पचास रुपये की रकम कम थोड़ी होती है।

रामगोपाल : (हँसते हुए) अजी साहब, पचास रुपये से काम नहीं चलेगा। मैंने पैंतालीस हजार लगाए हैं।

प्रेमचंद : कोई बात नहीं, सेठजी। पचास हजार ही सही। क्यों, भतीजे ?

मनोहर : हां, चचा।

श्यामलाल : प्रेमचंद साहब, आप धंधा क्या करते हैं ?

प्रेमचंद : माल अन्दर बाहर करता हूं, क्यों, भतीजे ?

मनोहर : हां, चचा। अपना अन्दर बाहर का धंधा है।

श्यामलाल : लाला दमड़ीमल, आपने क्या मैदान छोड़ दिया ?

दमड़ीमल : मैं कच्चा खिलाड़ी नहीं हूं, भाईजी। मैं ब्लैंक चैक पर दस्तखत करके दे दूंगा।

रामगोपाल : चैक पर विश्वास मत करिएगा, श्यामलालजी। दस्तखत न मिले तो बाद में पछताइएगा।

लक्ष्मी : तो आप क्या दे रहे हैं, सेठजी ?

रामगोपाल : मैं बैंक की पास बुक ही दे दूंगा।

मनोहर : क्यों, चचा, आप क्या कहते है ?

प्रेमचंद सोचना पड़ेगा। क्यो, भतीजे ?

मनोहर : हा, चचा। मेरे ख्याल से लडके को किडनैप कर लो, चचा।

प्रेमचद . धीरे बोलो, भतीजे।

श्यामलाल आप तो बहुत खतरनाक आदमी मालूम होते हैं, प्रेमचंद साहब।

प्रेमचंद : आप भतीजे की बात पर मत जाइए। अभी नासमझ है। क्यों, भतीजे ?

मनोहर हा, चचा।

प्रेमचद : श्यामलालजी, तो फिर ऐसा करिए कि आपका लड़का जो मागेगा, मै दे दूगा।

श्यामलाल : थ्रू प्रोपर चैनल बात करिए।

मनोहर · चचा, श्यामलालजी को अपने बेटे पर भरोसा नही है। क्या पता मुफ्त मे ही शादी कर बैठे।

प्रेमचद : ठीक कहते हो, भतीजे। (श्यामलाल से) मुझे कोई एतराज नही, श्यामलालजी। आप जो कहेंगे, मैं देने को तैयार हूं।

श्यामलाल : (धीरे से, लक्ष्मी से) अब तो खुश हो जाओ। न मेरे साला रहे, न तुम्हारे सेठ। और पैसा भी मुहमागा मिल रहा है। इस खुशी मे अब तो इन लोगो को चाय पिला दो। जाओ, ले आओ।

लक्ष्मी : (धीरे से) तुम भी साथ चलो।

श्यामलाल : (धीरे से) क्यो ?

लक्ष्मी : (धीरे से) मेरे पीछे तुम कही कम पैसे माग बैठे तो ?

श्यामलाल : (धीरे से) तुम्हे तो आज तक मुझ पर यकीन नही हुआ।

लक्ष्मी . (धीरे से) तुम हरकत ही ऐसी करते हो।

श्यामलाल : (अन्य लोगों से) आप लोग तब तक गपशप मारिए। हम आपके लिए चाय का इन्तजाम करने जा रहे हैं। (दोनों जाते हैं।)

मनोहर : चचा।

प्रेमचंद : कहो, भतीजे।

मनोहर : मुंहमांगे रुपये लाओगे कहां से ?

प्रेमचंद : फिक्र न करो, भतीजे। अपना जो माल अन्दर बाहर करने का धंधा है, उसमे थोड़ा जोर और लगाना पड़ेगा। हमें कोई दिक्कत नहीं, भतीजे। दिक्कत तो इन लालाजी और सेठजी को हो सकती है। क्यों, भतीजे ?

मनोहर : हां, चचा। लालाजी परचून की दुकान पर डंडी मार-मारकर आखिर कितना कमा लेंगे ?

दमड़ीमल : (तुनककर) क्या कहा ?

प्रेमचंद : भतीजे, लालाजी को एक बार फिर समझाओ कि इनके धंधे के बारे में तुम्हारी क्या राय है।

मनोहर : लालाजी, सारी जिन्दगी डंडी मारते रहोगे फिर भी हमारे चचा के बराबर रुपया नहीं देख पाओगे। क्यों, चचा ?

प्रेमचंद : हां, भतीजे।

दमड़ीमल : अजी, तुमने क्या मुझे मामूली लाला समझा है ! अनाज का बहुत बड़ा थोक व्यापारी हूं। इतना कमाया है कि खुद भी पता नहीं कितना रुपया पास है।

मनोहर : लालाजी, क्या चोर बाजारी करते हो ?

दमड़ीमल : अजी, राम का नाम लो ! बड़ी मेहनत की कमाई है।

प्रेमचंद : हमें तो आपकी बात का यकीन नहीं होता, लालाजी।

दमड़ीमल : मत हो। पर मैं आसानी से मात खाने वाला नहीं हूं। लड़की मेरी ही आएगी इस घर में।

रामगोपाल : मैं भी पीछे हटने वाला नहीं हूं, लाला दमड़ीमल। मैं तुम जैसों को दस बार खरीद सकता हूं।

मनोहर : आपका क्या धंधा है, सेठजी ?

रामगोपाल : मैं चीनी का थोक व्यापारी हूं। लाखों कमाए हैं।

प्रेमचंद : जरूर कमाए होंगे।

मनोहर : मुनाफाखोरी में। क्यों, चचा ?

प्रेमचंद : हां, भतीजे।

रामगोपाल : देखिए, साहब, गलत बात मत कहिए।

प्रेमचंद : फिर भी इतना तो जरूर कहूंगा कि मेरे मुकाबले का आप दोनों में से कोई नहीं है। क्यों, भतीजे ?

मनोहर : हां, चचा। लेकिन, चचा, अगर लालाजी और सेठजी हमें पांच-पांच हजार दें तो हम मैदान से हट सकते हैं।

दमड़ीमल : चचा, तुम्हारे भतीजे ने ठीक सलाह दी है। हम अपना *आखिरी हथियार जब छोड़ेंगे तो तुम फ्लैट हो जाओगे।*

रामगोपाल : लाला दमड़ीमल के वार में बच भी गए, चचा, तो मैं चित्त कर दूंगा।

प्रेमचंद : देखते जाओ, कौन किससे चित्त करता है। क्यों, भतीजे ?

मनोहर : हां, चचा।

[लक्ष्मी और श्यामलाल आते हैं]

लक्ष्मी : लीजिए, आप लोग पहले चाय पी लीजिए।

श्यामलाल : देखिए, तकल्लुफ मत करिएगा।

प्रेमचंद : तकल्लुफ काहे का ? अब तो हम आपको अपना समधी समझते हैं। क्यों, भतीजे ?

मनोहर : हां, चचा।

[श्यामलाल, प्रेमचंद और मनोहर हंसते हैं]

लक्ष्मी : सेठजी, आप सुस्त क्यों हो गए ? लीजिए, चाय पीजिए।

श्यामलाल : लालाजी, चाय तो पीजिए। धंधे में नफा नुकसान तो लगा ही रहता है।

दमड़ीमल : देखिए, श्यामलालजी, मैं आखिरी बात कहे देता हूं।

श्यामलाल : कहिए, कहिए।

दमड़ीमल : *प्रेमचंद साहब से आप जितना मांगेंगे,* मैं उससे पांच हजार ज्यादा देने को तैयार हूं। आप सोच लीजिए।

रामगोपाल : लेकिन पहले मेरी भी सुन लीजिए। लाला दमड़ीमल से मैं पांच हजार ज्यादा देने को तैयार हूं। अब आप खूब सोच लीजिए।

मनोहर : चचा, हम तो फ्लैट हो गए।

प्रेमचंद : देखते जाओ, भतीजे। आखिरी दांव मेरा ही पड़ेगा।

श्यामलाल : आप लोगों ने बड़ी उलझन में डाल दिया। मैं जरा लड़के की मां से सलाह कर लूं।

मनोहर : हां, हां, जरूर। एक कोने में चुपके-चुपके सलाह कर लीजिए।

श्यामलाल : आप लोग तब तक चाय पीते रहिए। (दोनों एक कोने में जाते हैं और फुसफुसा कर बात करते हैं।)

[बरामदा।]

लक्ष्मी : ओहो, तो प्रेमचंद से डरने की क्या जरूरत है? वह कोई तुम्हारी बीवी थोड़े ही है। भगवान का नाम लेकर नब्बे हज़ार मांग लो।

श्यामलाल : (अटकते हुए) नब्बे···ह···जा···र?

लक्ष्मी : हां। फिर लाला दमड़ीमल पिच्चानवे बोलेंगे और सेठ रामगोपाल एक लाख।

श्यामलाल : (प्रसन्न) तब तो मैं लखपति बन जाऊंगा और तुम लखपत्नी।

लक्ष्मी : (प्रसन्न) हां, अब चलो।

[प्रताप का प्रवेश]

प्रताप : नमस्ते, पिताजी! नमस्ते, मां!

लक्ष्मी : जुग जुग जियो, प्रताप बेटा।

श्यामलाल : लखपति और लखपत्नी का बेटा कहो।

प्रताप : (आश्चर्य से) लखपति? लखपत्नी?

श्यामलाल : हां, बेटा। अभी बताऊंगा। लोग कब से तेरे इन्तजार में बैठे हैं। आओ, मेरे साथ।

श्यामलाल : बेटा, इनसे मिलो—लाला दमड़ीमल, सेठ रामगोपाल, प्रेमचंद साहब, और मनोहर साहब और यह है मेरा बेटा प्रताप।

प्रताप : नमस्ते। आप लोग बैठिए न—खड़े क्यों हो गए?

श्यामलाल : बेटा प्रताप, ये सब सज्जन तेरी शादी की बातचीत के सिलसिले में आए हैं।

प्रताप : (आश्चर्य से) मेरी शादी?

श्यामलाल : हां, बेटा। और सभी एक से एक बढ़कर रुपया देने को तैयार हैं।

प्रताप : मैं माफ़ी चाहता हूं।

प्रेमचंद : क्यों, बेटा, तुमने कोई गुनाह किया है ?

प्रताप : मेरी शादी हो चुकी है।

दमड़ीमल . (आश्चर्य से) ऐं !

रामगोपाल : (आश्चर्य से) सचमुच ?

श्यामलाल · (गुस्से से) क्या कहा—शादी हो चुकी ?

प्रताप : हां, पिताजी। पिछले हफ्ते मैंने एक गरीब बाप की सुशील लड़की से मद्रास में शादी कर ली।

श्यामलाल : (गुस्से से) हमसे पूछे बगैर ही ?

प्रेमचंद . शादी तो यू प्रोपर चैनल करनी चाहिए थी। क्यों, भतीजे ?

मनोहर : हां, चचा।

प्रताप : पिताजी मुझे डर था कि आप ऐसी शादी के लिए तैयार न होंगे जिसमें रुपया न मिले। फिर भी मैं चाहूंगा कि आप हम दोनों को आशीर्वाद दें। इसीलिए मैं आपकी बहू को भी साथ लाया हूं।

श्यामलाल : अरे नालायक, तेरे कारण मैं लखपति बनता-बनता रह गया और तेरी मां लखपत्नी बनने के सपने ही देखती रही।

प्रताप : आपकी बहू लाखों में एक है।

लक्ष्मी : (बनावटी क्रोध से) शरम नहीं आती तुझे हमारे सामने अपनी बहू की तारीफ करते ! चल, दिखा कहां है तेरी बहू !

प्रताप : बाहर सड़क पर कार में ?

लक्ष्मी : (डांट कर, श्यामलाल से) तुम खड़े-खड़े छत पर क्या ताक रहे हो, जी। चलो मेरे साथ।

श्यामलाल . चलो, चलना ही पड़ेगा।

[श्यामलाल, लक्ष्मी और प्रताप जाते हैं]

रामगोपाल : लाला दमड़ीमल, तुम्हारा रुपया किसी काम नहीं आया।

दमड़ीमल : तुमने ही कौन से तीर चला लिए ?

प्रेमचंद : लेकिन मेरा काम तो बन गया। क्यों, भतीजे ?

मनोहर : हां, चचा।

प्रेमचंद : भतीजे, जरा ये इन्वीटेशन कार्ड तो लालाजी और सेठजी को

देकर कहो कि हमारे साथ चलें।

[मनोहर दोनों को वारंट गिरफ्तारी दिखाता है।]

दमड़ीमल : लेकिन हमने किया क्या है ?

प्रेमचंद : भतीजे, इन्हें बताओ।

मनोहर : लाला दमड़ीमल, आपने चोरबाजारी की है, और, सेठ रामगोपाल, आपने मुनाफाखोरी।

प्रेमचंद : हम तो असल में आप लोगों को गिरफ्तार करने ही आए थे—चचा भतीजे बनकर। आपके छिपे गोदामों पर छापा पड़ चुका है। क्यों, भतीजे ?

मनोहर : हां, चचा।

[दमड़ीमल और रामगोपाल को गिरफ्तार करके मनोहर और प्रेमचंद बाहर चलते हैं। लक्ष्मी बहू को लेकर अन्दर आती है, पीछे श्यामलाल प्रताप के कंधे पर हाथ रखे आते हैं। आमना-सामना होने पर बाहर जाने वाले और अन्दर आने वाले लोग—बहू को छोड़कर—एक दूसरे को चुपचाप हाथ जोड़ते हैं।]

बीमा करवा लो !

पात्र-परिचय :

महावीर : मध्यवर्गीय, कसरती शरीर, उमर ३०, मूंछें, छोटे बाल, कुरता, धोती, खुश मिजाज।

रानी : महावीर की पत्नी, भारी शरीर, उमर २५, सादी धोती, पति की आज्ञाकारिणी।

आनन्द : बीमा एजेंट, दुबला-पतला, चेहरे पर 'बेचारापन', बुशशर्ट, पतलून, उमर ३५।

(महावीर की बैठक)

आनन्द : (अंदर आकर, कुछ झिझकते हुए) नमस्ते !

महावीर : (गंभीर) नमस्ते ! कहिए ?

आनन्द : (नम्रता से) आप मुझसे परिचित नहीं हैं, पर···

महावीर : (चिढ़कर) आप मुझसे परिचित हैं—यही कहना चाहते हैं न आप ?

आनन्द : (सकपका कर) जी···जी···हां···

महावीर : (नाराज) आप क्यों परिचित है मुझसे ?

आनन्द : (आश्चर्य से) जी ? मैं समझा नहीं।

महावीर : (नाराज) क्यों नहीं समझे ?

आनन्द : (नम्रता से) जी, समझ गया।

महावीर : (नाराज) क्या समझ गए ?

आनन्द : (नम्रता से) यही कि जैसा सुना था, आप वैसे ही निकले।

महावीर : (नाराज) क्या सुना था ?

आनन्द : (खुशामदी लहजे में) कि आप बहुत खुशमिजाज हैं।

महावीर : (प्रसन्न) ओह, तो आप मेरी तारीफ कर रहे हैं ! वेरी गुड ! वेरी गुड ! हम प्रसन्न हुए। मैं क्या सेवा कर सकता हूं आपकी ?

आनन्द : (आश्वस्त) जी, सेवा तो मैं करना चाहता हूं आपकी।

महावीर : यह नहीं हो सकता, सेवा मैं करूंगा।

आनन्द : जी, नहीं, सेवा मैं करूंगा।

महावीर : जी, नही, मैं !
आनन्द . जी, नही, मैं !
महावीर : जी, मैं !
आनन्द : जी, मैं !
महावीर . मैं !
आनन्द . मैं !
महावीर . अच्छा, ठहरिए। अभी इसका फैसला हो जाता है।
आनन्द · कैसे ?
महावीर · (आवाज देकर) रानी !
आनन्द · मेरा नाम रानी नही है।
महावीर · हो भी नही सकता।
आनन्द . फिर आप मुझे रानी कहकर क्यो पुकार रहे है ?
महावीर : आपको गलतफहमी हो गई। रानी मेरी उनका नाम है।
आनन्द : उनका किनका ?
महावीर . आप एकदम बुद्धू मालूम होते हैं।
आनन्द : एकदम तो नही, पर हां, थोडा-सा हूं।
महावीर : जनाब, घरेलू शब्दकोश में उनका अर्थ है—पत्नी, बीवी,जोरू।
आनन्द : ओह, समझा ! आप शादीशुदा भी हैं। यह तो और भी अच्छा रहा।
रानी : (आते हुए) जी !
महावीर : यह साहब कहते हैं कि इन्हे मेरी सेवा करनी चाहिए।
रानी : क्यों ?
महावीर : कोई विशेष कारण नही बताया अब तक। और मैं कहता हूं कि मुझे इनकी सेवा करनी चाहिए।
रानी : क्यों ?
महावीर : इसलिए कि इन्होने मेरी तारीफ की है। अब तुम्ही इस बात का फैसला करो, रानी।
आनन्द : देखिए, बिलकुल निष्पक्ष होकर फैसला करिएगा।
रानी : यह कोई मुश्किल काम थोड़े ही है। क्योंकि आपने इनकी तारीफ

की है, इसलिए सेवा का अवसर इन्हें ही मिलना चाहिए।

महावीर : जय हो ! जय हो ! इसे कहते हैं सच्चा न्याय !

आनन्द : मैं इस फैसले के खिलाफ अपील करूंगा।

महावीर : अपील कहां करोगे ? यह तो सुप्रीम कोर्ट का फैसला है।

आनन्द : (निराश) तब तो लाचारी है।

महावीर : रानी, अब तुम भूल जाओ कि तुम सुप्रीम कोर्ट हो, और गृहलक्ष्मी बन जाओ।

रानी : जो आज्ञा।

महावीर : तो गृहलक्ष्मी के कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए हमारी ओर से इनकी सेवा का प्रबन्ध करो।

रानी : क्या सेवा की जाए ?

महावीर : यह मैं तुम्हारी सूझबूझ और कामनसेंस पर छोड़ता हूं।

रानी : अच्छा, अभी एक गिलास पानी भिजवा देती हूं। (जाती है)

महावीर : अच्छा, जनाब, सेवा तो आपकी हो गई। लेकिन इस चक्कर में आपका नाम, धाम और काम तो पता ही नहीं चला।

आनन्द : (नम्रता से) मेरा नाम है आनन्द, धाम है बाजार सीताराम, और काम है बीमा !

महावीर : कौन-सी मां ?

आनन्द : मैंने कहा बीमा।

महावीर : अपने पल्ले कुछ नहीं पड़ा। बड़ी मां, छोटी मां, धाय मां, गाय मां तो सुना है, पर यह बी मां कौन है ?

आनन्द : जी, मा यानी मदर नहीं, मेरा मतलब बीमा यानी इंश्योरेंस से है।

महावीर : ओह, समझा।

आनन्द : मैं इसीलिए आपके पास आया था। आप पढ़े-लिखे आदमी हैं···

महावीर : (बीच में) हां···हां···इस गलतफहमी में मत रहिएगा।

आनन्द : (आश्चर्य से) लेकिन बाहर आपकी नेमप्लेट पर आपके नाम के आगे बी० ए० की डिग्री जुड़ी हुई है।

महावीर : ओह, वह डिग्री ! आप भी धोखा खा गए ! (हँसता है) वह

डिग्री मेरी नहीं है।

आनन्द : फिर किसकी है ?

महावीर : मेरे पड़ोसी की। आजकल वह पहाड़ गया हुआ है। चोरी के डर से अपनी डिग्री मुझे दे गया है।

आनन्द फिर भी अक्लमन्द आदमी हैं।

महावीर : हां···हां···आपको फिर गलतफहमी हो गई। अक्ल नाम की किसी चीज से अपना कोई सम्बन्ध नहीं है।

आनन्द : यह कैसे हो सकता है ?

महावीर : क्यों नहीं हो सकता ? मैं अभी साबित कर दूंगा। (आवाज देकर) रानी !

रानी : (आते हुए) जी !

महावीर : मैं अक्लमन्द हूं या बेवकूफ—तुम्हीं इस बात का फैसला कर दो।

रानी अक्ल की आज तक कोई बात की हो तुमने, तो कोई तुम्हें अक्लमन्द कहे भी। उस दिन बैंगन लाने को कहा तो कद्दू उठा लाए।

आनन्द : लेकिन, भाभीजी, कद्दू बैंगन की बात दूसरी है। मैं तो···(रानी जाती है)

महावीर (बीच में) आनन्दजी, आप मेरे छोटे भाई किधर से पैदा हो गए ? मेरे स्वर्गीय पिताजी ने तो कभी आपकी पैदाइश का जिक्र नहीं किया।

आनन्द · इन्सान के नाते हर कोई भाई-भाई है।

महावीर : गलत बात है। मेरा बेटा इन्सान है, पर वह मेरा भाई कभी नहीं हो सकता !

आनन्द : आपका बेटा भी है ?

महावीर · आपको कोई एतराज है ?

आनन्द : जी, नहीं, मुझे तो सुनकर खुशी हुई।

महावीर : लो और सुनो—बेटा मेरा है और खुशी इन्हें हो रही है !

आनन्द : हां, साहब ! क्यों नहीं होगी ! आपका भरापूरा परिवार है। सुन्दर भविष्य, सुनहरे सपने···

महावीर : (बीच में) सुनिए।

आनन्द : जी।

महावीर : आप कवि तो नहीं हैं ?

आनन्द : नहीं।

महावीर : तो फिर आप ऐसी बहकी-बहकी बातें क्यों कर रहे हैं ?

आनन्द : नहीं तो।

महावीर : नहीं तो क्या — सुन्दर भविष्य ! सुनहरे सपने ?

आनन्द : नहीं, साहब, आप गलत समझे। मैं कह रहा था कि आप जैसे जिम्मेदार आदमी को परिवार के भविष्य का खयाल करके अपना बीमा अवश्य करवा लेना चाहिए।

महावीर : ओह, तो आप इतनी देर से यही कहना चाहते थे ?

आनन्द : जी !

महावीर : तब तो, जनाब, आपने अपना समय बेकार ही नष्ट किया।

आनन्द : क्यों ?

महावीर : इसलिए कि मुझे अपना बीमा नहीं करवाना है।

आनन्द : मैं तो कहूंगा कि आप बहुत बड़ी गलती करेंगे।

महावीर : क्यों ?

आनन्द : आपके बाद आपके बीवी बच्चे किस का मुंह देखेंगे ?

महावीर : यह भी आपने खूब कही ! मुह देखना होगा तो मेरी फोटो देख लेंगे।

आनन्द : आप तो हर बात मजाक में उड़ा रहे हैं।

महावीर : खुशमिजाज जो हूं।

आनन्द : अब थोडी देर गम्भीर होकर इस समस्या पर विचार करिए।

महावीर : अरे साहब, जब मुझे अपनी बीवी बच्चे की चिन्ता नहीं, तो आप को क्यों हो रही है ? आप कौन लगते हैं उनके ?

आनन्द : एक शुभचिन्तक।

महावीर : अरे साहब, मुझे क्या जरूरत है इस पचड़े में पड़ने की !

आनन्द : आप अपनी बीवी का खयाल तो करिए।

महावीर : मेरे मरने के बाद मेरी बीवी का क्या प्रोग्राम होगा—यह वह

जाने।

आनन्द : आप भाभीजी को बुलाइए। वह अवश्य मेरी बात समझ जाएगी।

महावीर : (आवाज देकर) रानी, यह साहब पूछ रहे हैं कि मेरे मरने के बाद तुम्हारा क्या प्रोग्राम होगा?

रानी : (आते हुए क्रोधित) क्या कहा? मुझे गाली देता है! मैं तेरा मुंह नोच लूंगी···

आनन्द : (घबराकर, बीच में) न···न···न···मैं···मैं···मैं···

रानी : (क्रोधित) न···न···मैं···मैं···क्या करता है!

आनन्द : आ···प···समझी···न···न···नहीं···

रानी : मैं खूब समझती हूं। प्रोग्राम पूछ रहा है!

आनन्द मैं सच कहता हूं···

रानी : अभी तेरे सच झूठ का फैसला करती हूं। (पुकार कर) ललुआ! जरा झाड़ू तो लाना! और देख, नई वाली लाइयो! पुरानी झाड़ू में सीकें कम हैं।

आनन्द : (स्वतः) मैं कहां फंस गया! कम्पनी वालों ने ट्रेनिंग पीरियड में कभी नहीं बताया कि ऐसा मौका आने पर क्या करना चाहिए? हे महावीर स्वामी, रक्षा करो! (हनुमान चालीसा का पाठ करता है)

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर, जय कपीस तिहुं लोक उजागर।
भूत पिचास निकट नहिं आवैं, महावीर जब नाम सुनावैं।

महावीर : वत्स, तुमने हमें पुकारा?

आनन्द : तुम्हें क्यों पुकारूंगा? तुमने ही तो मुझे इस संकट में फंसाया है।

महावीर : वत्स, तुमने यह हमारी नेम प्लेट नहीं देखी क्या? ध्यान से देखो—क्या लिखा है?

आनन्द : महावीर!

महावीर : अब जान गए, वत्स? बोलो, तुम्हारे ऊपर क्या संकट आया है?

आनन्द : झाड़ू! हे नकली महावीर स्वामी, इस झाड़ू रूपी संकट से अपने इस नकली वत्स को उबारो।

महावीर : वत्स, पहले यह बताओ हमें प्रसाद चढ़ाओगे या नहीं ?

आनन्द : अवश्य चढ़ाऊंगा।

महावीर : कितने का ?

आनन्द : जितने का कहोगे !

महावीर : स्वीकार है !

आनन्द : हां, तो अब रक्षा करो।

महावीर : रानी, हमारा भक्त नालायक है। अपने क्रोध को पी जाओ और इसके अपराध को क्षमा करो।

रानी : जो आज्ञा। (जाती है)

आनन्द : धन्य हो ! नकली महावीर स्वामी की जय !

महावीर : वत्स, अब प्रसाद चढ़ाने का समय आ गया।

आनन्द : अवश्य। मैं अभी सवा रुपये की बरफी लेकर आता हूं। (जाने लगता है)

महावीर : ठहरो !

आनन्द : ठहर गया।

महावीर : इधर आओ।

आनन्द : (पास आकर) आज्ञा !

महावीर : बरफी हमें हजम नहीं होती।

आनन्द : कंदमूल लाऊं ?

महावीर : नहीं। आजकल मौसम खराब है। अखबार वाले कहते हैं कंदमूल खाने से हैजा और गैस्ट्रो एंट्राइटिस हो जाने का डर है।

आनन्द : फिर जो इच्छा हो आपकी।

महावीर : तुमने कहा था कि हर जिम्मेदार आदमी को अपने परिवार के भविष्य का खयाल करके बीमा अवश्य करवा लेना चाहिए।

आनन्द : (घबराकर) कहा तो था—गलती हो गई।

महावीर : तुमने ठीक ही कहा था। प्रोपोजल फार्म निकालो।

आनन्द : (प्रसन्न होकर) धन्य हो ! यह लीजिए प्रोपोजल फार्म।

महावीर : कलम निकालो।

आनन्द : यह लीजिए।

महावीर : फार्म पर दस्तखत करो।

आनन्द : (आश्चर्य से) जी ? मैं दस्तखत करूं ?

महावीर : हां, तुम सिर्फ दस्तखत कर दो। बाकी फार्म मैं भर लूंगा।

आनन्द : आप ?

महावीर : हां, मैं भी बीमा एजेंट हूं। और हमारी इच्छा तुम्हारा पांच हजार का बीमा करने की है।

आनन्द : ऐं ! मर गए !

महावीर : मर नहीं गए, बच गए—झाड़ू से !

[आनन्द प्रोपोजल फार्म पर दस्तखत करता है]

हाय, मर गया !

पात्र-परिचय :

बिरजू : मजदूर वर्ग, दुबला-पतला, शक्लसूरत से खासा, गंजा, उमर २५, बनियान धोती।

दीनू : बिरजू का जिगरी दोस्त, मजदूर वर्ग, कसरती शरीर, पतली नुकीली मूंछें, बहुत छोटे बाल, आंखों मे काजल, गले में तावीज, उमर २५, रंगीन बनियान के ऊपर मलमल का घर का धुला कुरता, धोती, खुश मिजाज।

डॉक्टर : फटीचर टाइप जिसके पास गलती से मरीज आ जाते हैं, ढीलाढाला सूट, उमर ५०।

(बिरजू की मामूली-सी कोठरी)

बिरजू : (विलाप करते हुए, जोर से) हाय, मर गया। एकदम मर गया! जड़ से मर गया! हाय! हाय!

दीनू : (आता है, बिरजू को देखकर ताली बजाते हुए मुस्कराकर) शाबाश! बहुत बढ़िया एक्टिंग है! कौन-से नाटक का रिहर्सल कर रहा है, बिरजू!

बिरजू : (नाराज) हाय! हाय! तेरे मुंह में कीड़े पड़ें, दीनू! तू···

दीनू : (हंसकर) मेरे मुंह में कीड़े नहीं पड़ सकते, बिरजू, रोज सुबह-शाम नमक के पानी से गरारे करता हूं।

बिरजू : (नाराज) तुझे यह रिहर्सल दिखाई दे रही है?

दीनू : सुनाई भी दे रहा है, बिरजू। (हंसता है)

बिरजू : (जैसे अपना दुख याद आ जाता है) हाय, मर गया! एकदम मर गया! दीनू, मर गया! क्यों, बे? क्या तुझे अपने जिगरी दोस्त की बात पर यकीन नहीं?

दीनू : तो ले यकीन किए लेता हूं। (रोने लगता है) हाय, अभी से चल बसा तू, बिरजू! अभी तो तेरे बाप के दांत भी नहीं टूटे थे! अभी तो तू रोटी को घोटी, पानी को पानी ही कहता था! हाय! हाय!

बिरजू : (रोते हुए) हाय! हाय! मर गया!

दीनू : (डांटते हुए) यार बिरजू, बार-बार क्यों मरता है! एक बार मरना काफी नहीं है?

बिरजू : (रोते हुए) हाय ! हाय ! मर गया !

दीनू : (ढाढस बंधाते हुए) बिरजू, रो मत, मैं तेरा जिगरी दोस्त हूं। तेरे काम मैं नहीं तो और कौन आएगा ! फिक्र मत कर।

[बिरजू रोता रहता है]

बिरजू : (एकदम) ओ दीनू ! सुन तो !

दीनू : क्या है ?

बिरजू : मुझे एक बात अभी-अभी याद आ गई।

दीनू : क्या ?

बिरजू : यही कि मैं मरा नहीं हूं।

दीनू : (हँसता है) अरे यार, क्या मजाक करता है ! अच्छा-खासा तो मर गया था।

बिरजू : अब पूरी बात तो सुन ले।

दीनू : अच्छा, सुना। पर, यार, जरा जल्दी कर।

बिरजू : मैं सचमुच नहीं मरा हूं।

दीनू : (हँसकर) अबे बिरजू, तेरी झूठ बोलने की आदत नहीं गई ? सारी जिंदगी झूठ बोला, अब मर कर भी झूठ बोल रहा है।

बिरजू : अरे यार, तू सुनता तो है नहीं।

दीनू : अच्छा सुना।

बिरजू : बात यह है कि मैं जीतेजी मर गया।

दीनू : (हँसकर) लो और सुनो। यह नई किस्म की मौत ईजाद की है तूने ! खैर, अब मैं चलता हूं।

बिरजू : अरे, सुन तो।

दीनू : सुन तो लिया, खामखां देर कर रहा है। मैं कहता हूं सात बजे दुकान बंद हो जाएगी, तो किरियाकरम का सामान…

बिरजू : (दर्द भरी आवाज में) मेरे प्यारे ! मेरे दुलारे !

दीनू : (लौटकर) कहो, मेरे दुखियारे !

बिरजू : मेरे सीने पर हाथ रख।

दीनू : ले, रख दिया।

बिरजू : क्या कहता है ?

दीनू . दिल धड़क रहा है।

बिरजू नहीं, फड़क रहा है। अब मेरी नब्ज पर हाथ रख।

दीनू . ले, रख दिया।

बिरजू · क्या कहती है ?

दीनू . नब्ज चल रही है।

बिरजू . नहीं, उछल रही है। अब मेरे सिर पर हाथ रख।

दीनू : ले, रख दिया। (एकदम हाथ खींच कर चीख पड़ता है) हाय, जल गया ! मेरा हाथ जल गया !

बिरजू · यही तो ! मेरा सिर तवे की माफिक जल रहा है। उसमें से ज्वालामुखी की माफिक गरम-गरम गैस उठ रही है।

दीनू : तभी तेरे सिर के बाल उड़ गए ?

बिरजू : हां, घंटा भर पहले जो बाल कवियों की लटों से मुकाबला करते थे, एकदम ऐसे गायब हो गए जैसे गधे के सिर से सींग।

दीनू . (हँसते हुए) ठीक कहता है, यार बिरजू, तू। तुझ जैसे गधे के सिर पर सींग हो भी कैसे सकते हैं !

बिरजू : मैं गधा हूं ? इस अहम मसले पर फिर गौर करेंगे। पहले तू यह बता कि जिसका दिल फड़क रहा हो, नब्ज उछल रही हो, सिर में से गरम-गरम गैस निकल रही हो, वह जीतेजी नहीं मर गया क्या ?

दीनू : (झुंझला कर) अरे यार बिरजू, मुझे शांति से सोचने तो दे।

बिरजू : (रोते हुए) तू सोच न, मैं मना थोड़े ही कर रहा हूं। हाय ! मर गया !

दीनू : (एकदम) सोच लिया !

बिरजू : (रोना बंद कर, आंसू पोंछते हुए) क्या सोचा ?

दीनू : वाकई, बिरजू, तू जीतेजी मर गया।

बिरजू : (प्रसन्न) हां, यह बात हुई न !

दीनू : पर, बिरजू, यह नई किस्म की मौत तुझे आई कैसे ?

बिरजू : बताता हूं, जरा पास को आ जा।

दीनू : ले, आ गया।

बिरजू : मुझे इश्क हो गया है।

दीनू : (आश्चर्य से) कौन-सा शक ?
बिरजू : अबे खब्ती, ईशक ! ईशक ! समझ गया ?
दीनू : हां, समझ गया।
बिरजू : क्या समझा ?
दीनू : ए, बी, सी, डी, ई···
बिरजू : दीनू, अंग्रेजी कब से पढने लग गया ?
दीनू : अबे, अंग्रेजी नही, मैं अंग्रेजी ई शक की बात कर रहा हूं।
बिरजू : अच्छा बता।
दीनू : अंग्रेजी डॉक्टर कहते है कि अंग्रेजी में ए, बी, सी, डी, और ई पांच तरह के बिटामिन हैं, तुझे जो शक हुआ है उसमें ई बिटामिन है, तभी उसे ई शक कहते हैं। पर, बिरजू, ई शक खाने से तू जीतेजी मर गया ? तुझे तो मरतेजी जिंदा हो जाना चाहिए था। ई विटामिन में बडी ताकत होती है।
बिरजू : अबे बुद्धू, यह ताकत वाला ईशक नहीं है।
दीनू : फिर कौन-सा है ?
बिरजू : यह वह वाला ईशक है जिसे हिन्दी मे कहते है परेम।
दीनू : (बेतहाशा हंसते हुए) वाह, मेरे मिट्टी के गधे !
बिरजू : (नाराज) देख, दीनू, मेरी तारीफ ही करना चाहता है तो मिट्टी का शेर कह, गधा नही।
दीनू : मैं तो नही कहता मिट्टी का शेर !
बिरजू : तो कुछ और कह दे, पर गधा नहीं।
दीनू : मिट्टी का बाघड़बिल्ला कहने से काम चलेगा ?
बिरजू : बाघड़बिल्ला ? चलेगा। बाघड़बिल्ला भी तो शेर का रिश्तेदार ही होता है।
दीनू : अच्छा, मेरे मिट्टी के बाघड़बिल्ले, यह तो बता कि तुझे परेम का रोग हुआ कैसे ?
बिरजू : (सांस भर कर) अरे यार, क्या बताऊं ! गीदड़ की जब मौत आती है, तो वह गांव की ओर भागता है। और जब मेरी मौत आई तो मैं मनीषा की तरफ भागा।

दीनू : यानी तू बाइसकोप देखने गया था ?
बिरजू : हां, और बाइसकोप के परदे पर एक लौंडा एक लौंडिया से ईशक करने लगा। पहले तो मैं चुपचाप देखता रहा। मैंने सोचा मेरा क्या बिगड़ता है, करने दो साले को ईशक। पर इंटरवैल के बाद—हाय ! दीनू ! हाय ! हाय !
दीनू : इंटरवैल के बाद क्या वह लौंडा हाय हाय करने लगा ?
बिरजू : वह नहीं, मैं हाय हाय करने लगा।
दीनू : क्यों ?
बिरजू : मुझे भी ईशक होने लगा।
दीनू : सच ?
बिरजू : सौ पैसे सच।
दीनू : हूं ! लगता है यह ईशक छूत की बीमारी है। उस लौंडे से यह तुझे लगी।
बिरजू : हां।
दीनू : तुझसे मुझे भी लग सकती है ?
बिरजू : हां।
दीनू : और मुझ से सारे मुहल्ले को लग सकती है ?
बिरजू : हां।
दीनू : तो इस छूत की बीमारी की रोकथाम के लिए हमें फौरन कमेटी में रपट लिखवानी चाहिए।
बिरजू : जरूर लिखवानी चाहिए।
दीनू : कमेटी वाले पूछेंगे कि तुझे ईशक किससे हुआ है, तो रपट मे किसका नाम लिखाएगा ?
बिरजू : नाम ? अरे, हां, यार.। यह तो मुझे भी नही मालूम। पता नही वह कलमुंही है कौन ?
दीनू : कलमुंही न सही, यही पता लग जाए कि यह परसोंमुंही कौन है ?
बिरजू : यही तो टेढ़ी खीर है।
दीनू : बिरजू, तूने कभी खीर खाई है ?
बिरजू : नहीं।

दीनू : फिर तुझे कैसे पता कि खीर टेढ़ी होती है ?
बिरजू : तूने खाई है खीर ?
दीनू : हां ।
बिरजू : तो तू ही बता खीर कैसी होती है ?
दीनू : (होंठों पर जबान फेरकर) मीठी ।
बिरजू : चल, मान लिया । पर ईशक वाली का नाम कैसे पता लगे ?
दीनू : जरा सोचने दे । (सोचने लगता है) हूं...हूं... (एकदम घबराकर) बिरजू !
बिरजू : क्या हुआ ? घबरा क्यों रहा है ?
दीनू : (घबराकर) जल्दी से एक रस्सी तो ला।
बिरजू : रस्सी···अच्छा···लाता हूं । ले यह रही रस्सी। अब बता क्या करेगा रस्सी का ?
दीनू : मेरी कमर में बांध दे।
बिरजू : (आश्चर्य से) क्यों ?
दीनू : (झुंझलाकर) क्यों-क्यों क्या कर रहा है ? पहले बांध।
बिरजू : ले बांध दी।
दीनू : अब मुझे ऊपर खींच ।
बिरजू : पागल हुआ है ? यह क्या मजाक है ?
दीनू : मज़ाक नहीं है, बिरजू, तुझे दिखाई नहीं देता कि मैं कितने गहरे सोच में डूब गया हूं ? रस्सी ऊपर खींचकर मुझे बाहर निकाल जल्दी से ।
बिरजू : धत् तेरे की ! अच्छा, निकालता हूं। (रस्सी खींचता है। दीनू दो-चार कदम पीछे को सरकता है।) ले अब आ गया तू ऊपर ।
दीनू : अब जान में जान आई ।
बिरजू : अच्छा, यह तो बता कि क्या सोचा ?
दीनू : यही कि उस नुक्कड़ वाले, अंग्रेजी डाक्टर को बुला लें। वह तेरी बीमारी का इलाज कर भी देगा और ईशक वाली का नाम भी बता देगा। सुना है आजकल के डाक्टर इलाज की निस्बत बीमारी का नाम बताने में ज्यादा होशियार होते है । कह, कैसी कही ?

बिरजू : वाह ! वाह ! बहुत बढ़िया। आखिर अंग्रेजी डाक्टर है। क्या ईशक वाली का नाम भी नही बता सकेगा ? मैं अभी छदम्मी को भेजकर बुलवाता हूं। (आवाज देकर) अबे छदम्मी, जरा दौडकर नुक्कड़ वाले अंग्रेजी डाक्टर को बुला ला। दीनू, जब तक अंग्रेजी डाक्टर आए, मैं जरा हाय-हाय कर लूं।

दीनू : मुझे कोई एतराज नही।

बिरजू : (रोते हुए) हाय, मर गया ! डाक्टर मर गया।

डाक्टर : (कुछ समय बाद प्रवेश करते हुए) कहिए, किसकी तबीयत खराब है ?

दीनू : इस बिरजू की।

डाक्टर : अभी ठीक हो जायेंगे। नब्ज दिखाइए।

बिरजू : लीजिए।

डाक्टर : हूं···आपकी नब्ज भी ठीक है, दिल भी ठीक है।

दीनू . पर दिमाग ठीक नही है। बिरजू का सिर देखिए, तवे की माफिक जल रहा है, ज्वालामुखी की माफिक गरम-गरम गैस निकल रही है, सिर के बाल गायब हो गए है। हाय, मर गया की रट लगा रखी है। बाइसकोप देखने गया था और···

डाक्टर : ओह, अब समझा। एक बार फिर इनका दिल देखूं। (स्टेथेसकोप से दिल की जांच करके) ओह, केस सीरियस है।

दीनू : क्या कहा, डाक्टर साहब ? कोई खतरे वाली बीमारी है ?

डाक्टर : हां, इन्हें सिनेमेटिको इश्काइटिस फीवर है।

बिरजू : जी, क्या ? सिनेमा के टिकट का फीवर है ?

डाक्टर : नही—सिनेमेटिको इश्काइटिस फीवर। यह बीमारी बढ़कर सरसाम की शक्ल इख्तयार करेगी, और फिर मौत यकीनी है।

दीनू : (गिड़गिड़ाते हुए) डाक्टर साहब, जैसे भी हो मेरे दोस्त को, मेरे जिगरी दोस्त को बचा लीजिए।

डाक्टर : भई, इस रोग के इलाज पर काफी खर्च होगा। सात दिन तक इन्हें बीस रुपये रोज के हिसाब से इंजेक्शन लगवाने होंगे। पांच रुपये रोज के हिसाब से १५ दिन तक दवा पीनी होगी। दो रुपये रोज के हिसाब

से सिर में मालिश करानी होगी।

दीनू : तो मतलब यह कि इनकी असल मौत इस रोग से नहीं, आपके इलाज से होगी ?

बिरजू : हाय, मर गया। अबे, लात मार इस डाक्दर के। मैं नहीं कराता इलाज। हाय, अब तो जड़ से मर गया।

दीनू : डॉक्दर साहब, आप हटो। मैं करता हूँ इसका इलाज ! (गरदन से बिरजू को पकड़कर खड़ा कर देता है) खबरदार, जो अब बाइसकोप देखने गया ! अगर जाना ही हो तो कल्लू पहलवान को साथ ले जाइयो। वह ईशक वालों से तुझे बचा लेगा। समझा ?

बिरजू : समझ गया··· (रोते हुए) हाय, मर गया।

दीनू : (मारने को हाथ उठाकर, नाराज) फिर मरा ?

बिरजू : (हाथ जोड़कर) अब नहीं मरूँगा ··· (रोते हुए) हाय, अब नहीं मरूँगा !

दीनू : (खुश) अब आया रास्ते पर। क्यों डाक्दर साहब ?

[डॉक्टर खिसियाता हुआ चला जाता है]

ये दीवाने

पात्र-परिचय :

जगदीश : मध्यवर्ग, स्वस्थ, साधारण चेहरामोहरा, बुशशर्ट, पतलून, उमर २५।

नीरज : मध्यवर्ग, दुबलापतला, फैशनपसंद, उमर २५।

(सड़क के किनारे)

जगदीश : (आवाज देकर) अरे नीरज, इतनी जल्दी कहां भागे जा रहे हो ?

नीरज : (पास आते हुए, कुछ चिढ़कर) जहन्नुम में।

जगदीश : (हँसकर) जहन्नुम में जाएं तुम्हारे दुश्मन। बात क्या है ?

नीरज : जगदीश भाई, बात क्या होनी ! यह रामेश्वर है न !

जगदीश : कौन रामेश्वर ?

नीरज : अरे, वही जो मेरे दफ्तर में काम करता है। हां, तो उन हजरत के लड़का पैदा हो गया।

जगदीश : यह तो बड़ी खुशी की बात है।

नीरज : जी, हां, इसी खुशी के सिलसिले में मैंने कहा दावत हो जाए। पहले तो साफ मना करने लगा। फिर बड़ी मुश्किल से तैयार हुआ।

जगदीश : अच्छा, तो उसके यहां से दावत उड़ा कर आ रहे हो ?

नीरज : दावत उड़ा कर तो नहीं, अपना मजाक उड़वा कर आ रहा हूं।

जगदीश : क्यों, क्या हुआ ?

नीरज : अजी, मैं तो बड़ी तैयारी के साथ दावत खाने गया था। खूब खातिरदारी करी उसने।

जगदीश : फिर क्यों रोते हो ?

नीरज : खातिरदारी सिर्फ मुंहजबानी थी।

जगदीश : (आश्चर्य से) यानी खाने-पीने को कुछ नहीं ?

नीरज : बस इतना ही कि खाने को एक पापड़ और पीने को एक प्याला चाय,

जिसमे सिर्फ एक चम्मच चीनी थी।

जगदीश : (हँसकर) यानी कि जोर एक पर था।

नीरज : हां।

जगदीश : तो, भई, इसमें बुरा मानने की क्या बात है—लड़का भी तो उसके एक ही हुआ था। (हँसता है)

नीरज : कोफ्त हो गई! कंजूस कही का! और ऊपर से फरमाते है कि भई, माफ करना जमाना बहुत नाजुक है—हर चीज मे बचत करनी चाहिए। हु! जैसे दो-चार रसगुल्ले, समोसे, सेब, केले, संतरे, काजू, किशमिश वगैरा-वगैरा अगर मुझे खिला देता, तो नाजुक जमाना दम तोड़ देता!

जगदीश : अरे यार, जमाने की नाजुक हालत का असर श्यामसुन्दर पर भी बुरी तरह पड़ रहा है। रात मे दो घण्टे घर की बिजली नही जलाता।

नीरज : दीवाना है!

जगदीश : और यह दीवानापन आजकल कुछ ऐसी तेजी मे फैल रहा हैं कि मुझे लगता है सारा हिन्दुस्तान जल्दी ही एक पागलखाना बन जाएगा।

नीरज : जिसमे हर मेल का दीवाना मिलेगा। एक दीवाना और भी देखा?

जगदीश : कौन?

नीरज : तुम जानते होगे उसे—नरेश।

जगदीश : वही जिसने कुछ महीने हुए नया स्कूटर खरीदा है?

नीरज : हां, वही।

जगदीश : उसे क्या हुआ?

नीरज : मेरे दोस्त ने महीने के पन्द्रह दिन स्कूटर पर बैठना ही छोड़ दिया।

जगदीश : तो क्या पन्द्रह दिन स्कूटर उस पर बैठता है? (हँसता है)

नीरज : (हँसी में योग देते हुए) नहीं, स्कूटर उसके घर ही बैठा रहता है। और वह खुद साइकिल पर दफ्तर आता-जाता है।

जगदीश : फिर स्कूटर क्या देखने के लिए खरीदा है?

नीरज : कहता है जमाने को देखते हुए महीने में पन्द्रह दिन स्कूटर न चलाना बहुत जरूरी है।

[illegible] : मेरा तो खयाल है उसने स्कूटर के आधे दाम ही दिए होगें, इसीलिए

आधे महीने चला सकता है। (हँसता है)

नीरज : (हँसी में योग देते हुए) अजी, अव्वल दरजे का कंजूस है—पैट्रोल बचाता है। पैट्रोल क्या हुआ—अमृत हो गया जो सेंत सेंत कर रखा जाना चाहिए।

जगदीश : एक ऐसा ही दीवाना और भी है।

नीरज : कौन ?

जगदीश : बलदेव !

नीरज : उस पर क्या दीवानापन सवार हुआ है ?

जगदीश : इस कड़कड़ाती सरदी में भी नया कम्बल नहीं खरीदा है। कहता है जमाने को देखते हुए फटे-पुराने कम्बल से ही काम चला लूंगा।

नीरज : मर जाएगा निमोनिया से।

जगदीश : अरे यार, अब तो वह जमाना आ गया है कि आगे-पीछे, दाएं-बाएं जिधर देखो नई किस्म के दीवाने ही दीवाने दिखाई देते है।

नीरज : दीवानों के बीच रह कर कहीं हम भी एक दिन दीवाने न हो जाएं !

जगदीश : आसार तो ऐसे ही नजर आते हैं, नीरज भाई !

नीरज : जगदीश भाई, इनसे बचने का कोई उपाय नही है क्या ?

जगदीश : (सोचते हुए) उपाय ?···उपाय ?··· (एकदम) है ! उपाय है !

नीरज : क्या उपाय है—जल्दी बताओ।

जगदीश : अपनी नौकरी छोड दो।

नीरज : दीवाने हुए हो क्या ? उपाय पूछा था दीवानों से बचने का, तुम उलटे दीवाना बनने का उपाय बता रहे हो।

जगदीश : पहले पूरी बात सुन लो।

नीरज : अच्छा, बताओ।

जगदीश : हां, तो मैं कह रहा था कि नौकरी छोड़ कर तुम फौज में भरती हो जाओ।

नीरज : (व्यग्य से) वाह ! क्या अच्छी बात कही है ! फौज मे भरती हो जाऊं और बेमौत मारा जाऊं !

जगदीश : कोई जरूरी नही है कि तुम मारे ही जाओगे। और अगर मारे भी गए तो अपनी जननी भूमि की आजादी की रक्षा के लिए—और

इससे शानदार मौत भला और क्या हो सकती है ?

नीरज : यह सलाह तुम स्वय अपने को क्यों नही देते ?

जगदीश : कभी की दे चुका हू । जल्दी ही मैं बुला लिया जाऊंगा ।

नीरज : सच ?

जगदीश : हा ।

नीरज : पर बैठे-बैठाए तुम्हे यह क्या सूझी ?

जगदीश ताकि इन दीवानो से बच सकू ।

नीरज · सो कैसे ?

जगदीश : इस तरह की जब मैं फौजी बन जाऊगा, तो मुझे ये लोग दीवाने नहीं, बल्कि बहुत ही अक्लमन्द दिखाई देंगे ।

नीरज : (व्यग्य से) जी, हा ! जादू हो गया—दीवाना आदमी एकदम अक्लमन्द बन गया !

जगदीश : जादू नही, अक्ल का फेर समझो ।

नीरज · पर मेरी अक्ल में तो कुछ भी नही आया ।

जगदीश : आए भी कैसे ! तुम हमेशा अपने बारे में सोचते हो न ! लेकिन तुम यह क्यो नही समझते कि तुम से बड़ा राष्ट्र है, देश है—उसकी आजादी की रक्षा तुम्हारा पहला कर्तव्य है ।

नीरज लेकिन इस बात से उन दीवानो का क्या सम्बन्ध है, जगदीश भाई ?

जगदीश : नीरज भाई, तभी तो कहता हूं कि सब अक्ल का फेर है । यह जो रामेश्वर है, जो दावत में केवल एक पापड और एक चम्मच चीनी एक प्याले चाय मे डाल कर ही पिलाता है, यह तो श्यामसुन्दर है, जो दो घंटे बिजली नही जलाता है, यह जो नरेश है, जो पन्द्रह दिन स्कूटर न चला कर पैट्रोल बचाता है, और यह जो बलदेव है, जिसने नया कम्बल नही खरीदा—ये सब दीवाने तो है, पर वैसे दीवाने नहीं जिन्हे पागलखाने में भरती करवा दिया जाता है ।

नीरज : फिर कैसे दीवाने हैं ?

जगदीश : ऐसे दीवाने जिन पर देश की आजादी की रक्षा का दीवानापन सवार है ।

[illegible] : (समझते हुए) ओह !

जगदीश : हां, देश की आजादी की रक्षा के लिए जो वीर मोरचे पर दुश्मन से जूझ रहे है, उनके लिए अन्न, चाय, चीनी, पैट्रोल और कम्बलों की जितनी आवश्यकता है, उतनी हमें नही। बिजली की जितनी आवश्यकता युद्ध सामग्री बनाने वाले कारखानो को है, उतनी हमारे घरो को उजागर बनाने के लिए नही।

नीरज : (समझते हुए) ओह!

जगदीश : हां। ये रामेश्वर, श्यामसुन्दर नरेश और बलदेव अपनी जरूरतों मे कमी करके फौजियों के लिए इन सामानो को मुहैया करने मे अपना योगदान दे रहे है।

नीरज : ठीक कहते हो, जगदीश भाई। इन दीवानो को मैं सिर नवाता हूं। काश कि मै भी इन जैसा ही दीवाना बन सकता!

जगदीश : क्यो नही बन सकते!

नीरज : (प्रसन्न) सच कह रहे हो, जगदीश भाई?

जगदीश : हां। चलो मेरे साथ। देश की आजादी की रक्षा के दीवानो मे तुम्हारा भी नाम लिखवा दूं।

[दोनों हाथ पकड़ कर गुनगुनाते हुए चले जाते हैं]

सच्चा स्वर्ग

पात्र-परिचय :

दिनेश : मध्यवर्ग, शकलसूरत ठीक, उमर ३०, कुरता, पाजामा।

सुरेश : मध्यवर्ग, स्वस्थ, चेहरे पर जोश, उमर २५, बुशशर्ट, पतलून।

(दिनेश का ड्राइंग रूम)

दिनेश : आओ, भई सुरेश, आओ बैठो। क्या लोगे ?

सुरेश : अपनी चप्पा-चप्पा जमीन वापस लूंगा।

दिनेश : (आश्चर्य से) जमीन ?

सुरेश : हां।

दिनेश : तुम बहक तो नहीं रहे हो ?

सुरेश : मैं एकदम होश में हूं और जोश में हूं।

दिनेश : यह तुम्हारा होश, जोश, खरगोश वगैरा-वगैरा मेरी कुछ समझ में नहीं आया। पर इतना जरूर जानता हूं कि तुम्हारी कोई जमीन मैंने नहीं हथियायी है। मैं तो पूछ रहा था कि चाय लोगे या शरबत लोगे ?

सुरेश : ओह ! तुम चाय शरबत लेने की बात कर रहे थे ! पर मैं आजकल अपनी ही धुन में हूं। दुश्मनों से जब तक अपनी चप्पा-चप्पा जमीन नहीं ले लूंगा, मुझे चैन नहीं मिलेगा।

दिनेश : तुम्हें क्या, किसी भी भारतवासी को चैन नहीं मिलेगा। लेकिन इसके लिए सोना जरूरी है।

सुरेश : सोना नहीं—जागना, मेरे भाई।

दिनेश : तुम्हारी अक्ल है चकराई ! मैं सोने की बात कर रहा हूं। समझे ?

सुरेश : ओह, अच्छा—सोना ! यानी सोना ? (हंसता है)

दिनेश : जी, सोना—जिसकी ईंटें बनती हैं, जेवर बनते हैं, दांत बनते हैं, वर्क बनते हैं, वगैरा-वगैरा बनते हैं।

सुरेश : हां, और जिसका हिरन बनता है।

दिनेश : हिरन ?

सुरेश : हां, उस दिन बड़ा मजा आया। वह है न ··क्या नाम—श्यामसुंदर।

दिनेश : वही जिसकी पिछले साल शादी हुई है ?

सुरेश : हां, वह एक रोज मिल गया। सुना रहा था कि उसकी धर्मपत्नी बहुत धार्मिक है। रामायण से बहुत प्रभावित है। सो सीताजी की देखादेखी जिद् कर बैठी कि उसे सोने का हिरन चाहिए।

दिनेश : फिर ?

सुरेश : श्यामसुंदर ने उसे बहुत समझाया कि सोने के हिरन के चक्कर में मत पड़ो, नहीं तो राक्षस तुम्हें उठाकर ले जाएंगे, पर उसने एक न सुनी। और कुछ बस न चला तो कोपभवन में जा बैठी।

दिनेश : अरे···रे···रे ! वह अब तक कोप भवन में ही है क्या ?

सुरेश : नहीं। अंत में फैसला हो गया।

दिनेश : क्या ?

सुरेश : श्यामसुंदर सोने का हिरन लाने को तैयार हो गया।

दिनेश : यह क्या फैसला हुआ ? यह तो श्यामसुंदर अपनी पत्नी के सामने झुक गया।

सुरेश : सुनो तो ! श्यामसुंदर ने ऐसा तीर चलाया कि सोने का हिरन गायब हो गया।

दिनेश : कैसे ?

सुरेश : उसने अपनी धर्मपत्नी से कहा कि उसका भाई यानी श्यामसुंदर का साला मोरचे पर है। उसे इस सोने के हिरन की बहुत जरूरत है, ताकि उससे दुश्मन का स्वागत करने के लिए बंदूक की गोलियां खरीदी जा सकें। जब भाई का मामला आया, तो सोने का हिरन देने को तैयार हो गई।

दिनेश : वाह ! खूब तीर चलाया उसने !

सुरेश : अजी, सीधा निशाने पर बैठा।

दिनेश : लेकिन अब तो सोना कोई खरीद ही नहीं सकता।

सुरेश : अरे भैया, इन औरतों की कुछ न पूछो। सोना तो जैसे ये अपनी

घुट्टी में घोलकर पी जाती है। ये पति के प्रेम की नापतौल भी उसके दिए हुए सोने के जेवरों से करती है।

दिनेश : (हँसते हुए) ठीक कहते हो। पति ने दो तोले के सोने के कंगन बनवा कर दिये, तो समझती है कि वह उसे दो तोले प्रेम करता है।

सुरेश : (हँसी में योग देते हुए) इतना ही नहीं, वे यह भी देखती हैं कि दो तोले सोने के कंगन में कितना खोट है। जितना खोट सोने में होगा, उतना ही खोट पति के प्रेम में होगा।

दिनेश : और अब तो १४ कैरट से ज्यादा के जेवर बन ही नहीं सकते। यानी १२ माशे में ७ माशे खोट होगी। यानी ७ माशे प्रेम और ५ माशे खोट। (सास भरकर) हम तो गए काम से!

सुरेश : क्यों, क्या हुआ?

दिनेश : जब इतनी अधिक खोट होगी, तो बताओ कौन लड़की मुझसे शादी करेगी! सुरेश, तुम बहुत खुशकिस्मत हो, जो पहले ही शादी कर बैठे।

सुरेश : (सांस भरकर) नहीं, भई, अब जब मेरे प्रेम में ५ माशे खोट दिखाई देगा, तो जल्दी ही मुझे भी तलाक मिल जाएगा।

दिनेश : (दुखी) भैया, जब मिल जाए, तो बता देना। सहानुभूति के तौर पर और तो कुछ नहीं कर सकूंगा, एक कंडोलेंस मीटिंग जरूर करवा दूंगा।

सुरेश : (रुआंसा) भैया, कुछ और नहीं कर सकते?

दिनेश : जो तुम कहो! तुम जैसे दोस्त के लिए जान की बाजी भी लगा सकता हूं।

सुरेश : जान की बाजी तो आजकल सिवा देश के और किसी के लिए नहीं लगानी चाहिए।

दिनेश : ठीक बात है। फिर बोलो क्या चाहते हो?

सुरेश : किसी तरह मेरी पत्नी को समझा दो कि सोने में खोट और प्रेम में खोट का वास्तव में कोई सम्बन्ध नहीं है। बल्कि सोने और प्रेम को एक तराजू पर तौलना प्रेम जैसी ऊंची और पवित्र भावना का घोर अपमान करना है। प्रेम के दो मीठे बोल लाखों तोले सोने से कहीं

ज्यादा कीमती है।

दिनेश : बात तो तुमने पते की कही। कहां प्रेम, कहां सोना! दोनों का कोई मुकाबला ही नही।

सुरेश : तो बोलो, मेरे लिए इतना कर दोगे न ?

दिनेश : क्यों नही ?

सुरेश : तुम ने मेरी चिन्ता दूर कर दी।

दिनेश : तुम्हे काहे की चिन्ता ! चिन्ता तो हो रही है सेठ घासीराम को।

सुरेश : क्यो ? क्या सेठानी ने उन्हें तलाक दे दिया ?

दिनेश : नही, यह बात नही है। उन्हें सेठानी की चिन्ता नही, बल्कि अपनी सोने की ईंटो की चिन्ता है, जो उन्होने काले बाजार की कमाई से खरीदकर कही छिपाकर रखी हुई हैं। अब बेचते हैं तो सस्ते भाव बिकेगी, दबाकर रखते हैं तो मिट्टी के बराबर हैं।

सुरेश . और सरकार को कही सुराग मिल गया, तो सेठजी अन्दर होंगे।

दिनेश : बस इसी पीले सोने की चिन्ता मे सेठजी को पीलिया का रोग हो गया है। सारे तेंतीस करोड़ देवी-देवताओं की बारी-बारी पूजा करते हैं कि किसी तरह इस संकट से मुक्ति मिले।

सुरेश : अरे, देवी-देवता ऐसे लोगों की सहायता नही करते। सेठजी की सहायता तो मुझ जैसे लोग ही कर सकते हैं।

दिनेश : ऐसे पापियों की सहायता करना भी पाप है।

सुरेश : तुम कुछ समझे ही नही। मेरा मतलब कुछ और ही था।

दिनेश : बताओ।

सुरेश : मैं सेठजी को किसी तरह समझा-बुझाकर इस बात के लिए तैयार कर लूगा कि वह मर जाएं।

दिनेश : सेठजी का हाल पतला हो रहा है। और तुम्हे मजाक सूझ रहा है।

सुरेश : मजाक नही है, दिनेश भाई, पूरी बात तो सुन लो।

दिनेश : अच्छा, सुनाओ।

सुरेश : बस, इधर सेठजी मरे और उधर काला सांप बनकर वह अपने सोने पर जा बैठेंगे। मानते हो न ?

दिनेश : कहते तो यही हैं कि अक्सर लोग मरने के बाद सांप बनकर अपने

खजाने पर आ बैठते है, ताकि कोई दूसरा उसे ले न सके।

सुरेश : यही मैं सेठजी को समझाऊंगा कि उनके मरने मे ही उनका भला है। इस तरह उनका सोना भी सुरक्षित रहेगा और सरकार साप रूपी सेठजी को जेल मे बन्द भी न कर सकेगी। मेरे ख्याल से सेठजी फौरन मरने के लिए तैयार हो जाएंगे।

दिनेश : अरे, अब कौन-से वह जिन्दा है !

सुरेश . क्यो ? क्या मेरे कहने से पहले ही मर गए ?

दिनेश : हां।

सुरेश : (दुखी) यह तो जबरदस्त घाटा हो गया। मेरी कमीशन मारी गयी, जो मुझे इस नेक सलाह के बदले सेठजी से मिलती। पर सेठजी मरे कैसे ?

दिनेश : जिस आदमी का जमीर मर गया, जिसका ईमान मर गया, जिसका देश प्रेम मर गया—समझो कि वह मौत से पहले ही मर गया, वह जिन्दा रहते हुए भी मरे के समान है।

सुरेश : ठीक कहते हो, भाई ! सेठजी को समझाना चाहिए कि अगर स्वर्ग में स्थान पाना चाहते है, तो सारा सोना देश को सुरक्षा के लिए दान कर दें।

दिनेश : अगर वह सोना दान कर दें तो फिर से जीवित हो जाएंगे। इसी धरती पर उन्हे स्वर्ग मिल जाएगा।

सुरेश . इसी धरती पर कैसे ?

दिनेश : एक आजाद देश ही सच्चा स्वर्ग होता है।

क्या मुसीबत है !

पात्र-परिचय :

शंकरलाल : क्लर्क, दुबला-पतला, चिड़चिड़ा, विचारों की कड़ी उलझा कर कुछ देर बाद सही बात समझता है, उमर ४५, वेशभूषा अवसर के अनुसार बदलती है।

राधा : शंकरलाल की पत्नी, सादी शकलसूरत, झुंझलाई रहती है, उमर ४०, सादी धोती।

राजू : शंकरलाल का बेटा, तेज अक्ल, उमर १२, कमीज, नीकर।

सरदारजी : टैक्सी ड्राइवर।

लालाजी : व्यापारी, थलथल शरीर, उमर ४५।

टिकटबाबू : रेलवे के टिकट बेचने वाला।

हैडक्लर्क : शंकरलाल के दफ्तर का, शकलसूरत से दुखी, मोटा चश्मा, उमर ५०।

चनेवाला : मजदूर वर्ग, दुबला-पतला।

संतरी : पुलिस का सिपाही।

कुली : रेलवे का।

(शंकरलाल का बैड रूम)

शंकरलाल : (आते हुए, परेशान) अरे भई, कहां हो? कोई बोलता ही नहीं! क्या मुसीबत है!

राधा : (आते हुए) फ्रंटियर मेल की रफ्तार से तो खुद बोले चले जा रहे हो। किसी और को बोलने का मौका ही कहां देते हो! मैं चौके में थी।

शंकरलाल : चौके में क्या कर रही थी?

राधा : (चिढ़कर) सो रही थी!

शंकरलाल : सो क्यों रही थीं?

राधा : ओफ! सो नहीं रही थी, तुम्हारे लिए चाय बना रही थी।

शंकरलाल : चाय क्यों बना रही थीं?

राधा : तुम दफ्तर से आकर चाय क्यों पीते हो?

शंकरलाल : यही तो मैं कह रहा था। तुम समझती क्यों नहीं?

राधा : क्या समझू?

शंकरलाल : क्या मुसीबत है! पन्द्रह साल हो गए तुम्हें मेरी पत्नी बने, पर आज तक तुमने मेरी कोई बात नहीं समझी।

राधा : आज तक तुमने कोई समझने लायक बात भी की है?

शंकरलाल : क्या मुसीबत है! खुद ही बोले चली जाओगी या मुझे भी बोलने दोगी?

राधा : चाय ले आती हूं—पीते-पीते बोलते रहना।

शंकरलाल : आज मुझे चाय पीने की फुर्सत नहीं है।

राधा : क्यों, क्या रेलगाड़ी छूटी जा रही है?

शंकरलाल : (प्रसन्न) हां! यह कही तुमने पते की बात! आज पहली बार मेरी बात समझ गयीं।

राधा : मैं कुछ नहीं समझी।

शंकरलाल : क्या मुसीबत है! अभी तो तुमने पूछा था कि क्या रेलगाड़ी छूटी जा रही है!

राधा : फिर?

शंकरलाल : फिर क्या! मैं चाय पीने बैठ गया, तो रेलगाड़ी छूट जाएगी।

राधा : किसकी?

शंकरलाल : मेरी।

राधा : तुम कहीं जा रहे हो?

शंकरलाल : यही तो मैं इतनी देर से कहना चाह रहा था। पर तुम मुझे बोलने ही नहीं देतीं।

राधा : बात क्या है, कुछ बताओ तो।

शंकरलाल : वही तो बता रहा हूं। मुझे बाहर जाना है।

राधा : पहाड़गंज?

शंकरलाल : क्या मुसीबत है! रेलगाड़ी में पहाड़गंज कैसे जा सकता हूं?

राधा : क्यों? विनयनगर से नई दिल्ली के स्टेशन को लोकल रेलगाड़ी चलती तो है। वही पहाड़गंज है।

शंकरलाल : वाह! वाह! क्या अक्ल पाई है! अरे, पहाड़गंज जाने के लिए मैं इतनी परेशानी क्यों उठाने लगा?

राधा : परेशान तो तुमने मुझे कर रखा है।

राजू : (आते हुए) अम्मां, भूख लगी है! जल्दी से डबलरोटी लाओ।

शंकरलाल : (डांटकर) चुप रह, डबलरोटी के बच्चे!

राधा : राजू, तू सब्र कर। पहले अपने बाऊजी को रेलगाड़ी पर सवार हो जाने दे।

राजू : बाऊजी कहां जा रहे हैं?

शंकरलाल : बम्बई।

राजू : (प्रसन्न) बम्बई ? फिल्म स्टार बनने के लिए ?

राधा : हां, हां, अब इसी की कसर रह गई है। इस उमर में फिल्म स्टार बनेंगे !

राजू : क्यों नहीं बन सकते ? फिल्म में तो बाऊजी से बड़ी-बड़ी उमर के लोग पार्ट करते हैं।

शंकरलाल : क्या मुसीबत है ! अब तुम मां-बेटे बोले ही जाओगे या मुझे भी बोलने दोगे ?

राधा : बोलो।

शंकरलाल : मेरा सामान तैयार करो। फौरन, अभी इसी वक्त। बाकी सब काम बन्द।

राधा : लेकिन जा कब रहे हो ?

शंकरलाल : दस दिन बाद।

राधा : (नाराज) और शोर अभी से मचाना शुरू कर दिया।

शंकरलाल : क्या मुसीबत है ! इससे पहले जाना मेरे हाथ में नहीं है। सीट जो रिजर्व करवानी है।

राधा : तो पहले सीट ही रिजर्व करवा लो।

शंकरलाल : सीट रिजर्व होनी भी मेरे हाथ में नहीं है।

राधा : (चिढ़कर) तुम्हारे हाथ में तो बस शोर मचाना है।

शंकरलाल : शोर नहीं मचाऊंगा, तो तुम मेरा सामान नहीं तैयार करोगी।

राधा : तुम चुपचाप रहोगे तो सब हो जाएगा और शोर मचाओगे तो कुछ नहीं होगा। समझे ?

शंकरलाल : तुम मेरी बात तो समझती नहीं हो—अपनी समझाने लगती हो।

राधा : हां, हां, सब समझ गई। चल, राजू, डबलरोटी खा ले। (कहते-कहते जाने लगती है)

शंकरलाल : अरे, सुनो तो। डबलरोटी में सुबह चार बजे का अलार्म लगा देना। मुझे कल सुबह ही सुबह सीट रिजर्व कराने बुकिंग आफिस जाना है।

राधा : डबलरोटी मैं भिजवा देती हूं, अलार्म तुम खुद लगा लेना।

शंकरलाल : क्या मुसीबत है ! डबलरोटी मे अलार्म कैसे लगाऊगा ?

राधा : तुम्ही तो कह रहे थे।

शंकरलाल : तुम तो बात पकड़ती हो। मैं कह रहा था अलार्म में डबलरोटी लगानी···ओफ, फिर उलझा दिया तुमने···न डबलरोटी में अलार्म, न अलार्म मे डबलरोटी, बल्कि अलार्म में घड़ी लगानी है। समझ गई ?

राधा : (पास आते हुए) मैं कुछ नहीं समझी। मैं अलार्म भिजवा देती हू, तुम उसमे घड़ी लगा देना। (जाती है)

शंकरलाल : जल्दी भेजना, अलार्म में घडी लगाने मे देर हो गई, तो वह बजेगा भी देर से ···(एकाएक स्वतः) ऐं, अलार्म मे घड़ी ?···क्या मुसीबत है ! अलार्म में घड़ी लगती है या घडी में अलार्म ?

[पूर्ण अंधकार ! बेडरूम में अलार्म बजता है]

राधा : (सोते से उठकर) उठो ! चार बज गए। (शंकरलाल, ऊं ऊं करके रह जाता है)।

राधा : अब उठना है या नही ? अलार्म कब से बज रहा है।

शंकरलाल : (नींद में) इतने सुबह उठकर मुझे दूध बेचने थोड़े ही जाना है।

राधा : ओफ, सीट रिजर्व करवाने बुकिंग आफिस नही जाना है ?

शंकरलाल : तुम चली जाओ।

राधा : हु, मुझे क्या गरज पड़ी है !

शंकरलाल : तो फिर राजू को भेज दो।

राधा : (नाराज) तुम्हें नही जाना है तो मत जाओ। मैं अलार्म बन्द कर देती हूं। तुम सोते रहो।

[अलार्म बन्द कर देती है। शंकरलाल फिर खर्राटे लेने लगता है]

शंकरलाल : (एकाएक नींद से चौंककर) चार बज गए क्या ? (चौंककर) राधा ! राधा ! अलार्म क्यों नहीं बजा ?

राधा . (जागकर) अलार्म भी बजा था, और मैंने भी तुम्हें जगाया था। पर तुम खुद ही कुनमुना कर रह गए।

शंकरलाल : तुम मुझे बम्बई नही जाने दोगी !

राधा : और सुनो। उल्टा चोर कोतवाल को डांटे।

शंकरलाल : चोर ? यहां चोर आया था ? कोतवाल कहां गया ?

राजू : (नींद में) बाऊजी, क्यों सुबह-सुबह शोर मचा रहे हो ? मुझे सोने दो।

शंकरलाल : राजू के बच्चे, तुझे सोने की पड़ी है। यहां देर हो गई—पता नहीं रिजर्व सीट भी होगी कि नहीं ?

राजू : क्या नहीं होगा, बाऊजी ?

शंकरलाल : क्या मुसीबत है ! मां बेटे मिलकर मेरा घनचक्कर बना देंगे।

राधा : तुम्हें खुद तो पता नहीं रहता क्या कह रहे हो, क्या कर रहे हो। हमें दोष देने लगते हो।

शंकरलाल : अच्छा, अच्छा, मैं ही घनचक्कर सही। पर अब मुझे जाने भी दो।

राधा : तो जाओ न—कौन तुम्हें रोक रहा है ?

शंकरलाल : पर जाऊंगा कैसे ? इतने सवेरे कोई सवारी भी तो नहीं मिलेगी।

राजू : बाऊजी, पैदल चले जाओ। मार्निंग वॉक हो जाएगी।

राधा : तू चुपचाप सोजा, राजू।

शंकरलाल : देखूं, शायद कोई टैक्सी वाला चलने को तैयार हो जाए।

[टैक्सी स्टैंड का बोर्ड। चारपाई पर सरदारजी सो रहे हैं।]

शंकरलाल : अरे भई सरदारजी ! उठो।

सरदारजी : (नींद में) ओए, की मुसीबत ए ?

शंकरलाल : जागो, भगवन ! मुझे स्टेशन जाना है।

सरदारजी : (जम्भाई लेते हुए) चलो, बादशाओ ! पर किराया दुगना होएगा।

शंकरलाल : क्यों ?

सरदारजी : बादशाओ, रात मे दुगना किराया हो जांदा ए।

शंकरलाल : क्या मुसीबत है !

सरदारजी : तुस्सी मुसीबत नई उठाना चांदे, तो दिन मे सटेशन जाना। तुस्सी भी साडे कोल सो जाओ। सवेरे चलेंगे।

शंकरलाल : पर, सरदारजी, सवेरे तक तो सारी सीटें रिजर्व हो जाएंगी।

सरदारजी : असी की कर सक्दे एं ?

शंकरलाल : अच्छा, बाबा, असी ही दुगना किराया देंगे। चलो।

सरदारजी . बैठो, बादशाओ !

[दोनों बाहर जाते हैं। यहीं से पार्श्व में बातें सुनाई देती हैं। टैक्सी स्टार्ट होती है। चलती है। कुछ देर बाद रुकती है। इस बीच बुकिंग विन्डो का दृश्य लग जाता है।]

शंकरलाल : सरदारजी, कितना किराया हुआ ?

सरदारजी : छः रुपैया।

शंकरलाल : मीटर के हिसाब से यहां तक के तीन रुपये बनते है। लेने हों तो ले लो वरना हवा खाओ।

सरदारजी . (गुस्से मे) ओए लाले, हवा खाओ तुसीं। असीं तो मुर्गा खादे आ। सीधे से छ. रुपैया ढीले कर।

शंकरलाल : जरा तमीज से बातें करो।

सरदारजी · (गुस्से से) ओए, तमीज की होंदी ए ? ढीले कर छः रुपैया।

शंकरलाल : तुम जैसो का एक ही इलाज है। ठहर जाओ। (आवाज देकर) सतरीजी ! सतरीजी !

सरदारजी : अच्छा, अच्छा, तीन रुपैया ही दो।

शंकरलाल : अब आए न रास्ते पर। यह लो।

सरदारजी : स्वेरे स्वेरे किस मनहूस दी सूरत वेखी ? बौणी ही खराब हो गई।

लालाजी : बाबूजी, उधर कहां जा रहे हो ?

शंकरलाल : बुकिंग विन्डो पर।

लालाजी : आकर क्यू मे खड़े हो जाओ।

शंकरलाल : क्यो ?

लालाजी : इतनी देर मे आए हो और सीट सबसे पहले रिजर्व करवाना चाहते हो ?

शंकरलाल : लालाजी, मैं चार बजे उठा हूं।

लालाजी : यहां पौने चार से क्यू में खड़े है।

शंकरलाल : क्या मुसीबत है ! बस के लिए क्यू, सिनेमा के लिए क्यू, सीट रिजर्व कराने के लिए क्यू !

लालाजी : (हँसते हुए) घबराते क्यों हो, बाबूजी। भगवान न करे अगर तीसरी लड़ाई छिड़ गई, तो नरक में जाने के लिए भी क्यू लग जाएगी।

शंकरलाल : लालाजी, नरक में जाने के लिए आप क्यू में आगे खड़े हो जाना। अब तो मुझे आगे हो जाने दो।

लालाजी : आपको कहां जाना है ?

शंकरलाल : बम्बई।

लालाजी : मुझे रतलाम जाना है। और क्योंकि रतलाम बम्बई से पहले आता है इसलिए पहले सीट मैं ही रिजर्व कराऊंगा। आप मेरे पीछे खड़े हो जाओ।

शंकरलाल : क्या मुसीबत है ! इतना लम्बा क्यू है, पता नहीं सीट मिलेगी भी या नहीं ?

लालाजी : सीट के लिए परशाद बोला था, बाबूजी ?

शंकरलाल : नहीं तो, क्या परशाद बोलना जरूरी है ?

लालाजी : मालूम होता है पहली बार सीट रिजर्व करवा रहे हो। क्यों ?

शंकरलाल : हां।

लालाजी : तब मिल चुकी आपको सीट।

शंकरलाल : क्यों ?

लालाजी : अपने तजुर्बे से बता रहा हूं, बाबूजी, मैं रोज ही कभी रतलाम, कभी बम्बई, कभी कलकत्ता, कभी मद्रास, कभी श्रीनगर, कभी चंडीगढ़, कभी पटना, कभी इलाहाबाद वगैरा-वगैरा जाता रहता हूं। और सीट रिजर्व करवाने आने से पहले हनुमान मंदिर में परशाद चढ़ाता हूं। तब कहीं सीट मिलती है। क्या समझे ?

शंकरलाल : तो क्या मुझे सीट नहीं मिलेगी ?

लालाजी : नहीं।

शंकरलाल : आपने क्या मुझे बेवकूफ समझ रखा है !

लालाजी : अरे बाबूजी, नाराज क्यों होते हो ? अगर बातें न करें, तो क्यू में खड़े-खड़े नींद न आ जाए।

शंकरलाल : ओह !

शंकरलाल : कोई बात नहीं—तो फिर एक सोने वाला मुसाफिर रिजर्व कर दीजिए।

टिकटबाबू : मालूम होता है आप खुद नींद में हैं। यह क्यों नहीं कहते कि स्लीपिंग बर्थ चाहिए ?

शंकरलाल : स्लीपिंग बर्थ और सोने वाली बर्थ में क्या अंतर है, टिकटबाबूजी? आप बम्बई की एक स्लीपिंग बर्थ ही रिजर्व कर दीजिए। हमें तो आपको खुश रखना है।

टिकटबाबू : बम्बई की कोई स्लीपिंग बर्थ खाली नहीं है।

लालाजी : (हँसते हुए) बाबूजी, अब घर जाकर अपनी स्लीपिंग खटिया पर सो जाओ।

शंकरलाल : (झुंझलाकर) क्या मुसीबत है !

[शंकरलाल का दफ्तर]

हेडक्लर्क : शंकरलाल, आज तुम देर से दफ्तर क्यों आए ?

शंकरलाल : (चौंककर) ऐं ? तो क्या दफ्तर में भी सब सीटें रिजर्व हो चुकी हैं ? क्या मुसीबत है ! स्टेशन देर से पहुंचा, तो ट्रेन में सीट नहीं मिली। दफ्तर देर से पहुचा तो यहा भी सीट नही मिलेगी ?

हेडक्लर्क : यह क्या मजाक है !

शंकरलाल : अजी बड़े बाबू मजाक तो मेरे साथ हो रहा है। दफ्तर मे काम नही है, तो घर चला जाता हू।

हेडक्लर्क : अच्छा, अब चुपचाप जाकर अपनी सीट पर बैठ जाओ और···

शंकरलाल : (बीच मे) लेकिन, बड़े बाबू, मुझे सीट नही, स्लीपिंग बर्थ चाहिए। पूरे चौबीस घंटे का मामला है।

हेडक्लर्क : जी, नही, आपको कुल सात घंटे काम करना है—और वह भी जाग कर।

शंकरलाल : वाह, बड़े बाबू, मैं छुट्टी पर हूं, काम क्यों करूंगा ?

हेडक्लर्क : छुट्टी पर हो ?

शंकरलाल : और क्या ! बम्बई जा रहा हूं।

हेडक्लर्क : लेकिन छुट्टी तुमने दस दिन बाद से ली है।

शंकरलाल : वही तो मैं कह रहा हू।

हेडक्लर्क : (भिन्ना कर) अपना सिर कह रहे हो! अब अपनी सीट पर जाओ और कल जो फाइल मैंने भेजी थी, उस पर नोटिंग करके फौरन ले आओ।

शंकरलाल : अच्छा।

[थोड़ी देर बाद शंकरलाल फाइल पर नोटिंग करके लाता है]

हेडक्लर्क : ठीक है, फाइल मेरे पास छोड़ जाओ, मैं नोटिंग देख लूंगा।

शंकरलाल : जी, अच्छा। (जाता है)

हेडक्लर्क : (फाइल पढ़ते हुए) दि फाइल वाज रिसीव्ड लेट···फाइल देर से पहुंची, इसलिए स्लीपिंग बर्थ रिजर्व नहीं हो सकी···लालाजी हनुमान का परशाद चढ़ाकर आए थे, पर शायद वह असली घी का नहीं था, सो उन्हें भी सीट नहीं मिली···कल मैं फिर कोशिश करूंगा···ओफ! यह क्या बकवास है। (नाराजगी से आवाज देकर) शंकरलाल!

शंकरलाल : आया। (पास आकर) कहिए।

हेडक्लर्क : क्या मुसीबत है!

शंकरलाल : आप पर भी कोई मुसीबत आ गई? कोई बात नहीं—मैं और आप एक ही नाव पर सवार हैं।

हेडक्लर्क : तुम अपने साथ मुझे भी ले डूबोगे।

शंकरलाल : मैं नहीं डूब सकता, बड़े बाबू—मुझे तैरना आता है। मैं आपको भी सिखा दूंगा। लेकिन पहले आप बेदिंग ब्यूटी खरीद लीजिए।

हेडक्लर्क : (आश्चर्य से) बेदिंग ब्यूटी?

शंकरलाल : हां—बेदिंग ब्यूटी पहनकर तैरने में आसानी रहेगी।

हेडक्लर्क : लगता है, तुम्हारा दिमाग और भी खराब हो गया है। तैरने के लिए बेदिंग सूट पहना जाता है या बेदिंग ब्यूटी?

शंकरलाल : क्या मुसीबत है!

हेडक्लर्क : मुसीबत तो तुम मेरी बुलवाओगे। पढ़ो इस फाइल पर अपनी नोटिंग को। अगर मैं ऐसे ही इसे आफिसर को फारवर्ड कर देता तो क्या होता!

शंकरलाल : (फाइल पढते हुए) फाइल देर से पहुंची, इसलिए स्लीपिंग बर्थ —क्या मुसीबत है ! मैं स्लीपिंग बर्थ रिजर्व कराने स्टेशन गया, और स्लीपिंग बर्थ यहा फाइल मे घुसी बैठी है।

हेडक्लर्क : फाइल मे तो है ही, तुम्हारे दिमाग मे भी स्लीपिंग बर्थ घुसी हुई है। होश से काम करो और दूसरी नोटिंग कर के भेजो। जाओ !

शंकरलाल : कोशिश करता हूं···क्या मुसीबत है ! स्लीपिंग बर्थ फाइल में कैसे घुस गई ?

[शंकरलाल का बैड रूम]

राधा : सीट रिजर्व नही हुई, तो बम्बई कैसे जाओगे ?

शंकरलाल : मैं आसानी से हार मानने वाला नहीं हूं। तुम ऐसा करो कि अभी एक कनस्तर असली घी का खरीद लाओ।

राजू : नहीं, बाऊजी, मैं असली घी नही खाऊंगा। मेरे पेट में दर्द हो जाएगा।

शंकरलाल : क्या मुसीबत है ! घी तेरे खाने के लिए थोड़े ही मंगवा रहा हूं।

राधा : खाने के लिए नहीं तो क्या सिर में मलने के लिए मगा रहे हो ?

शंकरलाल : खुद ही बोले जाओगी या मुझे भी बोलने दोगी ?

राधा : बोलो !

शंकरलाल : असली घी का परशाद बनवाओ।

राधा : फिर ?

शंकरलाल : चंडी पाठ करवाओ। और चंडी भवानी को परशाद चढ़ाओ।

राधा : क्यों ?

शंकरलाल : ताकि चंडी भवानी टिकटबाबू के सिर पर चढ़ बैठें और वह मेरी सीट रिजर्व कर दें।

राधा : तुम्हारा तो दिमाग खराब हो गया है। ऐसे कहीं सीट रिजर्व होती है !

शंकरलाल : तो और क्या करूं ?

राजू : बाऊजी, मैं बताऊं ?

शंकरलाल : तू ही बता।

राधा : आप अभी शाम से ही जाकर बुकिंग खिड़की के आगे खड़े हो जाइए।

शंकरलाल : हां, यह बात कही तूने पते की ! अभी से धरना दूंगा तो पहला नम्बर मेरा ही होगा। ठीक है—मैं चला।

राधा : पर खाना तो खाते जाओ।

शंकरलाल : नहीं, नहीं, खाने बैठ गया तो देर हो जाएगी।

राधा : तो क्या सारी रात भूखे ही रहोगे ?

शंकरलाल : तुम ऐसा करना कि खाने की पोटली सिर पर रखकर, बल खाती हुई, इठलाती हुई, स्टेशन पर लेकर आना। जैसे गांव की गोरी खेत मे काम करने वाले अपने पिया के लिए लाती है।

राजू : हां, मम्मी, जैसा फिल्मों में दिखाते हैं।

राधा : आग लगे इन फिल्मों को ! मुझसे गांव की गोरी नहीं बना जाएगा। तुम स्टेशन पर ही चने मुरमुरे खा लेना।

शंकरलाल : खा लूंगा। चाहे हवा खाकर ही क्यों न रात काटनी पड़े, पर आज मैं बर्थ रिजर्व करवा के ही रहूंगा।

राजू : बाऊजी, रात को स्टेशन पर तुम्हें अकेले डर तो नहीं लगेगा ?

शंकरलाल : क्या मुसीबत है ! अब मुझे जाने भी दो। देर हो रही है।

राधा : तो जाओ न—रोक कौन रहा है! ···हां, याद आया, सुबह लौटते वक्त मंडी से सब्जी लेते आना। वहां सस्ती मिलेगी।

शंकरलाल : अच्छा, बाबा, सब्जी से सस्ती मंडी ले आऊंगा। (जाता है)

[बुकिंग विन्डो के सामने, जो अभी बन्द है]

शंकरलाल : (नींद के मारे जभाई लेते हुए) आ···आ···अभी तो रात के बारह ही बजे हैं···आ···आ···और नींद ऐसे झपट्टे मार रही है जैसे चिड़िया बाज पर झपटती है···आ···आ···

चनेवाला : (दूर से आवाज लगाते हुए) चने जोर गरम !

शंकरलाल : (एकदम) बड़े मौके से आया चने वाला। (आवाज देकर) चने वाले ! चने वाले !

चनेवाला : (दूर से) आया, सरकार ! (पास आकर) हां, सरकार, कितने के दूं ?

शंकरलाल : जितने की मर्जी हो दे दो। पर मैंने तो किसी और ही इरादे से तुम्हें बुलाया था।

चनेवाला : क्या बात है, सरकार ?

शंकरलाल : तुम सुबह से चने बेचते थक गए होगे !

चनेवाला : क्या करूं, सरकार ! न बेचूं तो बीवी बच्चों को रोटी कहां से खिलाऊं !

शंकरलाल : अच्छा, ऐसा करो कि तुम यहां मेरी जगह बैठ कर सो जाओ और तुम्हारी जगह मैं घूम-घूमकर चने बेचता हूं।

चनेवाला : (कड़े स्वर में) ऐसे उचक्के मुझे रोज ही स्टेशन पर मिलते हैं। मेरे चने लेकर चम्पत होना चाहता है !

शंकरलाल : जबान संभालकर बात करो। वरना अभी संतरीजी को बुलाता हूं।

चनेवाला : तुम क्या बुलाओगे—मैं ही बुलाता हूं। (आवाज देकर) संतरीजी ! संतरीजी !

शंकरलाल : क्या मुसीबत है !

चनेवाला : अभी पता चल जाएगा। वह आ गए संतरीजी।

संतरी : (पास आते हुए) क्या गोलमाल है ?

चनेवाला : यह उचक्का मेरी चने की पोटली लेकर रफूचक्कर होना चाहता है।

संतरी : (शंकरलाल से) क्यों, बे ?

शंकरलाल : क्या मुसीबत है ! मैं तो बम्बई की सीट रिजर्व करवाने आया हूं।

संतरी : हूं ! तो तेरे साथी बम्बई में भी हैं ?

शंकरलाल : मैं तो अपने चाचा के पास बम्बई जा रहा हूं, संतरीजी।

संतरी : अच्छा, तो पूरा खानदान ही इस गिरोह में शामिल है।

शंकरलाल : क्या मुसीबत है ! मेरी बात क्यों नहीं समझते ?

संतरी : बच्चू, थाने में चलकर समझाना अपनी बात। (डांटकर) चलो, उठो !

शंकरलाल : देखो, जी, मैं गवर्नमेंट ऑफ इंडिया का क्लास वी अफसर हूं। मुझसे जबान संभालकर बात करो। यह देखो, मेरा आइडेंटिटी

काटूं।

संतरी : दिखाओ।

शंकरलाल : बात यह है कि मुझे यहां बैठे-बैठे नींद आ रही थी। मैंने सोचा घूम-घूमकर चने बेचूंगा, तो नींद भाग जाएगी।

संतरी : चलो, खैर, ठीक है। लेकिन याद रखना, मैं यहीं ड्यूटी पर हूं।

चनेवाला : सरकार, गलती हो गई। कितने के चने दूं?

शंकरलाल : (क्रोधित) भाग यहां से! मुझे नहीं लेने चने।

चनेवाला : (आवाज लगाता हुआ बाहर जाता है) चने जोर गरम!···चने जोर गरम!

शंकरलाल : (स्वतः) *क्या मुसीबत है! चने भी खाने को नहीं मिले और उचक्के का खिताब मिल गया।* (जंभाई लेते हुए) आ···आ··· (खर्राटे लेने लगता है।)

[अन्धकार। सुबह होती है]

जो : (शंकरलाल को जगाते हुए) बाबूजी, जागो, सवेरा हो गया।

शंकरलाल : (नींद में) क्यों हो गया सवेरा?

जो : सीट रिजर्व नहीं करवानी है?

शंकरलाल : (एकदम जागकर) पहले क्यों नहीं जगाया तुमने?

जो : अजी, मैं लाइन में सबसे पीछे था। दो घंटे बाद जब खिसक-*खिसककर मेरा नम्बर आया टिकट लेने का तो तुम्हें पहचान* कर जगा दिया।

शंकरलाल : क्या मुसीबत है! सबसे पहले आकर खिड़की के सामने सोया, फिर भी यार लोग मुझसे पहले ही सीट रिजर्व करवा के चल दिए।

जो : (हँसकर) जो जागत है सो पावत है!
जो सोवत है सो टिकट खोवत है।

शंकरलाल : अजी, मैं भी देखता हूं कैसे टिकट खोवत है! टिकटबाबूजी, बम्बई की एक सोने वाली बर्थ रिजर्व कर दो।

टिकटबाबू : *स्लीपिंग बर्थ?*

· · न : हां, हां, वही।

टिकटबाबू : आज आपकी किस्मत अच्छी है। एक ही बर्थ बाकी बची थी। निकालिए रुपये।

शंकरलाल : यह लो।

जी : बाबूजी, परशाद चढ़ाकर आए हो क्या ?

शंकरलाल : असली घी का।

टिकटबाबू : ये लीजिए, साहब, अपना टिकट।

शंकरलाल : लाओ। चंडी भवानी तुम्हारा कल्याण करे, टिकट बाबू।

[शंकरलाल का बैड रूम]

राजू : बाऊजी अभी तक नहीं आए।

राधा : आ जाएंगे। तुझे क्यों चिन्ता हो रही है ?

राजू : मम्मी, तुम्हें चिन्ता नहीं, तो फिर मुझे ही करनी पड़ेगी। मुझे रात भर सपने में बाऊजी दिखते रहे।

राधा : क्या कर रहे थे ?

राजू : आगे-आगे बाऊजी भाग रहे थे और पीछे पुलिसवाला चिल्लाता जा रहा था—चोर ! चोर ! पकड़ो ! भागने न पाए !

शंकरलाल : (प्रवेश करके, घबराया हुआ) चोर ? कहां है ? मैंने पहले ही कहा था मेरा रातभर स्टेशन पर रहना ठीक नहीं। मुझे पहले ही डर था कि मेरे पीछे घर में चोर घुस आएंगे। चोर जरूर सब उठा ले गए होंगे। अब मैं बम्बई क्या लेकर जाऊंगा ?

राजू : बाऊजी, खुद ही बोले जाओगे या मुझे भी बोलने दोगे ?

शंकरलाल : क्या मुसीबत है ! तू ही तो इतनी देर से बोल रहा है। मैं तो चुप खड़ा हूं।

राधा : और सुनो—उल्टा चोर कोतवाल को डांटे।

शंकरलाल : (गुस्से में) मैं पूछता हूं चोर आए थे, तो तुमने कोतवाल को क्यों नहीं बुलाया ?

राधा : (झुंझला कर) कैसा चोर ! कैसा कोतवाल !

राजू : (हंसते हुए) बाऊजी, मैं तो सपने की बात कह रहा था।

शंकरलाल : कैसा सपना ?

राजू : मैंने सपने में देखा था कि पुलिसवाला चोर-चो-

आपके पीछे भाग रहा था।

शंकरलाल : (डाटकर) चुप बे ! तुम दोनों मां-बेटे मिलकर मेरा दिमाग खराब कर दोगे। नींद के मारे बुरा हाल है। सारी रात स्टेशन पर खड़े-खड़े बिताई है —यह तो होता नहीं कि मा-बेटे कोई मीठी-सी लोरी गा कर मुझे सुलाएं !

राधा राजू, तू लोरी गाकर सुला दे।

राजू : (बेसुरा गाते हुए) सोजा राजदुलारे, अम्मां की आंखों के तारे ! सो···जा ! सो···जा ! (नाराज होकर) सोते क्यों नहीं, बाऊजी ?

शंकरलाल : (नाराज) अबे, मैं इस वक्त सो गया, तो मेरी जगह दफ्तर कौन जाएगा ? बोल ?

राजू : (भोलेपन से) मैं दफ्तर चला जाऊंगा, बाऊजी। तुम मेरी जगह स्कूल चले जाना।

शंकरलाल : (झुंझला कर) क्या मुसीबत है !

राधा . अच्छा, यह बताओ तुम मंडी से सब्जी लाए कि नहीं ?

शंकरलाल : आज सब्जी मे मंडी आई ही नही।

राधा : क्यो ?

शंकरलाल : सारी मंडी गधे चर गए।

राधा : मुझे तो लगता है तुम मंडी गए ही नही।

शंकरलाल : मैं बम्बई का टिकट लेकर आया हूं, मंडी का नही। मंडी क्यो जाऊं ?

राधा : (गुस्सा) अच्छा, तो आज सूखी रोटी लेकर ही दफ्तर जाना।

शंकरलाल : हा, हा, चला जाऊंगा रोटी सूखी दफ्तर लेकर। लेकिन पहले तुम मेरे जाने की तैयारी करो।

राधा : दफ्तर जाने की तैयारी तुम्हें करनी है या मुझे ?

शंकरलाल : क्या मुसीबत है ! मैं बम्बई जाने की तैयारी करने को कह रहा हूं।

राधा : अभी से क्या जल्दी है ! जाना तो तुम्हें दस दिन बाद ही है।

रलाल : नहीं, नही, ऐन मौके पर जल्दी-जल्दी में कोई चीज रह गई तो

मुझे आधे रास्ते से वापस आना पड़ेगा । तुम अभी फटाफट मेरा सामान तैयार करो ।

राधा : अच्छा, बाबा, बोलो क्या-क्या सामान रखना है ?

शंकरलाल : क्या मुसीबत है ! अब यह भी मैं ही बताऊं !

राधा : मुझे क्या मालूम तुम क्या-क्या ले जाना चाहते हो ?

शंकरलाल : अच्छा, मैं ही बताता हूं । मैं जल्दी-जल्दी बोलता हूं, तुम जल्दी-जल्दी रखती जाओ । सिर में डालने के लिए तेल, मंजन, बुरुश, कंघा, साबुन । समझ गई ?

राधा : तुम बोलते जाओ ।

शंकरलाल : जल्दी-जल्दी ये सब चीजें मेरे सिर में डालती जाओ ।

राधा : डाल दी । और बोलो ।

शंकरलाल : क्या मुसीबत है ! मेरे सिर में नहीं, अपने सिर में···ओफ, फिर वही ···अरे बाबा, इन सब चीजों को अटैची केस में रख दो ।

राधा : रख दी । और बोलो ।

शंकरलाल : पहनने के लिए कमीजें, पतलूनें, दरी, चादर, बनियानें, जांघिए, तकिया—ये सब सूटकेस में रखो ।

राधा : दरी, चादर और तकिया भी सूटकेस में रख दूं ?

शंकरलाल : क्या मुसीबत है ! तुम्हारी अक्ल को क्या हो गया है ? होल्डाल किसलिए है ? उसमें क्या मुझे बांधोगी ?

राधा : जैसा तुम कहो ।

शंकरलाल : अरे बाबा, होल्डाल में बिस्तर रखो, और हां, बिस्तर में कमीजें, पतलूनें, जांघिए । क्या समझी ?

राजू : और सूटकेस में मुझे रख दो, मां ।

शंकरलाल : क्या मुसीबत है ! तुम मां-बेटे मिलकर मुझे घनचक्कर बना दोगे ।

राधा : तुम दफ्तर जाने की तैयारी करो । मैं सब सामान रख दूंगी ।

शंकरलाल : अच्छा, बाबा, जैसी तुम्हारी मरजी ।

[शंकरलाल का दफ्तर । ...

शंकरलाल : (टेलीफोन पर नम्बर घुमाकर) हलो ! ...नवा-यरी ?

पहली आवाज : (टेलीफोन पर) निगमबोध घाट···मुर्दा गाड़ी चाहिए ?

शंकरलाल : क्या मुसीबत है ! मिलाओ रेलवे इन्क्वायरी और मिल जाता है निगमबोध घाट। (शंकरलाल रिसीवर रखकर, दोबारा नम्बर मिलाता है) (टेलीफोन पर) हलो ! रेलवे इन्क्वायरी ?

दूसरी आवाज (टेलीफोन पर) गुड मॉर्निंग ! रेलवे इन्क्वायरी।

शंकरलाल . फ्रन्टियर मेल बम्बई को कब जाता है ?

हेडक्लर्क : (ऊंची आवाज में) शकरलाल, टेलीफोन ही करते रहोगे या दफ्तर का काम भी करोगे ? दस बज कर आठ मिनट हो चुके है।

दूसरी आवाज : (टेलीफोन पर) आठ बजकर दस मिनट।

शंकरलाल : (टेलीफोन पर) आठ बजकर दस मिनट ?

हेडक्लर्क · (ऊंची आवाज में) आठ बजकर दस मिनट नहीं। दस बजकर आठ मिनट।

शंकरलाल : (टेलीफोन पर) दस बजकर आठ मिनट।

दूसरी आवाज : (टेलीफोन पर) नहीं, जनाब, आठ बजकर दस मिनट।

शंकरलाल : (टेलीफोन पर) आठ बजकर दस मिनट।

हेडक्लर्क : (ऊंची आवाज मे) मैं कह रहा हूं दस बजकर आठ मिनट।

शंकरलाल : (टेलीफोन पर) धन्यवाद ! (रिसीवर रख देता है) आठ बज कर···

हेडक्लर्क : (ऊंची आवाज में) मैं जो आपसे कह रहा हूं दस बजकर आठ मिनट।

शंकरलाल : (स्वत:) दस बजकर···आठ बजकर···नहीं, नहीं, दस बजकर··· नहीं, आठ बजकर···

हेडक्लर्क : (ऊंची आवाज में, नाराजी से) यह क्या आठ-दस लगा रखी है, शकरलाल ! फाइल पर नोटिंग करके जल्दी लाओ, नहीं तो आज मैं तुम्हारी रिपोर्ट कर दूंगा।

शंकरलाल : (जल्दी से) अभी लाता हूं, बड़े बाबू··· (स्वत:) फ्रंटियर मेल दस बजकर आठ मिनट पर···

तलाक का मुकदमा

पात्र-परिचय :

जज : रोबीला चेहरा, पद के अनुसार बातचीत में गम्भीरता, उमर ४५, सूट।

पहला वकील : वकीलों की वेशभूषा, गम्भीर आवाज, शकलसूरत ठीकठाक, उमर ४०।

दूसरा वकील : वकीलों की वेशभूषा, कनकनी आवाज, दुबल-पतला, उमर ३५।

रंजना : खूबसूरत, सजी गुड़िया सी, उमर २५, चेहरे पर ऐसे भाव कि जैसे ससार की सबसे अधिक सताई पत्नी हो।

रामकुमार : रंजना का पति, स्वस्थ, सुन्दर, गम्भीर, बुशशर्ट, पतलून, उमर ३०।

अदालत के अन्य कर्मचारी, जैसे, कोर्ट क्लर्क, चपरासी।

(अदालत)

जज : इस अदालत में श्रीमती रंजना ने अपने पति श्री रामकुमार से तलाक पाने के लिए मुकदमा दायर किया है, और उन पर कुछ आरोप लगाए हैं। अदालत श्री रामकुमार को इजाजत देती है कि वह चाहें तो अपनी पत्नी के आरोपों के सम्बन्ध में उन्हें क्रास एग्जॉमिन कर सकते हैं।

पहला वकील : हुजूर, मैं अपने मुवक्किल श्री रामकुमार की तरफ से श्रीमती रंजना से कुछ पूछना चाहता हूं।

जज : इजाजत है।

पहला वकील : श्रीमती रंजना, आपने अपने बयान में कहा है कि आपको यह ठीक से याद नहीं कि आपका विवाह कब हुआ था। क्या आप बताएंगी कि आपको यह भी याद है कि आपका श्री रामकुमार से विवाह हुआ भी था या नहीं ?

रंजना : तो क्या मैं अपनी सहेली के पति को तलाक दे रही हूं ?

पहला वकील : आपको जब इस बात का पक्का यकीन है कि आपकी श्री रामकुमार से शादी हुई थी, तो शादी की वर्षगांठ अगर नहीं भी मनाई गई तो आपको बुरा क्यों लगा ?

रंजना : क्योंकि वह मुझे उपहार देने से बचना चाहते थे।

पहला वकील : आपके पास कितनी साड़ियां हैं ?

रंजना : आपसे मतलब ?

दूसरा वकील : हुजूर, यह सवाल गैरजरूरी है, मेरी मुवक्किल श्रीमती रंजना को बेकार ही परेशान किया जा रहा है। मुकदमे से इसका कोई ताल्लुक नही।

पहला वकील : हुजूर, ताल्लुक है।

जज : आप यह सवाल पूछ सकते हैं।

पहला वकील : धन्यवाद। हां, तो बताइए, आपके पास कितनी साड़ियां है?

रंजना : पचास।

पहला वकील : इनमे से दहेज मे आपको कितनी मिली थी?

रंजना : चौदह।

पहला वकील : बाकी छत्तीस साड़ियां आपको कहां से मिलीं?

रंजना : मेरे पति ने लाकर दी।

पहला वकील : हुजूर, अदालत इस बात को नोट करे कि श्री रामकुमार ने अपने छत्तीस महीने के वैवाहिक जीवन मे अपनी पत्नी को छत्तीस साड़ियां खरीद कर दी।

दूसरा वकील : हुजूर, मैं फिर अर्ज करता हूं कि साड़ियों के इस हिसाब से मुकदमे का कोई ताल्लुक नही है।

पहला वकील : हुजूर, मैं अभी साबित कर दूगा कि मुकदमे के फैसले में साड़ियो का कितना हाथ है।

जज : हूं! आगे कहिए।

पहला वकील : हुजूर, मैं अर्ज कर रहा था कि श्री रामकुमार ने छत्तीस महीनों मे छत्तीस साड़िया या यों कहिए कि बारह महीने मे बारह या एक महीने मे एक साड़ी अपनी पत्नी को दी। इससे साफ जाहिर है कि श्री रामकुमार ने हर महीने अपनी शादी की वर्षगाठ मनाई, और एक साड़ी अपनी पत्नी को उपहार मे दी।

दूसरा वकील : मुझे पूरा यकीन है कि अदालत इस दलील को कभी नहीं मानेगी।

पहला वकील : मुझे अदालत की इन्साफपसन्दी पर पूरा यकीन है, और इसी यकीन के सहारे मैं श्रीमती रंजना के दूसरे आरोप को भी गलत

साबित कर दूंगा। श्रीमतीजी, आप अपने पति को इसलिए तलाक देना चाहती हैं कि वह रोज वादा करके भी कभी पांच बजे दफ्तर से घर नहीं आए ?

रंजना : जी।

पहला वकील : लेकिन यह कोई इतना बड़ा कसूर तो नहीं है कि पति को तलाक दे दें।

रंजना : कसूर नहीं है ? आप भी कमाल करते हैं ?

जज : श्रीमती रंजना, इस किस्म के बेमानी शब्द कहने से कोई फायदा नहीं। आप स्पष्ट शब्दों में बताइए कि इससे [illegible] [illegible] हुई ?

जज : हूं…क्षमा किया जाता है।

रंजना : धन्यवाद।

पहला वकील : श्रीमतीजी, मेरे प्रश्न का उत्तर दीजिए।

रंजना : सुनिए। हर पत्नी चाहती है कि जब उसके पति के दफ्तर से आने का समय हो तो सज-धजकर दरवाजे पर उसकी प्रतीक्षा करे। लेकिन मैं ऐसा न कर सकी।

पहला वकील : लेकिन इससे आपको क्या परेशानी हुई?

रंजना : मुझे इसका इतना अधिक सदमा पहुंचा कि मैं दिन पर दिन दुबली होती चली गई।

पहला वकील : हुजूर, *अदालत इन शब्दों को नोट करे।* दवाओं में सैकड़ों रुपये खर्च करने के बाद भी जब श्रीमती रंजना का मोटापा कम नहीं हुआ, तो मेरे मुवक्किल ने उन पर देर से घर आने का नुस्खा आजमाया। और वह फायदेमन्द भी साबित हुआ। इस पर भी उस बेचारे को तलाक दिया जा रहा है।

जज : श्रीमती रंजना, आपको तो अपने पति का शुक्रगुजार होना चाहिए।

पहला वकील : हुजूर, श्रीमती रंजना को अपने पति से यह भी शिकायत है कि *जैसे ही यह गाना शुरू करती हैं वह उठ कर बाहर चल देते हैं।*

रंजना : जज साहब, मैं कैसे बताऊं, इनकी इस असभ्यता से मैं अपने को कितना अपमानित समझती हूं। और फिर अगर मैं फिल्मी-विल्मी गाना गाऊं तब भी कोई बात है। मैं आजकल के फैशन के अनुसार शास्त्रीय संगीत गाती हूं।

दूसरा वकील : हुजूर, मिस्टर रामकुमार की यह हरकत न केवल उनकी पत्नी का ही अपमान है, बल्कि शास्त्रीय संगीत का भी अपमान है। *शास्त्रीय संगीत—जिसकी महिमा का बखान…*

जज : (बीच में ही) वकील साहब, आप शास्त्रीय संगीत की महिमा का बखान रहने दीजिए। उसके लिए ऑल इण्डिया रेडियो काफी है। आप अपनी बात कहिए।

दूसरा वकील : हुजूर, मैं कह रहा था कि जब पति कदम-कदम पर पत्नी का अपमान करने पर उतारू हो जाए तो उसके लिए सिवा तलाक के और कोई चारा नहीं रह जाता।

पहला वकील : हुजूर, यह सच है कि श्रीमती रंजना जब गाना शुरू करती हैं तो मेरे मुवक्किल श्री रामकुमार उठकर चले जाते है, लेकिन यह गलत है कि ऐसा करके वह अपनी पत्नी का अपमान करते हैं।

जज : मिस्टर रामकुमार, तब फिर आप क्यों उठकर बाहर चले जाते हैं।

रामकुमार : जज साहब, असली बात यह है कि जब भी यह कोई राग अलापने लगती हैं तो अड़ोसी-पड़ोसी अपने खिड़की दरवाजे खोल कर ध्यान से सुनने लगते है।

दूसरा वकील : इससे साफ जाहिर होता है कि श्रीमती रजना के सगीत में कितना आकर्षण है।

रामकुमार : जी, हा, सही फरमाया आपने। यह आकर्षण बढ़ते-बढ़ते इतना बढ़ जाता है कि लोग अपने अपने घर से निकलकर मेरे घर के आगे जमा होने शुरू हो जाते हैं।

रंजना : जज साहब, सुना आपने ? अड़ोसी-पड़ोसी तो मेरा गाना सुनने के लिए इतने उतावले रहते हैं, और यह उठकर बाहर चल देते हैं ! यह सरासर मेरा अपमान नही तो और क्या है ?

रामकुमार : जज साहब, मैं आपको पूरा यकीन दिलाना चाहता हूं कि इनकी बात में बिलकुल भी सच्चाई नही है।

दूसरा वकील : अगर यह बात सच नहीं है तो क्या सच है ?

रामकुमार : सच तो यह है कि मैं पडोसियों का शक दूर करने के लिए उठकर बाहर चला जाता हूं।

जज : हूं ! किस बात का शक ?

रामकुमार : यही कि मेरी पत्नी दहाड़ मार-मारकर विलाप नही, बल्कि राग शंकरा का अलाप कर रही है।

जज : हूं !

पहला वकील : हुजूर, श्रीमती रंजना को अपने पति से यह भी शिकायत है कि वह इनके हाथ का बना खाना नहीं खाते।

दूसरा वकील : और यह कोई मामूली शिकायत नहीं है। हिन्दुस्तान की हर लड़की को कदम-कदम पर खाना बनाने की शिक्षा दी जाती है। घर में रसोईघर से लेकर स्कूल-कॉलिज की डोमेस्टिक साइंस की क्लास तक इतना समय और पैसा बरबाद करने के बाद भी अगर पति पत्नी के हाथ का बना खाना न खाए तो यह घोर अन्याय है।

पहला वकील : मिस्टर रामकुमार, आप अपनी पत्नी के हाथ का बना खाना क्यों नहीं खाते ?

रामकुमार : इन्होंने कभी खाना बनाया हो तो खाऊं भी।

रंजना : मैं नहीं, तो और कोई बनाती थी ?

रामकुमार : बनाती तो आप ही थीं, लेकिन जो कुछ आप बनाती थीं उसे खाना नहीं कहा जा सकता।

जज : हूं ! खाना नहीं तो क्या बनाती थीं ?

रामकुमार : रातब।

रंजना : (रोनी आवाज में) सुना आपने, जज साहब ? मैं और बर्दाश्त नहीं कर सकती। मुझे अभी तलाक दे दीजिए।

जज : (आश्चर्य से) जी ? मैं तलाक दे दूं ?

रंजना : जी।

जज : यह क्या मजाक है ! तलाक मिलना होगा तो आपके पति से मिलेगा—मुझसे नहीं।

रंजना : (समझते हुए) ओह, फिर गलती हो गई। मैं फिर क्षमा मांगती हूं।

जज : क्योंकि यह आपका तलाक का पहला मुकदमा है ? हूं···इस बार फिर क्षमा किया जाता है।

रंजना : जज साहब, मैं कहना चाहती थी कि इनको मेरा बनाया खाना न खाने से मेरा दिल टूट जाता है।

रामकुमार : जज साहब, खाने का संबंध पकाने वाले के दिल से नहीं, खाने वाले के पेट से होता है। इन्हें तो मैंने परेशान होने से बचाया।

रंजना . वाह! वाह! क्या उलटी बात कही है।

रामकुमार : मैं ठीक कह रहा हूं।

जज : मिस्टर रामकुमार, अपनी बात को खुलासा करके कहिए।

रामकुमार : जज साहब, इनके पकाए रातब को खाकर जब मैं बीमार पड़ता तो क्या इन्हें मेरी तीमारदारी की परेशानी नहीं उठानी पड़ती?

रंजना : बिल्कुल नहीं। जज साहब, आप यकीन करिए, इधर यह बीमार पड़ते, उधर मैं इन्हें खैराती अस्पताल मे भरती करवा देती।

दूसरा वकील : हुजूर, श्रीमती रंजना के बयान से साबित हो जाता है और मिस्टर रामकुमार ने भी यह स्वीकार किया है कि इन्हें अपनी पत्नी के दिल टूटने से ज्यादा अपने पेट के खराब होने का ख्याल है। इसके माने यह हुए कि मिस्टर रामकुमार खुदगर्ज हैं।

पहला वकील : हुजूर, यह सरासर गलत है। मिस्टर रामकुमार खुदगर्ज नहीं हैं, बल्कि खुदगर्ज तो श्रीमती रंजना हैं, जो पति की तीमारदारी से अपनी जान बचाने के लिए उन्हें खैराती अस्पताल में भरती करवा देना चाहती हैं।

जज : मैं भी काफी दिन उसमे रह चुका हूं।

पहला वकील : श्रीमती रंजना को अपने पति से शिकायत है कि जब कभी वह मायके जाने को कहती हैं तो इनका मुंह उतर जाता है।

दूसरा वकील : मिस्टर रामकुमार, क्या यह सच है कि आपका मुंह उतर जाता है?

रामकुमार : सच है।

जज : तो आप अपने कसूर को स्वीकार करते हैं?

रामकुमार : नहीं।

जज : क्यों ?

रामकुमार : क्योंकि इनकी ही एक शिकायत दूर करने के लिए ही मुझे ऐसा करना पड़ता है।

जज : क्या शिकायत ?

रामकुमार : यही कि हर समय मेरा मुंह चढ़ा रहता है।

पहला वकील : हुजूर, अब यह अच्छी तरह साबित हो चुका है कि श्रीमती रंजना ने अपने पति पर जो भी आरोप लगाए हैं, वे सब निराधार हैं और वह किसी भी हालत में अपने पति को तलाक नहीं दे सकती।

दूसरा वकील : हुजूर, मेरी मुवक्किल श्रीमती रंजना घबरा जाने की वजह से *ठीक-ठीक जवाब नहीं दे सकी, जिनके आधार पर यह नहीं* कहा जा सकता कि अपने पति पर इन्होंने जो आरोप लगाए हैं वे निराधार हैं। मेरी अदालत से प्रार्थना है कि मुकदमा फिर से शुरू किया जाए।

जज : जी, नहीं। अदालत बरखास्त! पांच बज चुके हैं। मुझे घर पहुंचना है, नहीं तो कल मुझे इस कटघरे में मिस्टर रामकुमार की जगह खड़ा होना पड़ेगा।